Prakrit Text Society Series No. 9

NANDISUTTAṂ

by

DEVAVĀCAKA

with the CŪRṆI by

JINADĀSA GAṆI MAHATTARA

Edited by
MUNI SHRI PUNYAVIJ[illegible]

General Editor
[illegible]

Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary,
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

Price Rs. 10/-

Available from :

1 MOTILAL BANARASIDASS. NEPALI KHAPRA, Post Box 75, VARANASI.
2 CHAUKHAMBA VIDYABHAVAN, CHAWK, VARANASI.
3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA, GANDHI ROAD, AHMEDABAD-1.
4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATANPOLE, HATHIKHANA, AHMEDABAD-
5 MUNSHI RAM MANOHARLAL, NAI SARAK, DELHI.

Printed by :-
JAYANTI DALAL
Vasant P. Press
Gheekanta, Ghela
AHMEDABAD-1.

प्राकृतग्रन्थपरिषद् ग्रन्थाङ्क ९

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं

संशोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदि जैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर [illegible]

प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारक [illegible]

श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादक [illegible]

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

वाराणसी ५ [illegible]

प्रकाशक :–
दलसुख मालवणिया
सेक्रेटरी, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी,
वाराणसी–५

मुद्रक :–
जयंति दलाल
वसंत प्रिन्टींग प्रेस
घीकांटा, घेलाभाईकी
अहमदाबाद–१

'खं०' संज्ञक नन्दिसूत्रमूलके साथ लिखी गई श्रीमलयगिरिविरचितनन्दिसूत्रटीकाकी प्रतिके प्रथम और अंतिम (२४७वे) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि ।

'...' संज्ञक प्रतिके प्रथम और अंतिम (८२वे) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि ।

[illegible] प्रथम और तृतीय पत्र की द्वितीय पृष्ठि (विशेष वर्णन के लिए देखिये, प्रस्तावना, पृष्ठ [illegible])

प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रखी गई हैं। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णिकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। इन सबोंका परिचय इस प्रकार है —

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेरके किलेमें स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञान-भंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचीमें इस प्रतिका क्रमाङ्क ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौडाई ३३।।।×२।। इंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौडाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी हैं। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्पिकाके लेखानुसार इस प्रतिका संशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पणियाँ भी की हैं, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है

> स्वस्ति । संवत् १४८८ वर्षे श्रीसत्यपुरे पौष वदि १० दिने श्रीपार्श्वदेवजन्मकल्याणके श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्जिनभद्रसूरिसूर्यावतारैः श्रीनन्दिसिद्धान्तपुस्तकं स्वहस्तेन शोधितं पाठितं च । तच्च श्रीश्रमणसंघेन वाच्यमानं चिरं नन्दतु ॥

डे० प्रति—यह प्रति अहमदावादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पंचपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी मालूम होती है।

ल० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद-लवारकी पोलके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या ३५ है। हरेक पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्मत्ता ॥छा॥ सं. १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय....[अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्रीः ॥छा॥ शुभं भवतु ॥छा॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडारे कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्द्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम-वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि. सं. १९७३में आगमोदयसमिति-सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किलेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमाङ्क ४१० है। इस क्रमांकमें तीन ग्रन्थ हैं—१. दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २. नन्दीसूत्रचूर्णी पत्र १८५–२२३। ३. अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४–२७५। इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी, ये दोनों चूर्णीयाँ किसी गीतार्थकी संशोधित हैं। प्रतिकी लंबाई-चौडाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अंतमें लेखनसंवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-ढंग देखनेसे प्रतीत होता है कि-यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसंस्था-रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रत्यन्तरकी तौरसे हमारे संशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजससम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानन्दसूरिम०की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन-श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरकी प्रतिको भी सामने रक्खी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुई है।

इस चूर्णीके संशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

सं० ` मो०, ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने संशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ख० शु०. ये चार प्रतियाँ संशोधित प्रतियाँ हैं। इनमें भी जे० प्रतिका संशोधन [illegible] आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है. जिसमें आपने [illegible] प्रतिके पत्रोंके किनारेमें स्थान स्थान पर टिप्पणियाँ की हैं, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं. देखो पृ. ७ टि. १०, पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ८, पृ. ११ टि. ११, पृ. १२ टि. ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमें खं० प्रतिसे मिलतीजुलती होने पर भी कुछ कुछ [illegible] मालूम होती है। इसमें [illegible] प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथायें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि. १०, पृ. १० टि. ८, पृ. ११ टि. [illegible]। [illegible] गाथायें प्रक्षिप्त हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. १२ टि. ५। इसी प्रकार [illegible] जो सूत्रपाठ चूर्णिकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिमत है वह इस प्रतिमें पाया गया है. देखो पृ. ३३ टि. [illegible]। [illegible] अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पाठटिप्पणीओंमें उल्लेख कर दिया है। [illegible] पाठभेदोंका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोंसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें [illegible] स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति [illegible] फिर भी यहाँ इसकी सूचना कर देता हूँ कि [illegible] प्रति [illegible] P प्रतिके [illegible] **गोविंदाणं पि णमो०** तथा **नमो य भूयदिन्नस्स०** ये दो गाथायें P प्रतिमें [illegible] हैं, देखो पृ. १० टि. ७। यद्यपि [illegible] P प्रतिका [illegible] प्रतिको पुनः देखके निर्णय किया है कि गोविंदाणं पि णमो० [illegible]

[illegible]

टिप्पन, इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं, किन्तु जहाँ जहाँ नन्दीसूत्रके उद्धरण, व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारनयचक्र, समवायाङ्गसूत्र एवं भगवतीसूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलधारीया वृत्ति, पाक्षिकसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिप्पणियोंको देखनेसे होगी।

नन्दीसूत्रकी चूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आधारस्तम्भ जैसलमेरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्रायः आज ज्ञानभंडारोंमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णिग्रन्थोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि-भाण्डागारस्वरूप ही हो गई हैं। इतनी बात जरूर है कि—ज्यों ज्यों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती हैं। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है, इतना ही नहीं पंक्तियाँकी पंक्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मेरेको जैसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं, साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एवं विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूं।

अनेक आगमोंकी चूर्णि, वृत्ति आदिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एवं अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हों तो मुद्रणादिमें प्रायः सैंकडों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं। विद्वान् संशोधकोंके ध्यानमें लानेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूं—

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका संशोधन मैंने पाटन-ज्ञानभंडारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खंभातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानभंडारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ, एवं चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुछ शंकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि—एकंदर संशोधन अच्छा हो गया है। किन्तु जब जैसलमेर जानेका मोका मिला, और वहाँके ज्ञानभंडारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शङ्कास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दश—बारह पंक्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस नन्दीसूत्रचूर्णीके संशोधन एवं सम्पादनमें साद्यन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय-समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जैसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द ध आदि वर्णोंके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नज़र आये हैं।

नन्दीसूत्रके प्रणेता

नन्दीसूत्रकारने नन्दीसूत्रमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

> "एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु **दूसगणिसीसो देववायगो** साहुजण-हितट्ठाए इणमाह" [पत्र १३]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि एवं आचार्य श्रीमलयगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है। चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि—नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दिसूत्रस्थविरावलिगत अंतिमस्थविर श्रीदुष्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक हैं।

पंन्यासजी श्रीकल्याणविजयजीमहाराजने अपने 'अनेकान्तवाद और जैन [illegible]' लेखमें ([illegible] भाग १० अंक ४) अनेकान्तिक प्रमाण और युक्ति द्वारा [illegible] देववाचक और जैन [illegible] [illegible] भावनाओंको संपादित करनेवाले श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणको एक बतलाया है।

नव्यकर्मग्रन्थकार आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराजने अपनी स्वोपज्ञ वृत्तिमें देवर्द्धिवाचक, देवर्द्धिक्षमाश्रमण [illegible] [illegible] अनेकवार नन्दीसूत्रपाठके उद्धरण दिये हैं. यह भी इन्होंने देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमणको एक [illegible] ही दिये हैं। यह भी श्रीकल्याणविजयजी महाराजको [illegible] है। [illegible] अंतिम स्थविर दुष्यगणि हैं, जिनके [illegible] देववाचक [illegible] हैं। [illegible] लिखित प्रतिमें [illegible] कारण कोई एक स्थविरका नाम [illegible] नहीं [illegible] है। [illegible] यहाँ तक उचित है, [illegible] उपाधिमें भी [illegible] है। [illegible] प्रयोग मिलता है, [illegible] देववाचकको [illegible] [illegible] [illegible] लिये भी [illegible] [illegible]

ही हैं, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पट्टावली आदिमें पाये भी जाते हैं; किन्तु भाष्य-चूर्णियोंके अवगाहन बाद ये दोनों मान्यताएं गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर भाष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उन्हीके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याग्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचाराङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जम्बूद्वीपकरणचूर्णि ७ दशाकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीथसूत्रविशेषचूर्णि १२ पञ्चकल्पचूर्णि १३ जीतकल्पबृहच्चूर्णि १४ आवश्यकचूर्णि १५ दशकालिकचूर्णि श्रीअगस्त्यसिंहकृता १६ दशकालिकचूर्णि वृद्धविवरणाख्या १७ उत्तराध्ययनचूर्णि १८ नन्दीसूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पाक्षिकचूर्णि।

उपर जिन वीस चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व एतद्विषयक चूर्णि-ग्रन्थोंके प्राप्त उल्लेखोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्धृत कर देता हूँ, जो भविष्यमें विद्वानोंके लिये कायमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्गचूर्णी। अन्तः—

से हु निरालंबणमप्पतिट्ठितो। सेसं तदेव॥ इति **आचारचूर्णी** परिसमाप्ता॥ नमो सुयदेवयाए भगवईए॥ ग्रन्थाग्रम् ८३००॥

(२) सूत्रकृताङ्गचूर्णी। अन्तः—

सद्दहामि जध सूत्रेति णेतव्वं सव्वमिति॥ नमः सर्वविदे वीराय विगतमोहाय॥ समाप्तं चेदं सूत्रकृताभिधं द्वितीयमङ्गमिति। भद्रं भवतु श्रीजिनशासनाय। **सूगडांगचूर्णिः** समाप्ता॥ ग्रन्थाग्रम् ९५००॥

(३) भगवतीचूर्णि—

श्रीभगवतीचूर्णिः परिसमाप्तेति॥ इति भद्रं॥

सुअदेवयं तु वंदे जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं। विइयं पि बतव (?बंभ)देविं पसन्नवाणिं पणिवयामि॥ग्रंथाग्रं ६७०७॥श्री॥

(४) जीवाभिगमचूर्णि—

इस चूर्णीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी भंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रज्ञापनाशरीरपदचूर्णि। अन्तः—

जमिहं समयविरुद्धं बद्धं बुद्धिविकलेण होज्जा हि। तं जिणवयणविहन्नू खमिऊणं मे पसोहिंतु॥ १॥

॥ **सरीरपदस्स** चुण्णी **जिणभद्दखमासमण**कित्तिया समत्ता॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४।

याकिनीमहत्तरासूनु आचार्य श्री**हरिभद्रसूरि**कृत अनुयोगद्वारलघुवृत्ति पत्र ९९ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्वीपकरणचूर्णि। अन्तः—

एवं उवरिल्लभागस्स तेरासियं पउंजियव्वं। विरुव्वेहवुड्ढीओ आणेयव्वाओ॥ **जंबुद्दीवपण्णत्तिकरणाणं** चुण्णी समत्ता॥

(७) दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि। अन्तः—

जाव णया वि। जाव करणओ—सव्वेसिं पि णयाणं० गाधा॥ **दशानां चूर्णी** समाप्ता॥

(८) कल्पचूर्णी—

आउयवज्जा उ० गाहा ९९। वित्थरेण जहा **विसेसावस्सगभासे**। 'सामित्तं चेव पगडीणं को केवतियं बंधइ? खवेइ वा केत्तियं को उ?' त्ति जहा **कम्मपगडीए**। एतं पसंगेण गतं।

अन्तः—

नमो य आणाइमतो छिन्नसंसारी भवति [illegible] कप्पचूर्णी [illegible] ॥

ग्रन्थाग्रम्–५३०० प्रत्यक्षरगणनया निर्णितम् ॥ [सर्वग्रन्थाग्रम्— [illegible]]

(९) कल्पविशेषचूर्णि—

कप्पविसेसचुण्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णि । अन्तः—

व्यवहारस्य भगवतः अर्थविवरणाद्धर्मेति दशक । [illegible]

(११) निशीथविशेषचूर्णि । आदिः—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] निसीहचूण्णी [illegible]

[illegible] अन्तः—

[illegible]

[illegible] अन्तः—

[illegible]

जिणभद्दखमासमणं निच्छियसुत्तऽत्थदायगामलचरणं । तमहं वंदे पयओ परमं परगोवगारकारिणं महग्घं ॥ २ ॥

॥ जीतकल्पचूर्णिः समाप्ता । सिद्धसेनकृतिरेषा ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्तः—

करणनयो—सव्वेसिं पि नयाणं० गाथा ॥ इति आवस्सगनिज्जुत्तिचुण्णी समाप्ता ॥ मंगलं महाश्रीः ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्तः—

एवमेतं धम्मसमुक्कित्तणादिचरण-करणाणेगपरूवणागब्भं नेव्वाणगमणफलावसाणं भवियजणाणंदिकरं चुण्णि-समासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं ॥

नमः ॥ वीरवरस्स भगवतो तित्थे कोडीगणे सुविपुलम्मि । गुणगणवइराभस्सा वेरसामिस्स साहाए ॥ १ ॥
महरिसिसरिससभावा भावाऽभावाण मुणितपरमत्था । रिसिगुत्तखमासमणा खमा-समाणं निधी आसि ॥ २ ॥
तेसिं सीसेण इमा कलसभवमइंदणामधेज्जेणं । दसकालियस्स चुण्णी पयाण रयणातो उवणत्था ॥ ३ ॥
रुयिरपद-संधिणियता छड्डियपुणरुत्तवित्थरपसंगा । वक्खाणमंतरेणावि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥
ससमय-परसमयणयाण जं थ ण समाधितं पमादेणं । तं खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीणं ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचुण्णी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णि वृद्धविवरणाख्या । अन्तः—

अज्झयणाणंतरं 'कालगओ समाधीए' जीवणकालो जस्स गतो समाहीए त्ति । जहा तेण एत्तिएण चेव ......
आराहगा भवंति त्ति ॥ दशवैकालिकचूर्णी सम्मत्ता ॥ ग्रन्थाग्रन्थ ७४०० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णि । अन्तः—

वाणिजकुलसंभूतो कोडियगणितो य वज्जसाहीतो । गोवालियमहतरओ विक्खातो आसि लोगम्मि ॥ १ ॥
ससमय-परसमयविऊ ओयस्सी देहिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरतिप्पियो आसी ॥ २ ॥
तेसिं सीसेण इमं उत्तरज्झयणाण चुण्णिखंडं तु । रइयं अणुग्गहत्थं सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥ ३ ॥
जं एत्थं उस्सुत्तं अयाणमाणेण विरतितं होज्जा । तं अणुओगधरा मे अणुचिंतेउं समारेंतु ॥ ४ ॥
॥ षट्त्रिंशोत्तराध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥ ग्रन्थाग्रं प्रत्यक्षरगणनया ५८५० ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णि । अन्तः—

णि रे ण ग म त्त ण ह स दा जि या (?) पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला ।
कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥१॥

शकराज्ञो पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ ग्रन्थाग्रम् १५०० ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णि । अन्तः—

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अहवा चरणं चारित्रम्, गुणा खमादिया अणेगविधा, तेसु जो जहट्ठिओ साधू सो सव्वणयसम्मतो भवतीति ॥

॥ कृतिः श्रीश्वेताम्बराचार्यश्रीजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥

१. इस चूर्णि पर टिप्पन रचनेवाले श्रीश्रीचंद्रसूरिजी प्रस्तुतचूर्णिका वृद्धचूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

(२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुभेन ग्रंथाग्रं चत्वारि शतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिक्रमणचूर्णि समाप्तेति । [illegible] संवत् [illegible] । मंगलं महाश्रीः ॥

१. ऊपर जिन तीन चूर्णियोंके आदि-अन्तादि अंशोंके उद्धरण दिये हैं उनके अवलोकनसे प्रतीत होता है कि—प्रज्ञापना-सूत्रके पाँचवें शरीरपदकी चूर्णि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कृत है। [illegible] इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति ज्ञानभंडारोंमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्रीजिनदासगणि महत्तर और आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी अपनी अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णि और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको अक्षरशः उद्धृत कर दी है. [illegible] श्रीजिनभद्र [illegible] प्रज्ञापनासूत्र ऊपर सम्पूर्ण चूर्णि की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। [illegible] ज्ञानभंडारोंमें प्रज्ञापनासूत्रचूर्णिकी कोई हस्तप्रति प्राप्त नहीं है। [illegible] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी प्रज्ञापनावृत्तिमें सिर्फ शरीरपदकी चूर्णिके सिवा और कहीं भी चूर्णिका [illegible] होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके शरीरपदके [illegible] मलयगिरिने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णिका [illegible] उल्लेख किया है।

तवो दुविहो—बज्झो अब्भंतरो य। जधा दसवेतालियचुण्णीए चाउलोदणंतं (? चालणेदाणंतं) अलंकेणं णिज्जरट्ठं साधूसु पडिवायणीयं ८। [आवश्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणमें **दशवैकालिकचूर्णी**का नाम नजर आता है। दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णीयाँ आज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने रतलामकी श्री-ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वेताम्बर संस्थाकी ओरसे सम्पादित की है, जिसके कर्त्ताके नामका पता नहीं मीला है और जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य **श्रीहरिभद्रसूरि**ने अपनी **दशवैकालिकसूत्र**की **शिष्यहितावृत्ति**में स्थान स्थान पर **वृद्धविवरण**के नामसे दिये हैं। इन दो चूर्णियोंमेंसे **आवश्यकचूर्णि**कारको कौनसी चूर्णि अभिप्रेत है?, यह एक कठिनसी समस्या है। फिर भी आवश्यकचूर्णीके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुंच सकते हैं। इस उद्धरणमें "चाउलोदणंतं" यह पाठ गलत हो गया है। वास्तवमें "चाउलोदणंतं" के स्थानमें मूलपाठ "चालणेदाणंतं" ऐसा पाठ होगा। परन्तु मूलस्थानको विना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न चलने पर केवल शाब्दिक शुद्धि करके संख्याबन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के संख्याबन्ध उदाहरण मेरे सामने हैं। दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने बराबर देखी है, किन्तु "चाउलोदणंतं"का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है। दशवैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद "चालणेदाणिं" [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारने लिखा है, जिसको **आवश्यकचूर्णिकार**ने "चालणेदाणंतं" वाक्यद्वारा सूचित किया है। इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित पाठको विना देखे गलत शाब्दिक सुधारा कर बिगाड दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है। अतः मैं इस निर्णय पर आया हूं कि—**आवश्यकचूर्णि**कारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहीया चूर्णी ही है। और इसी कारण अगस्त्यसिंहीया चूर्णी आवश्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है।

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूर्णीका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है। सिर्फ **रइवक्का** = सं० रतिवाक्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३–२] "अन्ये तु व्याचक्षते" ऐसा निर्देश करके अगस्त्यसिंहीया चूर्णीका मतान्तर दिया है। इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है।

इस अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तत्कालवर्त्ती संख्याबन्ध वाचनान्तर–पाठभेद, अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-वेशीका कांफी निर्देश है, जो अतिमहत्त्वके हैं।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णीमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन **चूर्णी** या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रइवक्काचूलिका की चूर्णीमें किया है। जो इस प्रकार है—

"एत्थ इमातो वृत्तिगतातो पदुद्देसमेत्तगाधाओ। जहा—

दुक्खं च दुस्समाए जीविउं जे१ लहुसगा पुणो कामा २।
सातिबहुला मणुस्सा ३ अचिरट्ठाणं चिमं दुक्खं ४ ॥ १ ॥
ओमजणम्मि य खिसा ५ वंतं च पुणो निसेवियं भवति ६।
अहरोवसंपया वि य ७ दुलभो धम्मो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥
निवयंति परिकिलेसा ९ वंधो ११ सावज्जजोग गिहिवासो १३।
एते तिण्णि वि दोसा न होंति अणगारवासम्मि १०-१२-१४ ॥ ३ ॥
साधारणा य भोगा १५ पत्तेयं पुण्ण-पावफलमेव १६।
जीयमवि माणवाणं कुसग्गजलचंचलमणिच्चं १७ ॥ ४ ॥

णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८ ।
पदमट्ठारसमेतं वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥"

अगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णीमें [पत्र ३५८] "एत्थ इमाओ **वृत्तिगाथाओ** । उक्तं च" ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी हैं ।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन **चूर्णी** भी थी, जिसका दोनों चूर्णीकारोंने **वृत्ति** नामसे उल्लेख किया है । इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है । और इससे **हिमवंतस्थविरावलीमें** उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

"तेषामा**र्यसिंहानां** स्थविराणां **मधुमित्रा-ऽऽर्यस्कन्दिला**चार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्य**गन्धहस्तिनो**ऽतीवविद्वांसः प्रभावकाश्चाभवन् । तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तं**सोमास्वाति**वाचकरचित-**तत्त्वार्थो**परि अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाणं **महाभाष्यं** रचितम् । **एकादशाङ्गो**परि **चाऽऽर्यस्कन्दिल**स्थविराणामुपरोधतस्तै**र्विवरणानि** रचितानि । यदुक्तं तद्रचि**ताऽऽचाराङ्ग**विवरणान्ते यथा—

थेरस्स **महुमित्तस्स** सेहेहिं तिपुव्वनाणजुत्तेहिं । मुणिगणविवंदिएहिं ववगयरायाइदोसेहिं ॥ १ ॥
बंभद्दीवियसाहामउडेहिं गंधहत्थिविवुहेहिं । **विवरण**मेयं रइयं दोसयवासेसु विक्कमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है । कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है ।

४. उत्तराध्ययनसूत्रचूर्णिके प्रणेता **कोटिकगणीय, वज्रशाखीय** एवं **वाणिजकुलीय** स्थविर **गोपालिक** महत्तरके शिष्य थे । इस चूर्णिकारने चूर्णिमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है । इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है । तथापि इस चूर्णिमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है । विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्री**जिनभद्र**गणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है । छट्ठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समग्र ग्रंथकी टीकाको श्री**कोट्टार्य**वादी गणी महत्तरने पूर्ण की है ।

५. **जीतकल्पबृहच्चूर्णी**के प्रणेता श्री**सिद्धसेन**गणी हैं । इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्री**जिनभद्र**गणिके बादकी स्वयंसिद्ध है । इस चूर्णिको **टिप्पनक**कार श्री**श्रीचन्द्र**सूरिने बृहच्चूर्णीनामसे दरशाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीरं परोपकृतिहेतवे । जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥ १ ॥

उपरनिर्दिष्ट सात चूर्णीयोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णीयोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है । तथापि इन चूर्णीयोंके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूं ।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णीमें चूर्णिकारने पंद्रह स्थान पर **नागार्जुनीय** वाचनाका उल्लेख किया है. इनमेंसे सात स्थान पर **"भदंतनागज्जुणिया"** इस प्रकार बहुमानदर्शक 'भदन्त'शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए । सूत्रकृताङ्गचूर्णीमें जहां जहां नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहां सामान्यतया

नागज्जुणिया इतना ही लिखा है। अतः ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं। सूत्रकृताङ्गचूर्णीमें जिनभद्रगणीके विशेपावश्यकभाष्यकी गाथायें एवं स्वोपज्ञ टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है; तब आचाराङ्गचूर्णीमें जिनभद्रगणिके कोई ग्रन्थका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस चूर्णीकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके पूर्वकी होनेका सम्भव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णिमें श्रीजिनभद्रगणीके **विशेषणवती**ग्रन्थकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे, और **कल्पचूर्णी**में साक्षात् **विसेसावस्सगभास**का नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णियोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है।

दशासूत्रचूर्णीमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णी भी श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है।

आवश्यकचूर्णिके प्रणेताका नाम चूर्णीकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहत्तरकृत बतलाई है। प्रतीत होता है कि–आपका यह निर्देश[1] श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पट्टावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादभूत महती चूर्णिमें जिनभद्र गणिके नामका या विशेपावश्यकभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो यही प्रतीत होता है कि–इस चूर्णीकी रचना जिनभद्रगणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है।

दशवैकालिकचूर्णी (वृद्धविवरण)में और **व्यवहारचूर्णी**में श्रीजिनभद्रगणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये चूर्णीयाँ भी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

जम्बूद्वीपकरणचूर्णी, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकी चूर्णी मानी जाती है, किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिधि-जीवा-धनुःपृष्ठ आदि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करनेवाले किसी प्रकरणकी चूर्णी है। वर्त्तमान इस चूर्णीमें मूल प्रकरणकी गाथाओंके प्रतिक मात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है। इस चूर्णीमें जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं, अतः यह चूर्णी उनके बादकी है।

यहां पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णिकारोंके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका था, वह करनेके बाद अंतमें यह लिखना प्राप्त है कि–प्रकाश्यमान इस नन्दीसूत्रचूर्णीके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं, जिसका रचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णीकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें संवतका उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णीरचनाका संवत् होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

शकराज्ञः पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्दध्ययनचूर्णी समाप्ता इति।

अर्थात् शाके ५९८ (वि. सं. ७३३) वर्षमें नन्दध्ययनचूर्णी समाप्त हुई। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्दध्ययनचूर्णिकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं। अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर 'लिखिता' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार गद्यसन्दर्भमें रचनासंवत् लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीशीलाङ्ककी आचाराङ्गवृत्तिमें प्राप्त है।

१. "श्रीवीरात् १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसूनुः श्रीहरिभद्रसूरिः स्वर्गभाक् । निशीथ-बृहत्कल्पभाष्या-ऽऽवश्यकादिचूर्णिकाराः श्रीजिनदासमहत्तराद्यः पूर्वगतश्रुतधरश्रीप्रद्युम्नक्षमणादिशिष्यत्वेन श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना एव यथाकालभाविनो योग्याः । ११.१५ श्रीजिनभद्रगणियुगप्रधानः । अयं च जिनभद्रीयध्यानशतककाराद् भिन्नः सम्भाव्यते।' इण्डियन एण्टीक्वेरी पु० ११, पृ० २५३ ॥

सूत्र और चूर्णिकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णिकी भाषाका स्वरूप क्या है? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हूं। सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैंने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्–श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे "जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय" नामक निबन्धमें कह दिया है, जो 'श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ'में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोंको सूचना है।

परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पांच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये हैं। पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथायें हैं उनको अकारादिक्रममें दी गई हैं। दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये हैं। तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका है। चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णिमें आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोंका अनुक्रम है। पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णिमें आनेवाले विषयद्योतक एवं व्युत्पत्ति-द्योतक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है। इन परिशिष्टोंके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है। वाचक और अध्येता विद्वानोंसे नम्र निवेदन हैं कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढें।

संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके संशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है। खास तोरसे पं. भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है। जिसने चूर्णि और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साद्यन्त प्रुफपत्र देखे हैं और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं। भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया–मुख्यनियामक ला. द. भारतीय संस्कृतिविद्यामंदिर–अहमदाबाद तथा पंडित बेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके बादमें साद्यन्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है। भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें शाश्वत साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है।

वसंत प्रिन्टींग प्रेसके संचालक श्री जयंति दलाल और मेनेजर श्री शांतिलाल शाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओंका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आंतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है।

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, एसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है। इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एवं अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एवं चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है। मैं तो सिर्फ इस संशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हूं। अतः इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण संशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि–मेरे इस संशोधनमें जो भी छोटी मोटी क्षति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा।

सं. २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

श्रीनंदिचूर्णि ॥१॥

॥ॐ॥ नमो वीतरागाय॥ [illegible]

[illegible]

१

[illegible]

१९

नंदीसूत्रचूर्णि की श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर (पाटन) की प्रति के प्रथम [illegible]

नंदीसूत्र

॥६०॥ ॐ नमः श्रीपंचपरमेष्ठिभ्यः॥ जयइ जगजीवजोणीवियाणउ जगगुरू जगाणंदो ज
गणाहो जगबंधू जयइ जगप्पियामहो भयवं॥ जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो
जयइ जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो॥ भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वी
रस्स भद्दं सुरासुरनमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स॥ गुणभवणगहण सुयरयणभरिय
दंसणविसुद्धरत्थागा॥ संघनगर भद्दं ते अखंडचारित्तपागारा॥ संजमतव
तुंबारयस्स नमो सम्मत्तपारियल्लस्स अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्क
स्स॥ भद्दं सीलपडागूसियस्स तवनियमतुरयजुत्तस्स॥ संघरहस्स भगवओ सज्झायसुनंदि
घोसस्स॥ कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहनालस्स॥ पंचमहव्वयथिरकन्नियस्स
गुणकेसरालस्स॥ सावगजणमहुयरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स॥ संघपउमस्स भद्दं
॥ समणगणसहस्सपत्तस्स॥

… नं० ३२ पृ० २ …

… (३५ब) पत्रकी द्वितीय पृष्टि।

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वर्द्धमानाय ॥

सव्वसुतक्खंधगादीणं मंगलाधिकारे णंदि त्ति वत्तव्वा । णंदणं णंदी, णंदंति वा अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुव्विहो निक्खेवो । गताग्नु णाम-ट्ठवणाग्नु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो वारसविधो तूरसंघातो इमो—

भंभा १ मकुंद २ मद्दल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कंसाला ७ ।
काहल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य वारसमो ॥१॥
[ ]

भावणंदी णंदिसद्दोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरूवगं णंदि त्ति अज्झयणं, तं च सुतंसेण सव्वसुतब्भंतरभूतं । तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थमादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्ठाणावसरपत्तस्स गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरवुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरावलिं कहेत्ता ततो से अत्थं कहयंति । सव्वसुतत्था य जतो तित्थगरप्पभवा, अतो भत्तीए पण्णवग-सावग-पढग-चिंतगा य पढमताए णमोक्कारं करेत्ता भणंति—

[सुत्तं १]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयति० गाहा । सोतिंदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसग्ग-चउघातिकम्म-ऽट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य जिणमाणो जितेसु वा जयति त्ति भण्णति । जगं ति—खेत्तंलोगो तम्मि जे जीवा तेसिं जाओ जोणीओ—सचित्त-सीत-संवुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहपगारेहिं जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्मेहिं जाए जोणीए उववज्जति तं तहा जाणति त्ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो । अहवा जगग्गहणातो धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगास-पुग्गलग्गहणं, जीव त्ति सव्वजीवग्गहणं, जोणि त्ति—जीवा-ऽजीवुप्पत्तिट्ठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विगच्छति धुवं वा तं तहा सव्वं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलज्ञानमानन्यतो सव्वभावे सव्वदा जानाति

१ 'पखंधतादीणं आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गदाओ णाम-ट्ठवणाओ । दव्व' आ० दा० ॥ ४ 'मादीय मंगलट्टं पयु' आ० ॥ ५ 'वलियं कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कहयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णवगा' आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सललियवसभविक्कमगती महावीरो [illegible] । [illegible] सुगमा उपलभ्यते ॥ ९ 'सगावघाति' आ० । 'सगुपवाति' दा० ॥ १० हेमवतो तम्मि आ० दा० ।

त्ति ख्यापितं भवति। 'जगगुरु' त्ति जगं ति–सव्वसण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरुः। कथम्? उच्यते—[जे० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः, ब्रवीतीत्यर्थः, तिरिय-मणुयं-देवा-ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति। जो वा जं पुच्छति तं सव्वं कहयति त्ति तेण गुरू, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति। जगा–सत्ता ताण आणंदकारी जगाणंदो। कहं? उच्यते–सव्वेसिं सत्ताणं अव्वावादणोवदेसकरणत्तातो। जतो भणितं–"सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिघेत्तव्वा ण अज्जावेतव्व" [आचा० श्रु.१ अ.४ उ.२ सू. ३] त्ति। विसेसतो सण्णीणं धम्मकहणत्तातो आणंदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताणं ति। अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्वं दर्शितं भवति। जगा–सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ त्ति जगणाहो। कहं? उच्यते–मणो-वयण-काएहिं कत-कारिता-ऽणुमतेहिं रक्खंतो जगणाहो भवति। अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहता दंसिता भवति। 'जगबंधु' त्ति जगा–सत्ता तेसिं बंधू जगबंधू। कहं? उच्यते–जो अप्पणो परस्स वा आवतीए वि ण परिच्चयति सो बंधू, भगवं च सुट्ठु वि परीसहोवसग्गादिसु वाहिज्जमाणो वि सत्तेसु बंधुत्तं अपरिच्चयंतो ण विराहेति त्ति अतो जगबंधू, अनेन वचनेन सव्वसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति। पितामहो त्ति जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं चेव। सव्वसत्ताणं पितामहो कहं? उच्यते–सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सव्वसत्ताणं भगवं पितामहो त्ति। अनेन वचनेन धम्मं पडुच्च आदिपुरिसत्तं ख्यापितं भवति। एतीए गाहाए पच्छद्धस्स पाढंतरं इमं–"जिणवसभो सललियवसभविक्कम [जे० १८६ द्वि०] गती महावीरो।" जिण एव वसभो जिणवसभो। वसभो त्ति संजमभारुव्वहणे। चंकमतो सुभा गायसंचालणक्रिया सललितं भण्णति। वाम-दाहिणाणं वा पुरिम-पच्छिमचलणाणं जं कमुक्खेवकरणं स विक्कमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो चेव विक्कमो। सेसं कंठं ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

जयति सुताणं० गाहा। राग-दोसादिअरी जिणंतो जितेसु वा जयति त्ति। ['सुताणं'] सव्वसुताणं ति, सुतणाणत्थो भगवंतातो पभवो। 'पभवो' त्ति पसूती। अणिट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भण्णति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपच्छिमो, रिसभो पच्छिमो। अविसिट्ठजीवलोगस्स विसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मद्दिट्ठिमादिसंजता-ऽसंजतलोगस्स गुरू। महं आता जस्स सो य अकम्मवीरियसामत्थतो महात्मा, केवलादिविसिट्ठलद्धिसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स।
भद्दं सुरा-ऽसुरणमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥ ३ ॥

भद्दं सव्व० गाहा। भायते भाति वा भद्रम्, तं भगवतो भवतु त्ति। सव्वजगं ति–लोगो। अट्ठविहो वि लोगनिक्खेवो भाणितव्वो [आव० नि० गा० १०५७]। सेसं कंठं ॥ ३ ॥ इमं संघस्स रहरूवगं—

१ °य-सदेवा° जे० दा० ॥ २ °ए पयमक्खा° जे० ॥ ३ "सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा ण परियावेयव्वा ण परिघेत्तव्वा ण उद्दवेयव्वा" इतिरूपं सूत्रमाचाराङ्गे ॥ ४ विसंघेइ आ० ॥ ५ °मद्दो भवति। अनेन आ० ॥ ६ °त्थगरा° मं० ॥ ७ °णाणत्थाणं भग° आ० ॥ ८ °च्छिमो वीरो, रिसभो आ० ॥

[सुत्तं २]

भद्दं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगजुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ सज्झायसुणंदिघोसस्स ॥ ४ ॥

भद्दं सील० गाहा । रहो सामण्णतो पंचमहव्वतमइओ । उस्सितो त्ति तस्सऽट्ठारससीलंगसहस्सूसिता जतपडागा । बारसविहो तवो इंदिय-णोइंदियो य णियमो एते अस्सा । सज्झायसद्दो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥४॥

संघस्सेव इमं चक्करूवगं—

संजम-तवतुंबा-ऽरयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विसुद्धभावचक्कस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं । तस्स बारसविहतवोमता अरगा । पारियल्लं ति–जा बाहिरपुट्ठयस्स बाहिरब्भमी, सा से सम्मत्तं कतं, जम्हा अण्णेहिं चरगादिएहिं जेतुं [जे० १८७ प्र०] ण सक्कति तम्हा एयं जयति, अप्पडिचक्कं च एतं । णमो एरिसस्स [संघ]चक्कस्सेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव णगररूवगं—

गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।
संघणगर ! भद्दं ते अक्खंडचरित्तपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि पुरिससंघणगरे इमे गुणा—पिंडविसुद्धि-समिति-गुत्ति-दव्वादिअभिग्गह-मासादिपडिमा-गोयरे य चरगादिया, एमादिउत्तरगुणा तम्मि संघणगरे भवणा कता, भवण त्ति घरा, तेहिं गहणं ति–णिरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-ऽणंगादिविचित्तसुतरयणभरितं । खयोवसमितादिसम्मत्तमइयरच्छाओ य, मिच्छत्तादिकयारवज्जितत्तणतो विसुद्धाओ । मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अखंडो त्ति–अविराधितो णिरतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पउमरूवगं—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहणालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकण्णियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥
सावगजणमहुयरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भद्दं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥ [जुम्मं]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अहवा जं पुव्वबद्धं तं कम्मं, बज्झमाणं रयो, तं गव्वं पि

---

१ भद्दं सील० इति संजमतव० इति गुणभवण० इति च सूत्रगाथात्रिकं [illegible] पश्चानुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ हरि०वृत्तौ मलय०वृत्तौ च 'सुणेमिघोसस्स' इति पाठभेदो [illegible] । [illegible]– "तत्थ सरसंपन्ने [illegible] सरसंपन्ना [illegible] ॥ ३ 'पडागा आ० ॥ ४ सं० मो० आदर्शयोः केनापि विदुषा 'बारसह्स्स स्थाने 'बारसण्ह' इति [illegible] । [illegible] मलयगिरिपादव्याख्यान [illegible] ॥ ५ 'तवो मता अरगा जे० दा० ॥ ६ अखंडचारित्त' [illegible] ॥ ७ 'च्छाया य [illegible] ॥ ८ 'बतयर' आ० दा० ॥ ९ णिरइयार आ० ॥ १० पउम' आ० दा० ॥ ११ 'दस्सति' [illegible] ॥

जलोहमिव कल्प्यते । अहवा पुव्वबद्धं कम्मं पंको, बज्झमाणं जलोहो, ततो विणिग्गतो संघपंदुगो । तस्स णाल सुत एव रयणं सुतरतणं तं से णालो कतो । पंचमहव्वता य से थिर त्ति–दढा ते कण्णिय त्ति–बाहिरपत्ता कत गुणा–मूलुत्तरगुणा य से अणेगविहा [केसरा] तेहिं गुणेहिं आलस्स त्ति–अधिकयोगयुक्तस्य गुणकेसराल मूलादिगुणकेसरयुक्तस्य इत्यर्थः ॥ ७ ॥

बितियगाहाए–परिवुड त्ति–परियारितं, जिणसूरस्स धम्मकहणक्खाणतेयेण प्रबोधितं । अणेगसम सहस्सा य से अब्भंतरपत्ता कता । एरिसस्स संघपदुमस्स भद्दं भवतु ॥ ८ ॥ इमं चंद्रसंघरूवगं—

तव-संजममयलंछण ! अकिरियराहुमुहदुद्धरिस ! णिच्चं ।

जय संघचंद ! णिम्मलसम्मत्तविसुद्धजुंण्हागा ! ॥ ९ ॥

तवसंजम० गाहा । संघचंदस्स मियो तव-संजमा, तेहिं लंछितो । अकिरिय त्ति–णत्थियवादी ते राहुमु तेहिं दुआधरिसो त्ति–ण सक्कते जेतुं । 'णिच्चं' ति सव्वकालं । संकादिविसुद्धसम्मत्तं से जोण्हा । सेसं कंठं ॥ ९ सूरसंघरूवगं इमं—

परतित्थियगहपहणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।

णाणुज्जोयस्स जए भद्दं दमसंघसूरस्स ॥ १० ॥

परतित्थिय० गाहा । हरि-हर-हिरण्ण-सक्कोलूक-चरग-तावसादयो परतित्थिया गहा, तेसिं णाणतेयण सुतादिणाणप्पभाते णासेति । [जे० १८७ द्वि०] तव-णियमकरणातो य अतीवदित्तिमंतलेस्सो । लेस्स त्ति–रस्सीय सुतादिणाणुज्जोतसंपण्णस्स य इमम्मि जए संघसूरस्स भद्दं भवतु । सेसं कंठं ॥ १० ॥ इमं संघसमुद्दरूवगं—

भद्दं धिईवेलापरिखुडस्स सज्झायजोगमगरस्स ।

अक्खोभस्स भगवओ संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

भद्दं धिति० गाहा । जल-वेदियंतरे जं रमणं सा वेला, सा य मेरा वि भण्णति, एवं संघसमुद्दस्स धि वेला, ताए परिखुडो त्ति–वेढितो । वायणादिसज्झायजोगकरणं मगरो । परमवादोपसर्गादिभिर्न क्षुभ्यते । महंतो । सेसं कंठं ॥ ११ ॥

इमं संघस्स मेरुरूवगं–तस्स य पव्वतस्स इमे रूवगा, तस्स य पव्वतस्स इमे अवयवा–पेढं मेहला उस सिला, मेहलासु कूडा, मेहलाए वणं गुहा, गुहासु य मइंदा सुवण्णादिधातवो, णाणाविधवीरियोसहिपज्जलि णिज्झरा य सलिलजुत्ता, कुहरा य से मयूरादिपक्खिउवसोभिता, अणुवग्घातिविज्जुलतोवसोभितो य सो, क दिरुक्खुवसोभितो य, अंतरंतरेसु य वेरुलितादिरतणसोभितो । एतेसिं पदाणं पडिरूवेण इमाहिं छहिं गाह उवसंहारो—

१ °पयुमो आ० । पउमो दा० ॥ २ गुणेहिं अब्भहितस्स त्ति अधिक° आ० ॥ ३ परिकरियस्स जिण° अ
४ इमं संघस्स चंदरूवगं आ० ॥ ५ °जोण्हागा सु० । जुन्हागा डे० ॥ ६ मियो णाम तव° आ० ॥ ७ सं
सूररूवगं तिमं आ० ॥ ८ धीवेला° सं० डे० ल० ॥ ९ °परिगयस्स सर्वासु सूत्रप्रतिषु । हरिभद्रसूरि-मलयगिरि
भ्यामेतत्पाठानुसारेणैवं व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृत्सम्मतस्तु पाठः कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥ १० जलवट्टि (? इड्डियं)° अ
११ °सुपसदा जे० दा० ॥ १२ मिगिंदा आ० ॥ १३ णाणादिविविधदित्तोसहि° आ० ॥ १४ °संथा(धा)रो आ० ॥

सम्मद्दंसणवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स ।
धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥
णियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥
जीवदयासुंदरकंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइण्णस्स ।
हेउसयधाउपगलंतरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥
संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावगजणपउररवंतमोरणच्चंतकुहरस्स ॥ १५ ॥
विणयनयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥
णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥[10] [छहिं कुलयं]

सम्मद्दंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा । णाणवर० गाहा । संघपव्वतस्स सम्मद्दंसणं चेव वइरं । तं च संकादिसल्लरहियत्तणयो दढं ति[12] रूढं ति—चड्ढितं, कहं ? विसुज्झमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सद्दहाणत्तणतो जीवादिपदत्थेसु अतीवओगाढं ति वुत्तं भवति । एतं पेढं । धम्मो दुविहो मूलुत्तरगुणेसु । सो य दुविहो वि वरो त्ति—पधाणो । तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा, तेहिं मंडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवण्णं, तम्मयी मेहला, तया जुत्तस्स मेहलागस्स ॥१२॥

नियमो त्ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलातला तेहिं चेव उस्सितो, असुभज्झवसाणविरहितत्तणतो कम्मविसुज्झमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्त-ऽत्थाणुसरणत्तणतो ये जलति चित्तं, चिंतिज्जइ जेण तं चित्तं, तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भवण-वेमाणिया विज्जाहर-मणुया य तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वल्लि-वितोणाणेगोमहिमतेहिं गहणं, पत्त-पल्लव-पुप्फ-फलोवेयेतेहिं मण-

---

१ 'सणवरवइरदढरूढ' दे० शु० ल० मु० । 'सणओयरद[illegible]रूढ' सं० ॥ २ 'दगीढ' [illegible] ॥ ३ 'लायलम्म' सं० ॥ ४ 'यलज्ज' शु० ॥ ५ 'गंधुद्धुमा' सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । 'गंधद्धुमा' हरि० वृत्तौ ॥ ६ 'मयंदाघरस्स' दे० । 'मइंदइरस्स' ल० ॥ ७ 'तरयणदित्तो' मो० मु० । 'तरित्थदित्तो' दे० ॥ ८ विणयणयपवर' [illegible] । चूर्णि[illegible] ॥ ९ विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स [illegible] । चूर्णि[illegible] ॥

१० सप्तदशगाथानन्तरं चूर्णिकृदादिभिरव्याख्यात गाथायुगलमित्थमिव [illegible]—
गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुयंधतवमंडिउद्देसं । सुयबारसंगसिहरं संघमहामंदरं वंदे ॥१॥
नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि । जो उवमिज्जइ सययं तं संघ गुणायरं वंदे ॥२॥
अत्रार्थे जेसू० आदर्शे इय टिप्पणी वर्तते—"गुणेत्यादि गाथा २ [illegible]" ।

११ णाणवरण० गाहा जे० दा० । अशुद्धोऽयं पाठभेदः ॥ १२ 'इंसणं से दढं' जे० । १३ 'ति [illegible]' आ० ॥ १४ य उज्जलं-दित्तिमं चिंतिज्जइ तेण दित्तं, तं चेव आ० । [illegible] । १५ '[illegible]तेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ 'लोवतेहिं' आ० ॥

हारित्तणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंधं। सीलवणसंडे वि जम्हा साधवो णंदंति पमोदंति रमंतीत्यर्थः। विविहलद्धि-विसेसतो य मणहरं सीलवणं, विसुद्धभावत्तणतो य सुगंधं, जहा दव्ववणसंडं गंधेण उद्धुमातं ति–व्याप्तं तहा सीलगंधेण संघस्स गंधुद्धुमायस्स[1] ॥ १३ ॥ किंच—

जं पव्वतासण्णं सिलारुक्खगहणं तं कंदरं ति। भावे जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं तं कंदरं ति। तत्थ य उ[2]–प्पावल्ले, दरितो त्ति–दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो त्ति वुत्तं भवति। को य सो? मुणिगणो। सो चेव मुणिगणो मइंदो परप्पवादिसासणसंघमयाण इंदो। कहं? सितवादउ[3]त्तमभावत्तणतो। हेतु त्ति–पक्खधम्मो कारणं वा, ते सतग्गसो सुत्ते संभवंति। ते य हेतवो धातू, ते य पगलंति परूवणगुहाए। सा य परूवणगुहा णाणादिरतणादिएहिं दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहिं वा दित्ता ॥ १४ ॥

एवं दित्तोसहिगुहस्स संघस्स संवरो त्ति–पच्चक्खाणं, तं चेव सलिलं, किंचि पव्वतग्गातो ओसरितं उज्झरं, ई[4]हावि खाइगभावातो खयोवसमियं उज्झरं, ततो पलंबिता खतोवसमितसंवरदगधारा, स च्चेव धारा हारो, तेण विरायते–सोभति त्ति। सावगजणो पउरो त्ति–बहू[5] प्रचुरः सो य गीतद्धणीए[6] रवति त्ति–रडती, ते चेव मोरा णाडगादीहि य णच्चंति। जं पव्वतस्स अद्धे[7] समप्पदेसं रुक्खाकुलं [जे० १८८ द्वि०] च तं कुहरं। एवं संघपव्वतस्स ण्हवण[8]मंडवादी कुहरं ति ॥ १५ ॥

विणयकरणत्तातो विणयमतो[9] मुणी। सो य विणयकरणत्तेण फुरते, तं चेव फुरितं विज्जुतं ति–चकोरितं, तं च उज्जलं ति–निम्मलं, तेण उज्जलत्तेण संघसिहरं जलितमिव लक्खिज्जति। संघसिहरं च पावयणिपुरिसा दट्ठव्वा। तत्थ य विविहकुलुप्पण्णा साहवो कप्परुक्खा, खीरासवादिलद्धिफलेहि य[10] णयभरा, लद्धिहेतुट्ठिता साहवो कुसुमितो कुलवण[11] त्ति दट्ठव्वा ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाणा वर त्ति–पहाणा, ते चेव णाणावेरुलियादिरतणा इव कंता, कंता इति–कंतिजुत्ता[12]। कंतिजुत्तत्तणतो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसरूवोवलंभतो दिप्पंति। नाणस्स य मलो णाणावरणं, तव्विगमातो य विगतमलं। चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सें[13] य णाणातिसयगुणेहिं जुत्ता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति। एवं संघपव्वतस्स पेढादिचूलपज्जवसाणकप्पियस्स वंदामि विणयपणतो त्ति छण्ह वि गाहाणं एतं क्रियापदं ति ॥ १७ ॥

एवं चरमतित्थगरस्स संघस्स य[14] पणामे कते इमा अवसेरप्पत्ता[15] आवली भण्णति—सा तिविहा तित्थकर १ गणहर २ थेरावली ३ य। तत्थ तित्थगरावलिदंसणत्थं इमं भण्णति—

[सुत्तं ३]

वंदे उसभं अजिअं संभवमभिणंदणं सुमति सुप्पभ सुपासं।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंसं[16] वासुपुज्जं च ॥ १८ ॥

१ °स्स किया। जं आ० ॥ २ उत्– प्राबल्ये इत्यर्थः ॥ ३ °उत्तिम° आ० ॥ ४ इघावि आ० ॥ ५ बहुः आ० ॥ ६ गीतज्झुणीए आ० ॥ ७ अद्दे आ० ॥ ८ ण्हाण° आ० ॥ ९ °यणतो आ० दा० ॥ १० य फलभरा आ० दा० ॥ ११ °ता गुणवण त्ति आ० ॥ १२ कंतादिजुत्त° आ० ॥ १३ सो य णाणातिसयत्थसरूवोवलंभगुणोदजुया जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ० ॥ १४ त आ० ॥ १५ °सरापण्णा आ° आ० ॥ १६ सेज्जंसं सं० शु०। सेयंसं सं० ॥

विमलमणंतइ धम्मं संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वय णमि णेमी पासं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [जुम्मं]

वंदे उसभ० गाहा । [विमल० गाहा य] कंठा ॥१८॥१९॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[सुत्तं ४]

पढमेत्थ इंदभूती बितिए पुण होति अग्गिभूति त्ति ।
ततिए य वाउभूती ततो वितत्ते सुहम्मे य ॥ २० ॥
मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य ।
मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्स ॥ २१ ॥ [जुम्मं]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मातो थेरावली पवत्ता, जतो [जे० १८९ प्र०] भण्णति—

[सुत्तं ५]

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंबूणामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलोगो । समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंबुणामे कासवे गोत्तेणं । जंबुणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते । पभवस्स अंतेवासी सेज्जंभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइण्णं थूलभद्दं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभद्दं० गाहा । सेज्जंभवस्स अंतेवासी जसभद्दे तुंगियायणे वच्छसगोत्ते । जसभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा– भद्दबाहू पाईणसगोत्ते, संभूतविजए य माढरसगोत्ते । संभूतविजयस्स अंतेवासी थूलभद्दे गोतमसगोत्ते ॥२३॥

एलावच्चसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।
ततो कासवगोत्तं बहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥ २४ ॥

१ °मणंतय हे० ल० मु० ॥ २ णेमिं खं० जे० शु० ॥ ३ एतद् गाथायुगलं चूर्णिकृता चूर्णौ [illegible] । पढमित्थ इंदभूई बीए पुण होइ अग्गिभूइ त्ति । तइए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य । मंडिय मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य । मेयज्जे य सं० हे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई हे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकविंशति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चूर्णिकृताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरि[illegible] जिनशासनस्तुतिरूपा इयमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु वर्तते—

णेव्वुइपहसासणयं जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमयमयणासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥

जयति शु० । जयउ हे० ल० । जिणंद° ल० ॥

७ जंबुणामं सं० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायइं हे० ल० ॥ १० [illegible] ॥ ११ 'वच्छस' सं० हे० ल० । 'वत्सस' शु० ॥ १२ 'गुत्तं शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं [illegible] । श्रीहरिभद्र-मलयगिरि[illegible] गाथेयं व्याख्यातास्ति । चूर्णिकृतास्माकं सूत्रपाठे नोपलभ्यते इत्यस्मदर्शे ।

एलावच्च० गाहा । थूलभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा—महागिरी एलावच्चसगोत्ते, सुहत्थी य वासिट्ठसगोत्ते । सुहत्थिस्स सुट्ठित-सुपडिबुद्धादयो आवलीते जहा दसासु [अ० ८ सूत्रं २१०] तहा भाणितव्वा, इहं तेहिं अहिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अंतेवासी बहुलो बलिस्सहो य दो जमलभातरो कोसवसगोत्ता । तत्थ बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स थुतिकरणे भणंति—"बहुलस्स सरिव्वयं वंदे" । 'सरिव्वयं' ति सरिसवयो, वयो य जम्मकालं पडुच्च जा जा सरीरपरिवड्ढिअवत्था सा सा वतो भण्णति ॥ २४ ॥

हारियगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसियगोत्तं संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्सहस्स अंतेवासी साती हारियसगोत्तो । सातिस्स अंतेवासी सामज्जो हारितसगोत्तो चेव । सामज्जस्स अंतेवासी संडिल्लो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो त्ति अज्जं ति—आर्यं आद्यं वा जीतं ति—सुत्तं धरति, सुत्तत्थस्स अविच्चुतिधरणत्तातो, वंदे त्ति वक्कसेसं । पाढंतरं वा "जीवधरं" ति, आर्यत्वात् जीवं धरेति—रक्षतीत्यर्थः । अण्णे पुण भणंति—संडिल्लस्स अंतेवासी जीवधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥२५॥ संडिल्लस्स सीसो—

तिसमुद्दखायकित्तिं दीव-समुद्देसु गहियपेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥ २६ ॥

तिसमुद्द० गाहा । पुव्व-दक्खिणा-ऽपरा ततो समुद्दा, उत्तरतो वेतड्ढो, एतंतरे खातकित्ती । सेसं कंठं ॥२६॥ तस्स सीसो [जि० १८९ द्वि०] इमो—

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २७ ॥[10]

भणगं० गाथा । कालियपुव्वसुत्तत्थं भणतीति भणको । चरण-करणक्रियां करोतीति कारकः । सुत्तत्थे य मणसा झायंतो ज्झरको । परप्पवादिजयेण पवयणप्पभावको । नाण-दंसण-चरणगुणाणं च पभावको आधारो य । सेसं कंठं ॥२७॥ तस्स सीसो—

णाणम्मि दंसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जीणंदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥ २८ ॥

---

१ अत्र चूर्णिकृता हरिभद्रपादैश्च सुहस्ती भगवान् दशाश्रुतस्कन्धाष्टमाध्ययनस्थविरावल्यामिव वासिष्ठगोत्रीयः ख्यापितः, किन्तु मलयगिरिसूरिचरणैरयं सूत्रगाथानुलोम्याद् ऐलापत्यसगोत्रीयः ख्यापितः, तदत्र तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्ता दा० ॥ ३ भणियं आ० ॥ ४ °यगुत्तं सायं च डे० शु० ल० ॥ ५ °जीवधर इति चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ६ "तेषां शाण्डिल्याचार्याणां आर्यजीतधर-आर्यसमुद्राख्यौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यसमुद्रस्याऽऽर्यमङ्गुनामानः प्रभावकाः शिष्याः जाताः" इति हिमवन्तस्थविरावल्याम् पत्र ९ ॥ ७ °खाइकित्तिं ल० ॥ ८ पत्थंतरे आ० ॥ ९ अज्जमंगू ल० ॥ १० अष्टाविंशतितमगाथानन्तरं शु० प्रतिं विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गाथायुगलमिदमधिकमुपलभ्यते—

वंदामि अज्जधम्मं वंदे तत्तो य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवइरं तव-नियमगुणेहिं वयरसमं ॥
वंदामि अज्जरक्खियखमणे रक्खियचरित्तसव्वस्से । रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥

एतद्गाथायुगलविषये जेसू० प्रतावियं टिप्पणी—"वंदामि अज्जधम्मं०" एतदपि गाथाद्वयं न वृत्तौ विवृतम्, आवलिकान्तरगाथासम्भवादिति सम्भाव्यते ।" ११ अज्जाणंदिल° सं० ॥

णाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।
वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढतु० गाहा । 'वड्ढतु' त्ति वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवंसो' वायेंति सिस्साणं कालिय-पुव्वसुतं ति वातगा—आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंण्णिहाणे वा सिस्सभावेण वाइतं सुतं जेहिं ते वायगा, वंसो त्ति—पुरिसपव्व-परंपरेण ठितो वंसो भण्णति । सो चेव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णति, सो य अणागतवंसो इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णति—जीवादिपदत्थ-पुच्छासु वाकरणे सद्दपाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु य तप्परूवणे य तहा कम्मप्पगडिपरूवणाए पधाणाणं पुरिसाणं वड्ढतु वायगवंसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो रेवइणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चंजण० गाहा । जच्चंजणग्गहणं कित्तिमवुदासत्थं, सरीरवण्णेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुद्दियफलसण्णिभो य । कुच्छितो उवलो कुवलयो, सो य कण्हकायो, कुवलयं वा—णीलुप्पलं, कुवलयं वा—रयणविसेसो । रेवतिवायगो त्ति । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । बंभद्दीवगसाहीणं आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको. उत्तमवायकत्तणं च तक्का-लसुतसंभवं पडुच्च । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

जेसि इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि इमो० गाहा । कहं पुण तेसिं अणुओगो ? उच्यते—बारससंवच्छरिए महंते दुब्भिक्खकाले भत्तट्ठा अण्णण्णतो फिडिताणं गहण-गुणणा-ऽणुप्पेहाभावातो सुत्ते विप्पणट्ठे पुणो सुभिक्खकाले जाते मधुराए महंते साहु-समुदए खंदिलायरियप्पमुहसंघेण 'जो जं संभरति' त्ति एवं संघडितं [दे० १९० प०] कालियसुतं । जम्हा य एतं मधुराए कतं तम्हा माधुरा वायणा भण्णति । सा य खंदिलायरियसम्मत त्ति कातुं तस्संतियो अणुओगो भण्णति । सेसं कंठं । अण्णे भणंति जहा—सुत्तं ण णट्ठं, तम्मि दुब्भिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुओगधरा ते विणट्ठा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण महुराए अणुयोगो पुणो साधूणं पवत्तितो त्ति माधुरा वायणा भण्णति, तस्संतितो य अणियोगो भण्णति ॥ ३२ ॥

१ 'भंगिय-कम्म' [illegible] ॥ ४ कुच्छितओ वलयो कुवलयो आ० ॥ ५ जेसि [illegible] ॥ ६ [illegible]

तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमे धिइपरक्कममहंते ।
सज्झायमणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

तत्तो हिम० गाहा । हिमवंतपव्वतेण महंतत्तणं तुल्लं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इह भरहे णत्थि अण्णो तत्तुल्लो त्ति, एस थुतिवादो । उत्तरतो वा हिमवंतेण सेसदिसासु य समुद्देण णिवारितो जसो, हिमवंतनिवारणो जसो महंतो त्ति अतो हिमवंतमहंतो । महंतविक्कमो कहं ? उच्यते—सामत्थतो, महंते वि कुल-गण-संघप्पयोयणे तरति त्ति, परप्पवादिजएण वा विसेसलद्धिसंपण्णत्तणतो वा महंतविक्कमो । अहवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिबलेण परक्कमंतो महंतो । अणंतगम-पज्जवत्तणतो अणंतधरो तं, महंतं हिमवंतणामं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो । तस्स सीसो णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिउ-मद्दवसंपण्णे अणुपुव्विं वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वंदे ॥ ३५ ॥

मिउ-मद्दव० गाहा । 'अणुपुव्वी' सामादियादिसुतग्गहणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण पुरिसाणुपुव्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओहसुतं च उस्सग्गो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णागज्जुणवायगस्स सीसो भूतदिण्णो आयरितो । तस्सिमा गुणकित्तणा तिहिं गाहाहिं—

तवियवरकणग-चंपय-विमउलवरकमलगब्भसरिवण्णे ।
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥
अड्ढभरहप्पहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे ।
अणुओगियवरवसहे णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

---

१ °मणंते सं० सं० ल० । जेसू० प्रतौ 'महंते' इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— "मणंते' इति वृत्तौ व्याख्यातम् ।" इति ॥ २ सुतिवादो आ० ॥ ३ जसो हिमवंतो त्ति, अतो हिमवंते महंतविक्कमो, कहं ? आ० ॥ ४ °णतो अणंतं वा सुतं, महंतं आ० ॥ ५ °णुजोग° सं० ॥ ६ मिय-म° डे० ॥ ७ पञ्चत्रिंशत्तमगाथानन्तरं P प्रतिं विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यत इदं गाथायुगलमधिकम्—

गोविंदाणं पि णमो अणुओगे विउलधारणिंदाणं । निच्चं खंति-दयाणं परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥
तत्तो य भूयदिन्नं निच्चं तव-संजमे अनिव्विन्नं । पंडियजणसामन्नं वंदामी संजमविहन्नू ॥

एतद्गाथायुगलविषये "इदमपि गाथाद्वयं न वृत्तौ कुत्रचित्" इति जेसू० प्रतौ टिप्पणी ॥ ८ पुरिमपरि° आ० । पूरपरि° जे० ॥ ९ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु वरकणगतवियचंपय° इति पाठ उपलभ्यते । भगवता हरिभद्राचार्येण "वरकणग० गाहा" इति प्रतीकन्यसनेन एष पाठः स्वीकृतोऽस्ति । चूर्णौ पुनः "तविय० गाहा" इति प्रतीकदर्शनात् चूर्णिकृता तवियवरकणगचंपय० इति पाठ आदृतः सम्भाव्यते । श्रीमलयगिरिपादैस्तु "वरतवियेत्यादि गाथात्रयम्" इति प्रतीकनिर्देशेन वरतवियकणगचंपय° इति पाठोऽङ्गीकृतो वर्तते । न चैतच्चूर्णिकृद्-मलयगिरिपादनिर्दिष्टं पाठभेदयुगलं सूत्रादर्शेषु दृश्यते ॥ १० °ब्भसिरिव° सं० । °ब्भसमव° डे० ॥ ११ °णुओयिय° मो० । °णुओइय° शु० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिभ्यामयमेव पाठः स्वस्ववृत्तौ स्वीकृतोऽस्ति ॥

भूयहिययप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिए ।
भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [विसेसयं]

तेविय० गाहा । गब्भो त्ति–पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अड्ढभरह० गाहा । वहुविहो सज्झायो त्ति–अंगपविट्ठो वारसविधो, अणंगपविट्ठो य कालिय-उक्कालितो अणेगविहो । सो य पधाणो त्ति, सुगुणितत्तणेण निस्संको त्ति कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिंसा । [जे०१९० द्वि०] पगब्भं ति–धैरिट्ठं । अहिंसाभावे पागब्भता, अतीवअप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ३८ ॥

भूतदिण्णस्स सीसो लोहिच्चो । तस्स इमा थुती—

सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्त-ऽत्थधारयं णिच्चं ।
वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणातच्चं ॥ ३९ ॥

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं तं ? भण्णति–जीवो जीवत्तणेण निच्चो, गतिमादिएहिं अणिच्चो । परमाणू अजीवत्तणेण मुत्तत्तेण य निच्चो, दुप्पदेसादिएहिं वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो । सुट्ठु त मुणितं सुत्त-ऽत्थं धरेति । णिच्चकालं पि स्वे भावे ठितो सब्भावो, सँ–सोभणो वा भावो सब्भावो, सँ–विज्जमाणो वा भावो सब्भावो, तं उब्भासए तच्चत्तेण, तथ्यत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणामं आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोभिच्चस्स सीसो दूसगणी । तस्स इमा थुती—

अत्थ-महत्थक्खाणिं सुसमणवक्खाणकहणणेव्वाणिं ।
पयतीए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४० ॥"
सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पादे पावयणीणं पडिच्छगसएहि पणिवइए ॥ ४१ ॥

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि त्ति–आगरो । सा य अत्थस्स खाणी । [illegible] ? [illegible] । [illegible] य अणेगपज्जायभेदभिण्णो । अहवा भासगरूवो अत्थो, विभासग-[illegible] य [illegible] । [illegible] रैवाणी । का सा ? 'वाणि' त्ति संवज्झति । सुभो समण(णो) [illegible] । [illegible] [कहणं]ति–अत्थकहणं, तम्मि अत्थकहणे सोताराण करेति वाणी णेव्वाणी । अहवा [illegible] ति–अणुयोगकहणं,

१ परकणग० गाहा आ० । परकणगतविय० गाहा दा० ॥ २ धारेदव्वं । [illegible] ॥ ३ 'धारयं वंदे । सब्भावुब्भावणया, तरथं लोहिच्चनामाणं ॥ [illegible] सपयप्रतिषु लभ्यते ॥ ४ सत्-शोभनो वा भावः सद्भावः, सत्-विद्यमानो वा भावः [illegible] । ५ [illegible] ॥ ६ 'वक्खाणी दे० त० ॥ ७ सुसवण' चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ८ 'दवाणी [illegible] ॥ ९ 'वाणी [illegible] १० 'वाणी [illegible] ॥ ११ चत्वारिंशत्तमगाथानन्तरं P प्रति विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गाथेयमधिकोपलभ्यते—

तव-नियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-खंति-मद्दवरयाणं । सीलगुणगद्दियाणं [illegible] ।

अत्र "गद्दियाणं" इति 'गर्दितानां' व्याख्यातम्" इति आवश्यकवृत्तिविद्या [illegible] गाथा न चूर्णौ वृत्तिषु च" इति टिप्पणी वर्तते ॥ १२ पडि° [illegible] ॥ १३ [illegible] ।

कहणं ति–अक्खेवमादियाहि कहाहिं धम्मकहणं । तत्थ कुद्धाण वि आगताणं तस्स वाणी णेव्वाणिं जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताणं ? । अहवा पाढो–"सुसवण" त्ति तत्थ सवण त्ति–कण्णा, तेसु सुहं जणेइ त्ति सुस्सवणा, एवं इकारलोवातो भण्णति । अहवा सुस्सवणा सुहस्रवा इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ४० ॥ इमा वि दुस्सगणिणो चेव चलणथुती—

सुकुमाल० गाहा । पवयणं–दुवालसंगं गणिपिडगं जस्स अत्थि सो पावयणी, गुरवो त्ति कातुं बहुवयणं भणितं । सेसं कंठं ॥ ४१ ॥ एस णमोक्कारो आयरियजुगप्पहाणपुरिसाणं विसेसग्गहणातो कतो । इमा पुण [जे० १९१ प्र०] सामण्णतो सुतविसिट्ठाण कज्जइ—

जे अण्णे भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा णाणस्स परूवणं वोच्छं ॥ ४२ ॥

॥ थेरावलिया सम्मत्ता ॥

जे अण्णे० गाहा । कंठा ॥ ४२ ॥

एतं च नाणपरूवणज्झयणं अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ । जतो भणितं—

[सुत्तं ६]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।
मसग ८ जलूग ९ बिराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जाणिया १ अजाणिया २ दुव्वियड्ढा ३ ।[5]

६. सेलघण० गाहा । एत्थ अरिहा इमे कुडेसु–अप्पसत्थवम्मसारिच्छा, पसत्थभावितेसु य अवम्मसारिच्छा । तहा हंस-मेस-जलूग-जाहगसारिच्छा अरिहा, गो-भेरी-आभीरेसु य पसत्थोवणतोवणीता अरिहा । सेसा अणअरिहा ॥ ४३ ॥

इमस्स य नाणपरूवणज्झयणस्स परूवणे परिसा जाणिगाइ तिविहा जाणितव्वा । तत्थ जाणिया—

गुण-दोसविसेसण्णू अणभिग्गहिता य कुस्सुइ-मतेसु । सा खलु जाणगपरिसा गुणतत्तिल्ला अगुणवज्जा ॥१॥

[कप्पभा. गा. ३६५]

---

१ किज्जइ दा० ॥ २ वंदिऊण सं०। वंदितूण P ॥ ३ परूयणं सं० ॥ ४ आभीरी सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । एष एव पाठः श्रीहरिभद्र-मलयगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतत्सूत्रानन्तरं जे० डे० मो० शुसं० मु० प्रतिषु चूर्णि-वृत्तिकृद्भिरव्याख्यातोऽधिकोऽयं प्रक्षिप्तः सूत्राभासः पाठ उपलभ्यते—

जाणिआ जहा—

खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसे य विवज्जंती तं जाणसु जाणियं परिसं ॥

अजाणिआ जहा—

जा होइ पगइमहुरा मियछावय-सीह-कुक्कुडगभूया । रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥

दुव्वियड्ढा जहा—

न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेण । वत्थि व्व वायपुण्णो फुट्टइ गामेल्लयवियड्ढो ॥

एतद्गाथात्रयविषये जेमू० प्रतावियं टिप्पणी केनापि विदुषा टिप्पिता दृश्यते—"जाणियेत्यारभ्य एतद् गाथात्रयं वृत्तौ न व्याख्यातम्, अतोऽन्यकर्तृकं सम्भाव्यते ।" इति ॥ ६ °आभीरीसु आ० ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुक्कुरगभूता । रयणमिव असंठविता सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥
[कप्पभा. गा. ३६७]

इमा दुव्वियड्ढा—

किंचिम्मत्तग्गाही पल्लवगाही य तुरियगाही य । दुवितड्डिया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥
[कप्पभा. गा. ३६९]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा ॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दूसगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा–आभिणिबोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ ।

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या–णाती णाणं–अवबोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाणं, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतम्हि त्ति णाणं, नाणभावे जीवो त्ति, अधिकरणसाहणो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम् , अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणधरेहिं । अहवा पण्णा–बुद्धी, पहाणपण्णेण अवाप्तं पण्णत्तं, सम्मद्दिट्ठिणा लद्धमित्यर्थः । अहवा पहाणपण्णातो अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहिं लद्धं ति वुत्तं भवति । अहवा पण्णा–बुद्धी, तीए अवाप्तं पण्णत्तं, तित्थकर-गणधरा-ऽऽयरिएहिं कहिज्जंतं [जे० १९१ द्वि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तंदित्तणेण अधिकतत्थं नाणं संवज्झति । जे पुव्वमुवण्णत्था पंच णाणभेदा तेषां प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासद्दो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबोधिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मतं तप्पयोयणं वाऽऽभिणिबोधिकं । अहवा आता तदभिनिबुज्झए, तेण वाऽभिणिबुज्झंते, तम्हा वा[ऽभिणि]बुज्झते, तम्हि वाऽभिनिबुज्झए इंतो आभिनिबोधिकः । स एवाऽऽभि-णिबोधिकोपयोगातो अनन्यत्वादाभिनिबोधिकम् १ । तहा तम्हुणोति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्हि वा सुणेतीति सुतं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाऽवधीयते, तम्हि वाऽवधीयते, अवधाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । [illegible] दव्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सव्वतोभावेण गमणं पज्जवणं पज्जवः, मणसि मणसो वा पज्जवो मणपज्जवो, स एव नाणं मणपज्जवनाणं । तहा पज्जयणं पज्जयः, मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्ययः, स एव नाणं मणपज्जयणाणं । तहा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम्, सव्वतो आयो पज्जायो, मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(?पज्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पज्जवा मणपज्जवा, तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जवनाणं । तहा मणसि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जयनाणं ।

गमणपरावत्तेणो लाभो भेदा य वत्थुपरावत्ता । मणपज्जवम्मि नाणे [illegible] ॥ १ ॥ ४ ।
[ ]

१ जे होंति पगयसुद्धा मिग' इति कप्पभाष्ये ॥ २ तुरिय' [illegible] । ३ सम्मद्दिट्ठिणा [illegible] । ४ [illegible] आभिनिबोधिकार्थम् इत्यर्थः । " तं जहा ' इति [illegible] 'तद' इति [illegible] । ५ [illegible]

"केवलमेगं सुद्धं सकलमसाधारणं अणंतं च।" [विशेषा. गा० ८४] इत्यर्थः ५। नाणसद्दो य सव्वत्थाऽऽभिनिबोधिकादीण समाणाधिकरणो [जे० १९२ प्र०] दट्ठव्वो, तं जहा–आभिनिबोधिकं च तं नाणं च आभिनिबोधिकनाणं। एवं सव्वेसु देट्ठव्वं। पुच्छा य–किमेस मतिनाणादियो कमो? एत्थ उत्तरं भण्णति–एस सकारणो उवण्णासो। इमे य ते कारणा–तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदट्ठितित्तणतो इंदिया-ऽणिंदियणिमित्तत्तणतो तुल्लक्खतोवसमकारणत्तणतो सव्वदव्वादिविसयसामण्णत्तणतो परुक्खसामन्नत्तणओ य तब्भावे य सेसणाणसंभवातो अतो आदीए मति-सुताइं कताइं। तेसु वि य "मतिपुव्वतं सुतं" [सुत्तं ४३] ति पुव्वं मतिणाणं कतं, तस्स य पिट्ठतो सुतं ति। अहवा इंदिया-ऽणिंदियनिमित्तत्तणमविसिट्ठे वि मति-सुतेसु परोवदेसत्तणमेत्तभेदातो अरिहंतवयणकारणत्तणतो य मतिविसेसत्तणतो य सुतस्स मतिअणंतरं सुतं ति। मति-सुयसमाणकालत्तणतो मिच्छदंसणपरिग्गहत्तणतो तव्विवज्जयसाहम्मत्तणतो सामिसाहम्मत्तणतो य कत्थइ कालेगलाभत्तणतो य मति-सुताणंतरं अवधि त्ति भणितो। ततो य छउमत्थसामिसामण्णत्तणतो य पुग्गलविसयसामण्णत्तणतो य खयोवसमभावसामण्णत्तणतो य पच्चक्खभावसामण्णत्तणतो य अवहिसमणंतरं मणपज्जवनाणं ति। सव्वनाणुत्तमत्तणतो सव्वविसुद्धत्तणतो य विरतसामिसामण्णत्तणतो य सव्वावसाणलाभत्तणतो य सव्वुत्तमलद्धित्तणओ य तदंते केवलं भणितं॥

८. तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पच्चक्खं च परोक्खं च।

८. सव्वं पेतं समासतो दुविधं—पच्चक्खं च परोक्खं च० इत्यादि। इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्वं पच्चक्खं पण्णविज्जति। इह जीवो अक्खो। कहं? उच्यते–"अशू व्याप्तौ" इति, णाणप्पणताए अत्थे असइ त्ति इच्चेवं जीवो अक्खो, णाणभावेण वावेति त्ति भणितं भवति। अहवा "अश भोजने" इच्चेतस्स वा सव्वत्थे असइ त्ति अक्खो, पालयति भुङ्क्ते चेत्यर्थः। अक्खं पति वट्टति त्ति पच्चक्खं, अणिंदियं ति वुत्तं भवति। चसद्दाओ य से अवधिमादिभेदा दट्ठव्वा। अक्खातो [जे० १९२ द्वि०] परेसु जं णाणं उप्पज्जति तं परोक्खं सभेदं चसद्दाओ इंदिय-मणोनिमित्तं दट्ठव्वमिति।

९. से किं तं पच्चक्खं? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–इंदियपच्चक्खं च णोइंदियपच्चक्खं च।

१०. से किं तं इंदियपच्चक्खं? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा–सोइंदियपच्चक्खं चक्खिदियपच्चक्खं घाणिंदियपच्चक्खं रसणेंदियपच्चक्खं फासिंदियपच्चक्खं। से त्तं इंदियपच्चक्खं।

९. से किं तं पच्चक्खं? पुच्छा। 'से' त्ति स पच्चक्खनाणभेदो। 'किं तं' ति परिपण्हे, कतिभेदं ति वुत्तं भवति। तं च किंसरूवं? ति आयरियो पभेदमुवण्णसितुं तस्सरूवकहणेण पच्चक्खसरूवं कहितुकामो आह—पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं ति।

१०. इंदियं ति–पुग्गलेहिं संठाणणिव्वत्तिरूवं दव्विंदियं, सोइंदियमादिइंदियाणं सव्वातप्पदेसेहिं स्वावरणक्खतोवसमातो जा लद्धी तं भाविंदियं, तस्स पच्चक्खं ति इंदियपच्चक्खं। तं पंचविहं। पर आह–णणु

१ घत्तव्वं मो० ॥ २ °ट्ठितित्त° आ० ॥ ३ °त्तत्तेण अविसिट्ठे वि सति सुते वि परो° आ० ॥ ४ °णतो सम्मत्ताइकाले° आ० ॥ ५ चेत्यर्थः आ० ॥ ६ परोक्खं, तं चेदं, चस° आ० ॥ ७ चक्खुंदिय° सं० ॥ ८ जिब्भिदिय मो० मु० ॥

दव्विंदियावत्थियपदेसमेत्तग्गहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवलद्धी खयोवसमनिरत्थता वा भवति । आयरिय आह—ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तहा दव्विंदियमेत्तपदेसविसयपडिबोधओ सव्वातप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफल्लया य भवति त्ति ण दोसो । भाविंदियोवयारपच्चक्खत्तणतो एतं पच्चक्खं, परमत्थओ पुण चिंतमाणं एतं परोक्खं । कम्हा ? जम्हा परा दव्विंदिया, भाविंदियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥

११. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं ? णोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा—ओहिणाणपच्चक्खं १ मणपज्जवणाणपच्चक्खं २ केवलणाणपच्चक्खं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं ? ओहिणाणपच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—भवपच्चतियं च खयोवसमियं च । दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा—देवाणं च णेरतियाणं च । दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा—मणुस्साणं च पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

११-१२. णोइंदियपच्चक्खं ति इंदियातिरित्तं । तं तिविहं ओहिमादी । अवहि त्ति—मज्जाया, सा य रूविदव्वेसु त्ति, "रूपिष्ववधेः" [तत्त्वा. अ. १ सू. २८] त्ति वयणातो, तेसु णाणं ओहिनाणं । 'भवपच्चइतो' त्ति भणिते भण्णति—णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कहं भवपच्चइतो भण्णति ? त्ति, उच्यते—सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवस्सं भवति त्ति, दिट्ठंतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भण्णति । खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पज्जति त्ति खयोवसममवेक्खति ॥ खयोवसमसरूवं च सुत्तेणेव [जं० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खायोवसमियं ? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जति । अहवा गुणपडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जति ।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि । सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवण्णिणो वा भवति । गुणमंतरेण जहा गगणब्भच्छादिते अहापवत्तितो छिद्देणं दिणकरकिरण व्व [illegible] खयोवसमे अवधिलंभो अधापवत्तितो विण्णेतो । गुणपडिवण्णिनो— गुणपडिवण्णस्स० इच्चादि । उत्तरगुणचरणगुणविसुज्झमाणमवेक्खातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति । तक्खयोवसमे य ओधी उप्पज्जति ॥

१४. तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति । अणुगमणसीलो अणुगामितो. [illegible] लोयणं व ॥

१ सूत्रमिदं प्रश्न-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते—से किं तं भवपच्चइयं ? २ दुण्हं, तं जहा—देवाण य णेरइयाण य । से किं तं खयोवसमियं ? २ दुण्हं, तं जहा—मणूसाण य पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य । [illegible] चूर्णिकृद्भिरत्र नेदं प्रश्नात्मकं सूत्रं सम्मतम् ॥ २ 'दुवे' ति [illegible] ३ [illegible] ।

१५. से किं तं आणुगामियं ओहिणाणं? आणुगामियं ओहिणाणं दुविहं पण्णत्तं, जहा–अंतगयं च मज्झगयं च ।

१५. अंतगयं ति। जहा जलंतं वणंतं पव्वतंतं, अविसिट्ठो अंतसद्दो। एवं ओरालियसरीरंते ठितं गतं ति एगट्ठं, च आतप्पदेसफड्डगावहि, एगदिसोवलंभाओ य अंतगतमोधिण्णाणं भणाति । अहवा सव्वातप्पदेसविसुद्धेसु वि रालियसरीरेगंतेण एगदिसिपासणगतं ति अंतगतं भणाति। अहवा फुडतरमत्थो भणाति–एगदिसावधिउवलद्ध-त्तातो सो अवधिपुरिसो अंतगतो त्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भणाति । मज्झगतं पुण ओरालियसरीरमज्झे ड्डगविसुद्धीतो सव्वातप्पदेसविसुद्धीतो वा सव्वदिसोवलंभत्तणतो मज्झगतो त्ति भणाति । अहवाऽवधिउवल-द्धखेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतो त्ति अतो वा मज्झगतो भणाति ॥

१६. से किं तं अंतगयं? अंतगयं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–पुरओ अंतगयं १ मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३ ।

१७. से किं तं पुरतो अंतगयं? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलिअं[2] वा अलायं[3] वा मणिं वा जोइं वा पदीवं वा पुरओ काउं पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा । से त्तं पुरओ अंतगयं ।

१८. से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा । से त्तं मग्गओ अंतगयं २ ।

१९. से किं तं पासओ अंतगयं? पासओ अंतगयं से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छेज्जा । से त्तं पासओ अंतगयं ३ । से त्तं अंतगयं ।

२०. से किं तं मज्झगयं? से जहानामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलायं वा मणिं वा जोइं वा पईवं वा मत्थए काउं[5] गच्छेज्जा । से त्तं मज्झगयं ।

१६–२०. उक्क त्ति–दीविया । चुडलि त्ति–तणपिंडी अग्गे पज्जलिता । अलातं ति–दारुयं जलंतं । मणि या जलंतं । जोइ त्ति–मल्लगादिठितं अगणिं जलंतं । पदीवो त्ति–दीवतो । 'पुरतो' त्ति अग्गतो 'पणोल्लणं' ति

१ सं० प्रतौ १६–१९ सूत्रेषु सर्वत्र अन्तगयं इति परसवर्णान्वितः पाठो दृश्यते ॥ २ १७-१९ सूत्रेषु चडुलिअं इति पाठ सं० प्रतौ वर्त्तते । जे० मो० ॥ ३ अत्र १७-१९ सूत्रेषु चडुलिअम्वा अलायम्वा पदीवम्वा मणिम्वा जोतिम्वा इतिरूपः पाठः सं० प्रतौ वर्त्तते । न स ४ १७-१९ सूत्रेषु अलायं वा पदीवं वा मणिं वा जोतिं वा पुरतो इति पाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु दृश्यते । अला चूर्णि-वृत्तिकृत्सम्मतः पाठः कुत्राप्यादर्शे उपलभ्यते तथापि व्याख्याकृन्मतानुसारेणास्माभिः परावृत्त्य मूले पाठ उद्धृतोऽस्ति । अला वा मणिं वा पदीवं वा जोतिं वा पुरओ इति मु० पाठस्तु नास्मत्समीपस्थेषु आदर्शेषु ईक्ष्यते ॥ ५ काउं समुव्वहमा समुव्वहमाणे गच्छिज्जा जे० मो० मु० ॥

"णुद प्रेरणे" हत्थगहितस्स दंडग्गहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । 'मग्गतो' त्ति पिट्ठतो 'अणुकड्ढणं' ति हत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा अणु-पच्छयो कड्ढणं ति । 'पासतो' त्ति दाहिणे वामे वा पासे सा(दो)पासय[जे० १९३ द्वि०]जमलट्ठितं । परिकड्ढियं ति—हत्थ-डंडगट्ठितं वा परि-पासतो ट्ठितस्स कड्ढणं परिकड्ढणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से त्तं आणुगामियं ओहिणाणं ।

२१. अंतगतस्स० इच्चादि। आयरियाऽऽह—पुरतो० इच्चादि। 'सव्वतो' त्ति सव्वासु वि दिसि-विदिसासु 'समंता' इति सव्वातप्पदेसेसु सव्वेसु वा विसुद्धफड्डगेसु। अहवा 'सव्वतो' त्तिसव्वासु दिसि-विदिसासु सव्वातप्पदेसफड्डगेसु य। 'से' इति निद्देसे अवधिपुरिसस्स, 'मंता' इति णाता। अहवा "समता" इति समं—दव्वादयो तुल्ला अत्ता इति—प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ, एवमेव अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ । से त्तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ।

२२. णो गच्छंतमणुगच्छति त्ति अणाणुगामियं, संकलापडिबद्धट्ठितपदीवो व, तस्स य [illegible]-वगमणाभावत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति—समंततो अंगणिमाणत्तणं, तस्स य जोइस्स समंततो दिसि-विदिसासु समंता परिघोलणं ति—पुणो पुणो इतो इतो परिसक्कणं ॥

२३. से किं तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं? वड्ढमाणयं ओहिणाणं पसत्थेसु अज्झ-

ाणट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स
वओ समंता ओही वड्ढइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्तं जहन्नं तु ॥ ४४ ॥

सव्वबहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तियं भरेज्जंसु ।
खेत्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥ ४५ ॥

अंगुलमावलियाणं भागमसंखेज्ज दोसु संखेज्जा ।
अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

हत्थम्मि मुहुत्तंतो दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहत्तं पक्खंतो पण्णवीसाओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जंबुद्दीवम्मि साहिओ मासो ।
वासं च मणुयलोए वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

संखेज्जम्मि उ काले दीव-समुद्दा वि होंति संखेज्जा ।
कालम्मि असंखेज्जे दीव-समुद्दा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वु खेत्तवुड्ढीए ।
वुड्ढीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरयं हवइ खेत्तं ।
अंगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणिओ असंखेज्जा ॥ ५१ ॥

से त्तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं ।

२३. वर्धनं वड्ढी, पुव्वावत्थातो उवरुवरि वड्ढमाणं ति, तं च उस्सण्णं चरणगुणविसुद्धिमपेक्खं, ततो पसत्थज्झवसाणट्ठाणा तेआदिपसत्थलेसाणुगता भवंति, पसत्थदव्वलेसाहि अणुरंजितं चित्तं पसत्थज्झवसाणो भण्णति, पसत्थज्झवसाणातो य चरणा-ऽऽतविसुद्धी, चरणा-ऽऽतविसुद्धीतो य चरणपच्चतलद्धीणं वड्ढी भवति ।

इमाओ य जहण्णुक्कोस-विमज्झिमोधिवड्ढिदंसणगाहाओ जहा पेढियाए ॥ ४४–५१ ॥

१ °सायहा° सं० ॥ २ वड्ढमाण° ल० ॥ ३ °वीसं तु ल० । °वीसंतो हे० ॥ ४ वि शु० । य मो० ॥ ५ °णाणयं सं० ॥ ६ °पसत्थगतो पसत्थ° आ० दा० ॥ ७ आवश्यकनिर्युक्तिपीठिकायां गाथाः ३०–३७ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं ? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायति । से त्तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि त्ति–ह्रस्समाणं, पुव्वावत्थातो अधोऽधो ह्रस्समाणं । तं च वड्ढमाणविपक्खतो भाणितव्वं । अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगासुभत्थचिंतणपरं चित्तं संकिलिट्ठं भण्णति ॥

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं ? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखे[८]ज्जतिभागं वा संखे[९]ज्जतिभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थिं वा वियत्थिपुहत्तं वा रयणिं वा रयणिपुहत्तं वा कुच्छिं वा कुच्छिपुहत्तं वा धणुयं वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसयपुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा [१०]→जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा← उक्कोसेण लोगं वा पासित्ता णं पडिवएज्जा । से त्तं पडिवाति ओहिणाणं ।

२५. उप्पण्णोहिनाणस्स पुणो पातो त्ति पडिवाती, नाशोऽभ्रंशः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेणं भण्णति । ते य इमे–असंखेयंगुलभागादिया । कुप्पभिति जाव णव त्ति अंगुलपुहत्तं भण्णति । दो हत्था कुच्छी । पडिवातिणो जाव उक्कोसो लोगमेत्ते एव ॥

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं ? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगास[१२]पदेसं पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से त्तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ १। खेत्तओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं अलोए लोयमेत्ताइं[1] खंडाइं जाणइ पासइ २। कालओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ[2] अतीतं च अणागतं च कालं जाणइ पासइ ३। भावओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेणं[3] वि अणंते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं[4] जाणइ पासइ ४।

२७. वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असंखेज्जविधमोधिण्णाणं, ओधिमादिगतिपज्जवसाणं वा चतुद्दसविध-वित्थरो, ते पडुच्च इमं चतुविहं समासतो भण्णति दव्वादि। दव्वओ ओधिण्णाणी जहण्णेणं तेयाभासंतरे अणंते दव्वे उवलभति, उक्कोसतो सव्वरूविदव्वाइं। जाणइ त्ति नाणं, तं च जं विसेसग्गाहगं तं णाणं, सागारमित्यर्थः। पासति त्ति दंसणं, तं च जं सामण्णग्गाहगं तं दंसणं, अणागारमित्यर्थः। खेत्त-कालतो य सुत्तसिद्धं। भावतो ओधिण्णाणी जहण्णेणं अणंते भावे उवलभति, उक्कोसतो वि अणंते, जहण्णपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं। उक्कोसपदे वि जे भावा ते सव्वभावाण अणंतभागे वट्टंति॥

२८. ओही[5] भवपच्चतिओ, गुणपच्चतिओ य वंण्णिओ[6] एसो।
तस्स[7] य बहू वियप्पा, दव्वे खेत्ते य काले यं[8]॥ ५२॥

सें[9] त्तं ओहिणाणं[10]।

२८. ओधी भव० गाधा। दव्वतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदव्वविसेसातो। खेत्ततो वि अंगुलअसं-खेयभागविकप्पादिया। कालतो वि आवलियअसंखेज्जभागादिया। भावतो वि वण्णपज्जवादिया॥ ५२॥

मणपज्जवनाणमिदाणिं। तस्स सरूवं वण्णितमादीए [पत्रम् १३]। इदाणिं सामी विसेसिज्जइ पुंच्छुत्तरेहिं[11]—

२९. [१] से किं तं मणपज्जवणाणं? मणपज्जवणाणे[12] णं भंते! किं मणुंस्साणं[13] उप्पंज्जइ[14] अमणुस्साणं? गोयमा! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं। [२] जइ मणुस्साणं किं सम्मुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! णो सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [३] जइ गब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कंम्मभूम-[15]

१ लोयप्पमाणमेत्ताइं खं० सं० विना॥ २ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ खं० सं०॥ ३ °सेणं पि अणंते खं०॥ ४ °भागो खं०। चूर्णिकृतां हरिभद्रपादानां चायमेव पाठः सम्मतः॥ ५ "ओही खेत्त परिमाणे०" इत्याद्यावश्यकनिर्युक्ति२७–२८-गाथायुगलोक्तानि चतुर्दश द्वाराण्यत्रावबोद्धव्यानि॥ ६ वण्णिओ दुव्विहो इति वृत्तिकृद्भ्यां निर्दिष्टः पाठभेदः॥ ७ तस्सेय सं०॥ ८ द्वापञ्चाशत्तमगाथानन्तरं सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु हरिभद्रसूरिपाद-मलयगिरिचरणव्याख्याता एका गाथाऽधिका उपलभ्यते—

णेरतिय-देव-तित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा होंति। पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति॥

९. सम्मत्तं ओहिं° सं०॥ १० °णाणपच्चक्खं मु०॥ ११ पुव्वसुत्तेहिं आ०॥ १२ °णाणं भंते! जे० मो०॥ १३ मणूसाणं सं०। एवमग्रेऽपि अस्मिन् सूत्रे (२९) सर्वत्र ज्ञेयम्॥ १४ उप्पज्जइ इति खं० सं० नास्ति॥ १५ कम्मभूमिअ° मो० मु०। एवमग्रेऽपि सर्वत्र अस्मिन् सूत्रे (२९) ज्ञेयम्॥

गब्भवक्कंतियमणुस्साणं अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [४] जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [५] जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [६] जइ पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो सम्मामिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [७] जइ सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [८] जइ संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्म-

१ जति [illegible] । जदि [illegible] ।

म्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं । [९] जइ अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं समुप्पज्जइ ।

२९. किं मणुस्सा० इत्यादि । सम्मुच्छिममणुस्सा गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव वंत-पित्तादिसु संभवंति । कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवदेसु पंचसु महाविदेहेसु य । हेमवतादिसु मिथुणा ते अकम्मभूमगा । तिण्णि जोयणसते लवणजलमोगाहित्ता चुल्लहिमवंतसिहरिपादपतिट्ठिता एगूरुगादि छप्पण्णं अंतरदीवगा । किं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं ? ति । पज्जत्ती णाम–सत्ती सामत्थं[1] । सा य पुग्गलदव्वोवचया उप्पज्जति । ताओ य छ पज्जत्तीतो–आहार-सरीर-इंदिय-आणापाणु-भासा-मणपज्जत्ती चेति । तत्थ एगिंदियाणं चउरो, विगलिंदियाणं पंच, अस्सण्णीणं संववहारतो पंच चेव, सण्णीणं च छ । तत्थ आहारपज्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपज्जत्ती । सत्तधातुतया परिणामणसत्ती सरीरपज्जत्ती । पंचण्हमिंदियाणं [जे० १९४ द्वि०] जोग्गा पोग्गला[2] चिणित्तु अणाभोगनिव्वत्तितविरियकरणेण तब्भावणयणसत्ती[3] इंदियपज्जत्ती । [उस्सास]पोग्गलजोग्गाणापाणूण गहण-णिसिरणसत्ती आणापाणुपज्जत्ती । वइजोग्गे पोग्गले घेत्तूण भासत्ताए परिणामेत्ता वइजोगत्ताए निसिरणसत्ती भासापज्जत्ती । मणजोग्गे पोग्गले घेत्तूणं मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोगत्ताए निसिरणसत्ती मणपज्जत्ती । एताओ पज्जत्तीओ पज्जत्तयणामकम्मोदएणं णिव्वत्तिज्जंति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया । अपज्जत्तयणामकम्मोदएणं अणिव्वत्तातो[4] जेसिं ते अपज्जत्तया । अप्पमत्तसंजता जिणकप्पिया परिहारविसुद्धिया अहालंदिया पडिमापडिवण्णगा य, एते सततोवयोगोवउत्तत्तणतो अप्पमत्ता । गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कण्हुइ अणुवयोगसंभवतातो । अहवा गच्छवासी णिग्गता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवंति परिणामवसओ । 'इड्ढिप्पत्तस्से'ति आमोसहिमादिअण्णतरइड्ढिपत्तस्स मणपज्जवनाणं उप्पज्जइ त्ति । अहवा 'ओहिनाणिणो मणपज्जवनाणं उप्पज्जति' त्ति अण्णे नियमं भणंति ॥

३०. तं[5] च दुविहं उप्पज्जइ[6], तं जहा–उज्जुमती य विउलमती[7] य ।

३०. रिजू मती उज्जुमई, सामण्णग्गाहिणि त्ति भणितं होति । एस मणोपज्जायविसेसो त्ति । ओसण्णं विसेसविमुहं उवलभति, णातीवबहुविसेसविसिट्ठं अत्थं उवलभइ त्ति भणितं होति, घडो णेण चिंतिओ त्ति जाणति । विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसग्गाहिणि त्ति भणितं भवति । मणोपज्जायविसेसे जाणति, दिट्ठंतो जहा–णेण घडो चिंतितो, तं च देस-कालादिअणेगपज्जायविसेसविसिट्ठं जाणति ॥ अहवा रिजु-विपुलमतीणं इमं दव्वादीहिं विसेससरूवं भण्णति—

---

१ सामत्थतो य आ० ॥ २ °ला चिचिणिसु अणा° आ० ॥ ३ तब्भावापायण° आ० दा० ॥ ४ अणिट्ठिता ता जेसिं आ० ॥ ५ तं च दुविहं उप्पज्जइ इति खं० सं० नास्ति ॥ ६ उप्पज्जइ इति शु० नास्ति ॥ ७ विमलमती तं ॥

३१. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती अब्भहियतराए जाणति पासति। खेत्तओ णं उज्जुमती अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लाइं खुड्डागपयराइं उड्ढं जाव जोतिसस्स उवरिमतले तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अड्ढाइज्जेहिं अंगुलेहिं अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं [11]खेत्तं जाणति पासति। कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

३२. मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपायडणं ।
माणुसखेत्तणिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ५३ ॥

से त्तं मणपज्जवणाणं।

---

१ दव्वओ ४। दव्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति [illegible] ॥ ३ [illegible] वितिमिरतराए जाणति जे० हे० मो० ल० । अब्भहियतराए [illegible] पाठभेदयोः प्रथमः सूत्रपाठभेदः श्रीमलयगिरिपादैः [illegible] मनःपर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावसरे [illegible] चूर्णि-हरिभद्रवृत्तिसम्मतस्तु सूत्रपाठः मु० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ४ [illegible] अहे जाव मु० । नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शेऽयं पाठः, नापि चूर्णिकृता [illegible] वर्तते । अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि भगवत्यां [illegible] नापि विशेषावश्यकादौ [illegible] मनःपर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे [illegible] हेट्ठिल्लेसु खुड्डागपयरेसु उड्ढं सं० सं० । [illegible] सं० हे० मु० ॥ ८ समुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु [illegible] मो० मु० । श्रीमद्भिरभयदेवाचार्यैर्भगवत्या[illegible] ९ [illegible] मो० मु० ॥ १० अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं [illegible] ॥ ११ खेत्तं [illegible] भगवत्यां श० ८ उ० २ [illegible] ॥ १३ अब्भहियतरागं विउलतरागं [illegible] ॥ १४ [illegible] अब्भहियतरागं विउलतरागं वितिमिरतरागं [illegible] भगवत्यां [illegible] विसुद्धतरागं [illegible]

३१–३२. सण्णिणा मणत्तेण मणिते मणोखंधे अणंते अणंतपदेसिए दव्वट्ठताए तग्गते य वण्णादिए मणपज्जवनाणेणं पच्चक्खं पेक्खमाणो जाणाति त्ति भणितं। मणितमत्थं पुण पच्चक्खं ण पेक्खति, जेण मणाले मुत्तममुत्तं वा, सो य छदुमत्थो तं अणुमाणतो [जे० १९५ प्र०] पेक्खति त्ति अतो पासणता भणिता। अ छदुमत्थस्स एगविहखयोवसमलंभे वि विविधोपयोगसंभवो भवति, जहेत्थेव रिजु-विपुलमतीणं उवयोगो, विसेस-सामण्णत्थेसु उवउज्जतो जाणति पासइ त्ति भणितं, ण दोसो। विपुलमती पुण दव्वट्ठताए वण्णादिए अधिगतरं जाणतीत्यर्थः। उवरिमहेट्ठिल्लाइं खुड्डागपतराइं ति इमस्स भावणत्थं इमं पण्णविज्जति–ति लोगस्स उड्ढाऽहअट्ठारसजोयणसइयस्स बहुमज्झे एत्थ असंखेयंगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अलोगेण संव सव्वखुड्डलतरा खुड्डागपतर त्ति भणिता, ते य सव्वतो रज्जुप्पमाणा। तेसिं जे बहुमज्झे दो खुड्डागपतरा तेसि बहुमज्झे जंबुद्दीवे रतणप्पभपुढविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स बहुमज्झे एत्थ अट्ठप्पदेसो रुयगो,–जत्तो दिसि-वि सिविभागो पवत्तो,–एतं तिरियलोगमज्झं। एतातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो उ तिरियं असंखेयंगुलभागअसंखेयंगुलभागवड्ढी, उवरिहुत्तो वि अंगुलअसंखेयभागारोहो चेव, एवं तिरियमुवरि अंगुलअसंखेयभागवड्ढीए ताव लोगवड्ढी णेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्झं, ततो पुणो तेणेव कमेणं संवट्टो कात उवरिलोगंतो रज्जुपमाणो। ततो य उड्ढलोगमज्झातो उवरिं हेट्ठा य कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव रज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर त्ति। तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो पि हेट्ठा अंगुलअसंखेयभागव तिरियं, अहोवगाहेण वि अंगुलस्सअसंखभागो चेव, एवं अहेलोगो वड्ढेतव्वो जाव अहेलोगंतो सत्त रज्जू सत्तरज्जूपयरेहिंतो उपरुपरिं कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर एवं खुड्डागपरूवणे कते इमं भण्णाति–उवरिमं ति–तिरियलोगमज्झातो [जे० १९५ द्वि०] अहो जाव णव जोय सता ताव इमीए रयणप्पभपुढवीए उवरिमखुड्डागपतर त्ति भण्णंति। तदहो अहेलोगे जाव अहेलोइयगामवत्ति ते हेट्ठिमखुड्डागप्पतर त्ति भण्णंति, रिजुमती अधो ताव पश्यतीत्यर्थः। अहवा अहेलोगस्स उवरिमा खुड्डागप्प तिरियलोगस्स य हेट्ठिमा खुड्डागप्पतरा ते जाव पश्यतीत्यर्थः।

अण्णे भणंति— उवरिम त्ति–अधोलोगोपरिट्ठिता जे ते उवरिमा। के य ते? उच्यते— सव्वतिरियल वत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो णवजोतणसतवत्तिणो ताण चेव जे हेट्ठिमा ते जाव पश्यतीत्यर्थः, इमं ण घड अहेलोइयगाममणपज्जवणाणसंभवपाहण्णत्तणतो। उक्तं च—

इहाधोलौकिका ग्रामा न तिर्यग्लोकवर्त्तिनः। मनोगतांस्त्वसौ भावान् वेत्ति तद्वर्त्तिनामपि ॥ १ ॥
[ ]

अड्ढातियंगुलग्गहणं उस्सेहंगुलमाणतो। कहं णज्जति? उच्यते— "उस्सेहपमाणतो मिणे देहं" [बृहत्संग्र गा. ३३५] ति वयणातो। अंगुलादिया य जे पमाणा ते सव्वे देहनिप्फण्णा इति, णाणविसयत्तणतो य ण....स रिजुमतिखेत्तोवलंभप्पमाणातो विपुलमती अब्भतियतरागं खेत्तं उवलभइ त्ति। एगदिसिं पि अब्भतियसंभवो भ त्ति समंततो जम्हा अब्भइयं ति तम्हा विपुलतरागं भणति। अहवा जहा घडो घडातो जलाहारत्तणतो अब्भति सो पुण नियमा घडागासखेत्तेण विउलतरो भवति एवं विउलमती अब्भतियतरागं मणोलद्धिजीवदव्वाधारं जाणाति, तं च नियमा विपुलतरं इत्यर्थः। अहवा आयाम-विक्खंभेणं अब्भइयतरागं बाहल्लेण विउलतरं

१ अंतेलोगोपरिट्ठितो जे जे० ॥ २ 'संभवबाहल्लत्तणतो आ० दा० हरिभद्रवृत्तौ च ॥ ३ ण दोसो। रिजु' मलयगिरिवृत्तौ च। ण दो सा० रिजु' आ० ॥ ४ आ० दा० आवृत्त्योः एतत्सूत्रचूर्णौ सर्वत्र अब्भतिय स्थाने अब्भहिय इति व

उपलभत इत्यर्थः। अहवा दो वि पदा एगट्ठा । विसिट्ठविसुद्धिविसेसदंसगो तरसद्दो त्ति, यथा शुक्लः शुक्लतर इति। किंच–जहा पगासगदव्वविसेसातो खेत्तविसुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणाव-रणखयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागं ति भण्णति । अहवा पुव्ववद्धमणपज्जवनाणावरणखयोवसमुत्तमलंभ-त्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्झमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स य अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागं–ति भण्णति । अहवा दो वि एते एगट्ठिया पदा । मणपज्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणि केवलनाणं भण्णति, मण-पज्जवनाणाणंतरं सुत्तकमुद्दिट्ठत्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च ।

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम् । केवलनाणमभेदे वि भेदो भव-सिद्धावत्थादिएहिं अणेगधा इमो कज्जति–मणुस्सभवट्ठितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं । चसद्दो उभयण्णं भेददंसणे । सव्वकम्मविप्पमुक्को सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलणाणं ? भवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–सजोगिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जं नाणं तं सजोगिभवत्थ-केवलणाणं । अजोगी–सव्वजोगनिरुद्धो सइलेसभावट्ठितो, तस्स जं णाणं तं अजोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ? सजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से त्तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३६. से किं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ? अजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से त्तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३५–३६. पढमसमयो–केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपढमो [illegible] इत्यर्थः । अहवा एतेवऽत्थो समयनिरूपेण अन्नहा दंसिज्जति–[illegible] परं अजोगी भविष्यतीत्यर्थः । अचरिमो त्ति–चरिमो न भवति, [illegible] पढमसमयो ताव अचरमसमया भण्णंति, एतेसु जं णाणं तं [illegible] ।

१ 'विसुद्धिविसेसो लब्भिज्ज' [illegible] २ [illegible]

३७. से तं किं सिद्धकेवलणाणं? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं केवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७. से किं तं सिद्धकेवलनाणेत्यादि सूत्रम् । तत्थ सिद्धकेवलणाणं दुविहं- णो समयंतरं पत्तं, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यर्थः ॥

३८. से किं तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ? अणंतरसिद्धकेवलणा तं जहा–तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित सिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा णपुंसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अण्णलिंगसिद्धा १२ गिहिलिं १४ अणेगसिद्धा १५ । से त्तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ।

३८. ते पंचदसविधा तित्थसिद्धाइया । 'तित्थसिद्धा' इति जे तित्थे सिद्धा चातुवण्णो समणसंघो पढमादिगणधरा वा, भणितं च आरिसे–"तित्थं भंते ! तित्थं ? [जे० गोतमा ! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चातुवण्णो समणसंघो" [भग. श. २ तित्थकालभावे उप्पण्णे ततो वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अति तित्थकालभावस्स वा अभावो। तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे सि अतित्थं तित्थंतरे तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा मरुदेविसामिणिप्पभितयो २ । रिसभादयो ति णामकम्मुदयभावे ट्ठिता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ । गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे ट्ठिता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा बुद्धा, सतं अप्पणिज्जं वा जाइसरणादि कारणं पडुच्च बुद्धा सतंबुद्धा । स्फुटतरमुच्यते– द्धास्ते स्वयंबुद्धा । ते य दुविहा–तित्थगरा तित्थगरवतिरित्ता वा । इह वइरित्तेहिं अ बारसविहो वि उवही भवति, पुव्वाधीतं से सुतं भवति वा ण वा । जति से नत्थि पडिवज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुव्वाधीतसुतसंभवो अत्थि तो से लिंगं देवता पडिवज्जति । जइ य एगविहारविहरणजोग्गो, इच्छा व से तो एको चेव विहरति, अ एतम्मि भावे ट्ठिता सिद्धा एतातो वा भावातो सिद्धा सयंबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' प भिसमीक्ष्य बुद्धाः प्रत्येकबुद्धाः । बहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धानां च पत्तेयं नियमा विधारो ज जहा करकंडुमादयो । किंच–पत्तेयबुद्धाणं जहण्णेण दुविहो उक्कोसेणं णवविधो उवही णि किंच–पत्तेयबुद्धाणं पुव्वाधीतं सुतं णियमा भवति, जहण्णेणं एक्कारसंगा, उक्कोसेणं भि देवता पयच्छति, लिंगवज्जितो वा भवति । जतो [जे० १९७ प्र०] भणितं–"रूप्पं पत्ते इति । एतम्मि भावे एतातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता–जे सतंबुद्धे पत्तेयबुद्धेहिं वा कविलादिएहिं बोधिता ते बुद्धबोधिता । अहवा बुद्धबोधिएहिं बोधित दिएहिं जंबुणामादयो भवंति । अहवा बुद्ध इति–प्रतिबुद्धा, तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबो

१ अप्पणा जे वा जाइ° आ० दा० ॥ २ णितमा मो० ॥ ३ एगविधारविधरणजोग्ग

एतभावे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७ । 'सलिंगसिद्धा' दव्वलिंगं पति रजोहरण-मुहपोत्ति-पडिग्गह-धारणं सलिंगं, एतम्मि दव्वलिंगे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा सलिंगसिद्धा ८ । 'अण्णलिंगसिद्धा' तावस-परिव्वायगादिवक्कल-कासायमादिदव्वलिंगट्ठिता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा ९ । एवं गिहिलिंगे वि–केसादिअलंकरणादिए दव्वलिंगे ट्ठिता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा १० । इत्थिलिंगं ति–इत्थीए लिंगं इत्थिलिंगं, इत्थीए उवलक्खणं ति वुत्तं भवति । तं तिविहं–वेदो सरीरनिव्वत्ती णेवच्छं च, इह सरीरनिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेद-णेवच्छेहिं । तत्थ वेदे कारणं–जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसूणपुव्वकोडीतो सिज्झति, णेवच्छस्स य अणियतत्तणतो, तम्हा ण तेहिं अहिकारो । सरीराकारणिव्वत्ती पुण णियमा वेदुदयातो णामकम्मुदयाओ य भवति तम्मि सरीरनिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा ११ । एवं पुरिस-णपुंसकलिंगा वि भाणितव्वा १२-१३ । एक्कसिद्ध त्ति–एक्कम्मि समए एक्को चेव सिद्धो १४ । अणेगसिद्ध त्ति–एक्कम्मि समए अणेगे सिद्धा, दुगादि जाव अट्ठसतं ति । भणितं च—

बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्ठुत्तरसतं च ॥१॥१५॥

[बृहत्सं. गा. ३३३]

चोदक आह–णणु एते पण्णरस भेदा छब्भेदट्ठिताअण्णोण्णनिरवेक्खा ण भवंति कहं पंचदसभेद त्ति पण्णत्ता ? आचार्य आह–णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि[जे० १०७ द्वि०]भागुप्पण्णा-ऽणुप्पण्णकालभेदतो या दो भेदा परोप्परविरुद्धा १, तहा तित्थगरणामकम्मुदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्परविरुद्धा २, तहा लिंगादिया दव्वलिंगपडिवत्तिभेदा परोप्परविरुद्धा ३, तहा मोहुत्तरपगडिवेदभेदोदयतो [illegible] परोप्परविरुद्धा ४, एगा-ऽणेगा वि एक्ककालसहचरिता-ऽचरितत्तणतो भिण्णा ५, सयंबुद्धादयो वि [illegible] बोधविसेसत्तणतो पतिविसिट्ठा ६, एवं तित्थादियाण [illegible] भेदा पण्णत्ता, किंच–जहा मतिणाणे ईहादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्ण[illegible] भेदो [illegible] दोसो ? किंच–णाणाणयाभिप्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगगम-पज्जायत्तणतो [illegible] ण दोसो ॥ इदाणिं तं चेव सिद्धकेवलणाणं समतभेदतो अण्णधा [illegible]—

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलणाणं ? परंपरसिद्ध[illegible] अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा–अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा [illegible] जाव [illegible]समयसिद्धा संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से तं परंपरसिद्ध[illegible] । से त्तं सिद्धकेवलणाणं ।

३९. पढमसमयसिद्धस्स जो बितियसमयसिद्धो सो पढो[illegible] भाणितव्वं । तं च 'अपढमसमय' इत्यादि । [illegible] परंपरसिद्धविसेसणस्स [illegible] पतो [illegible]

१ भेदा विसेई [illegible]
[illegible]
१ [illegible]

४०. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दंव्वओ खेत्तओ व तंत्थ दव्वओ णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तअ सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलणाणी सव्वं कालं भावओ णं केवलणाणी संव्वे भावे जाणइ पासइ।

४०. तं सव्वं पि चतुव्विहं दव्वादियं। 'सव्वदव्व' त्ति धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगासातयो अणंतगुणा, तेहिंतो वि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा, एते सव्वे सरूवतो जाणति। खेत्तं पि लं णंतं सरूवतो जाणति। कालं पि समया-ऽऽवलियादियं तीयमणागतसव्वद्धं वा सरूवतो स वि दुविधा भावा–जीवभावा अजीवभावा य। तत्थ जीवभावा कम्मुदयसतत्तपरिणामितल दिया कम्मुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसम[जे० १९८ प्र०]-खय-खयोवसमजीवसतत्तल पारिणामिता य जीव-भव्वा-ऽभव्वत्तादिया, अजीवाऽमुत्तदव्वेसु धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगासा गति- अगुरुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुम-बादर-विस्ससापरिणता अभिंदधणुमादिया मादीण य वण्णादिपज्जवा एगादिया अणंता। एते दव्वादिया सव्वे सव्वधा सव्वत्थ सव्वक ऽणागारलक्खणेहिं णाण-दंसणेहिं जाणति पासति य। एत्थ केवलणाण-दंसणोवयोगेहिं आयबुद्धीए पकप्पेंता इमं भणंति—

केयी भणंति जुगवं जाणइ पासति य केवली नियमा।
अण्णे एगंतरियं इच्छंति सुतोवदेसेणं॥ १॥

अण्णे ण चेव वीसुं दंसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स।
जं चिय केवलनाणं तं चिय से दंसणं बेंति॥ २॥ [विशेषण. गा.

तत्थ जे ते भणंति 'जुगवं जाणति पासति य' ते इमं उववत्तिं उवदिसंति—

जं केवलाइं सादी-अपज्जवसिताइं दो वि भणिताइं।
तो बेंति केइ जुगवं जाणति पासति य सव्वण्णू॥ ३॥

किंच—

इहराऽऽयी-णिहणत्तं मिच्छाऽऽवरणक्खयो त्ति व जिणस्स।
इतरेतरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं॥ ४॥

तह य असव्वण्णुत्तं असव्वदरिसित्तणप्पसंगो य।
एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता॥ ५॥ [विशेषण. गा. १

एवं परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह—

भण्णति, भिण्णमुहुत्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स।
मिच्छा छावट्ठी सागरोवमाइं खयोवसमो॥ ६॥ [विशेषण. गा. २

१ दव्वओ ४। दव्वओ ल०॥ २ तत्थ इति खं० सं० ल० शु० नास्ति॥ ३ °व्वाति जा°
खं०॥ ५ °णु-दुअणुगादीण आ० दा०॥

जहा छउमत्थस्स मति-सुता-ऽवधिणाणेसु अंतमुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-ऽणुवयोगेण य छावट्ठिसागरा से ठितिकालो दिट्ठो, तहा जति जिणस्स णाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-ऽणुवयोगेण भवंति तो को दोसो ? । जति एतं ते णाणुमतं तो इमं ते कहं अणुमतं भविस्सइ ?—

अह ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।
संते वि अंतरायक्खयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥
सततं ण देइ [जे०१९८ द्वि०] लभइ व भुंजइ उवभुंजई य सव्वण्णू ।
कज्जम्मि देइ लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दिंतस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो ।
खीणंतराइयत्ते जं से विग्घं ण संभवति ॥ ९ ॥
उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।
खीणावरणगुणोऽयं, जं कसिणं मुणइ पासति वा ॥ १० ॥ [विसेसा. गा. ३०३-६]

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पासती जति जिणिंदो ।
एवं ण कदाइ वि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ ११ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि हु चउहिं वि णाणेहिं जह चउण्णाणी ।
भण्णइ, तहेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽऽह—

तुल्ले उभयावरणक्खयम्मि [illegible] ।
दुविधुवयोगाभावे जिणस्स कुणह ? त्ति चोदेति ॥ १३ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस नियमो जुगवुप्पण्णेहिं [illegible] ।
होयव्वं उवओगेण, एत्थ सुणा [illegible] ॥ १४ ॥
जह जुगवुप्पत्तीय वि सुते सम्मत्त-मति-सुतादीणं ।
णत्थि जुगवोपयोगो सव्वेसु [illegible] ॥ १५ ॥

किंच—

भणितं पि य [illegible] जह [illegible] ।
जं जाणती ण पासति तं अणुत्तणप्पत्तकालेति [illegible] १६ [illegible]

१ इदं सगुणसंधी [illegible] ।

जे भणंति केवलणाण-दंसणाण एगत्तं ते इमं हेतुजुत्तिं भणंति —

जइ किर खीणावरणे देसन्नाणाण संभवो ण जिणे ।
उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्सावि ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुत्ती जहा अत्थसाधणं ण संसहइ तहा उत्तर(रं) हेतुजुत्तीए चेव भण्णति —

देसण्णाणोवरमे जइ केवलनाणसंभवो भणितो ।
देसदंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥ १८ ॥

अह देसनाण-दंसणविगमे तव केवलं मतं नाणं ।
ण मतं केवलदंसणमिच्छामेत्तं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [विशेषण. गा.

किंच—

भण्णति जहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते ।
ण य णाम ओहिदंसण-नाणेगत्तं तह इमं पि ॥ २० ॥ [विशेषण.

एवं पराभिप्पाये पडिसिद्धे एगंतरोवयोगता सिद्धा तह विमं भण्णति —

जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से ।
जाणइ य जेण अरहा तं से णाणं ति घेत्तव्वं ॥ २१ ॥ [विशेषण.

किंच–सिद्धऽधिकारे एगंतरो[जे० १९९ प्र०]वयोगदंसिगा इमा फुडा गाहा —

नाणम्मि दंसणम्मि य एत्तो एगतरयम्मि उवउत्ता ।
सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [विशेषण

किंच भगवतीए—

उवयोगो एगतरो पणुवीसतिमे सते सिणायस्स ।
भणितो वियडत्थो चिय छट्ठुद्देसे विसेसेतुं ॥ २३ ॥ [विशेषण.

किंच—

कस्स व णाणुमतमिणं जिणस्स जति होज्ज दो वि उवयोगा ।
णूणं ण होंति जुगवं जतो णिसिद्धा सुते बहुसो ॥ २४ ॥ [विशेष

४१. अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं ।
सासयमप्पडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥
केवलणाणेणऽत्थे णाउं जे तत्थ पण्णवणजोग्गे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग तयं हवइ सेसं ॥ ५५ ॥
से त्तं केवलणाणं । से[2] त्तं पच्चक्खणाणं ।

१ वइजोग सुयं हवइ तेसिं इत्ययं पाठः वृत्तिकृद्भ्यां पाठान्तरत्वेन निर्दिष्टोऽस्ति । तथाहि–"अ... सुय हवइ तेसिं' स वाग्योगः श्रुतं भवति 'तेषां' श्रोतॄणाम् ।" इति हारि० वृत्तौ । "अन्ये त्वेवं पठन्ति- ... तत्रायमर्थः–'तेषां' श्रोतॄणां भावश्रुतकारणत्वात् स वाग्योगः श्रुतं भवति, श्रुतमिति व्यवह्रियते इत्यर्थः ।" इति ... वृ० ॥ २ अत्र चूर्णि-वृत्तिकृद्भ्यां से त्तं पच्चक्खं इत्येव पाठः सम्मतः । नोपलब्धोऽयं कस्यांचिदपि प्रतौ ॥

४१. अह सव्वदव्व० गाहा । केवलनाणेण० गाहा । एताओ जहा पेढियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं कंठं ॥ इदाणिं कमागतं बहुवत्तव्वं पारोक्खं भण्णति—

४२. से किं तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आभिणिबोहियणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४२. अक्खस्स इंदिय-मणा परा, तेसु जं णाणं तं परोक्खं । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, अनुमानवत् । णणु सुत्ते इंदियपच्चक्खं भणितं ? उच्यते—सच्चमिणं, एत्थं जं इंदिय-मणेहिं बहिर्लिंगपच्चयमुप्पज्जति तमेगंतेणेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धूमाओ अग्गिणाणं व । जं पुण सक्खा इंदिय-मणोनिमित्तं तं तेसिं चेव पच्चक्खं, अलिंगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं । इंदियाणं पि तं संववहारतो पच्चक्खं, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा दव्विंदिया अचेतणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुतनाणं च । इह मति-सुताणसुत्तण्णासक्कमे कारणं पुव्वुत्तं वत्तव्वं ॥ मति-सुताण य अभेदत्तामिमित्तलक्खणत्थं इमं सुत्तं—

४३. जत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्थाऽऽभिणिबोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्थाऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेंति—अभिणिबुज्झइ त्ति आभिणिबोहियं, सुणेतीति सुतं ।

“ मतिपुव्वयं सुयं, ण मती सुयपुव्विया । ”

णंगाइभेदभिण्णं अणेगहा। अहवा मति-सुताणं इंदियोवलद्धिविभागतो भेदो इमो—सोतिं
[विशेषा. गा. १२२] पूर्ववद् व्याख्येया। अहवा मति-सुतभेदं भणंति—वुद्धीदिट्ठे० गाहा। [
एतीए गाहाए अत्थो मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्सगे तहा भाणितव्वो। अण्णे वागसमं
सुतणाणं भणंति तं च ण घडति, जम्हा वाग-सुंबदिट्ठंतेणं मइनाणस्सेव सुतं परिणामो दंसि
जुज्जते इत्यर्थः। अहवऽण्णो मतिसुतभेदो—अक्खराणुगतं सुतं, अणक्खरं मतिनाणं ति।
मतिणाणं, स्व-परप्रत्यायकं सुतनाणं। अहवा मति-सुताण आवरणभेदातो [जे० २०० प्र०] भे
वसमविसेसातो चेव मति-सुताण भेदो भवति॥ भणितो मति-सुतविसेसो। इदाणिं जहा मति
कारणभेदेहि भेदो दिट्ठो तहा मतीए सुतस्स य सम्म-मिच्छविसेसो दंसणपरिग्गहातो भवइ त्ति अ

४४. अविसेसिया मती मतिणाणं च मतिअण्णाणं च। विसेसिया मत
मती मतिणाणं, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। अविसेसियं सुयं सु
अण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सु

४४. अविसेसिता मतीत्यादि। सामिणा अविसेसिता मती इमं वत्तव्वा—आ
चसद्दो समुच्चये। विसेसिता मतीत्यादि। जता पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति
सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि सूत्रसिद्धं। अविसेसितं सुतमित्यादि एतं पि उवउज्जिउं एवं चेव व
विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा। सच्चेव मती णाण-ऽण्णाणसद्दविसेसण
आभिनिवोधिकेत्यादि सूत्रसिद्धं। णाण-ऽण्णाणसद्दविसेसणं कहं? भण्णति—सम्मत्त-मिच्छसामिगु
स्स मतीत्यादि सुत्तसिद्धं। सुते वि एवं चेव वत्तव्वं। पर आह—तुल्लखयोवसमत्तणतो घडाइ
च्छेदत्तणतो सद्दादिविसयाण य समुवलंभातो कहं मिच्छद्दिट्ठिस्स मति-सुता अण्णाणं ति भणित
सदसदविसेसणातो भवहेतु जतिच्छितोवलंभातो। नाणफलाभावातो मिच्छद्दिट्ठिस्स अण्णा
मतिपुव्वं सुतं ति कातुं मतिणाणं चेव पुव्वं भणामि—

४५. से किं तं आभिणिवोहियणाणं? आभिणिवोहियणाणं दुविहं प
सुयणिस्सियं च असुयणिस्सियं च।

४५. से किं तं आभिनिवोधिकेत्यादि सुत्तं। तत्थ 'सुतनिस्सितं' ति सुतं ति—सुत्तं
विंदुसारपज्जवसाणं। एतं दव्वसुतं गहितं। तं अणुसरतो जं मतिणाणमुप्पज्जति तं सुतणिस्साए
वा णिसृतं तं सुतणिस्सितं भण्णति। तं च उग्गहेहा-ऽवाय-धारणाठितं चतुब्भेदं। 'अस्सुतनिस्सि
दव्व-भावसुतणिरवेक्खं आभिणिवोधिकमुप्पज्जति तं असुयभावातो समुप्पण्णं ति असुतनिस्सि
उप्पत्तियादिबुद्धिचउक्कं॥ इमं—

१ जम्हा जे० दा०॥ २ °विसेसदंसण° आ० दा०॥ ३ अयं मूले स्थापितः सूत्रपाठः सं० मो० f
१५५ पत्रे नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे उपलभ्यते। श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्ववृत्तावयमेव सूत्रपाठो व्याख्यातोऽस्ति। विसे
मती मतिणाणं, मिच्छादिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअ
सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं। जे० डे० ल० शु०। अयमेव स
गिरिणा स्वीकृतो व्याख्यातश्चाप्यस्ति। विसेसिया मती सम्मद्दिट्ठिस्स मतिणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स मतिअ
सुयं सुयणाणं सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयणाणं, मच्छद्दिट्ठिस्स सुयअण

४६. से किं तं असुयणिस्सियं ? असुयणिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—

उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ ५६ ॥

पुव्वं अदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उप्पत्तिया णाम ॥ ५७ ॥

भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।
गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२
खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥

भरह सिल १ मिंढ २ कुक्कुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणसंडे ७ ।
पायस ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥

महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २० य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।
सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।
उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ य ।
गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९ अगए १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥

सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १२ ।
निव्वोदए १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥

हेरण्णिए १ करिसए २ कोलिय ३ डोवे ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।
तुण्णाग ८ वड्ढती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

अणुमाण-हेउ-दिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा ।
हिय-णीसेसफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥
अभए १ सेट्ठि २ कुमारे ३ देवी (? वे) ४ उदिओदए हवति
साहू य णंदिसेणे ६ धणदत्ते ७ साव(? वि)ग ८ अमच्चे ९ ॥
खमए १० अमच्चपुत्ते ११ चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य ।
णासिक्कसुंदरीनंदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥
चलणाहण १६ आमंडे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभि
परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।

से त्तं असुयनिस्सियं ।

४६. पुव्वं० गाहा । [भरहसिल० गाहा] । भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५ उप्पत्तिया गता १ । इमा वेणतिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[मुत्था गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरण्णि० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणा अणु० गाहा । अभए० गाहा । खमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सव्वाओ जहा णमो ९३८-५१) तहा दट्ठव्वाओ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४ । इदाणिं सुतणिस्सितं उग्गहाइयं

४७. से किं तं सुयणिस्सियं मतिणाणं ? सुयणिस्सियं मतिणाणं च तं जहा—उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७. इह सामण्णस्स रूवादिअत्थस्स य विसेसनिरवेक्खस्स अणिद्देसस्स अवग्रहणमवग्र विचारणविसेसण्णेसणमीहा । तस्स विसेसणविसिट्ठस्सऽत्थस्स व्यवसातोऽवायः, तव्विसेसाव सेसावगतऽत्थस्स धरणं—अविच्चुती धारणा इत्यर्थः ॥ तत्थ—

४८. से किं तं उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य

४८. ओग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वंजणओग्गहो य ॥ एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छ ग्गहातो या पुव्वं वंजणओग्गहो भवइ' त्ति वंजणोग्गहमेव पुव्वं भणामि—

१ °विवक्कपरि° खं० सं० टे० ल० शु० ॥ २ °णिस्सेस° शु० मो० मु० ॥ ३ खवगे मो० ॥ ४
५ रूवादिअसेसविसेसनिर° आ० दा० । श्रीमलयगिरिपादैस्तु आवश्यकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ चायं चूर्णि "यदाह चूर्णिकृत्—"सामन्नस्स रूवादिविसेसणरहियस्स अनिद्देसस्स अवग्गहणमवग्गह' इति ।" [आव० टी पत्र १६८-१] ॥ ६ °णविसेसेणेहणमीहा आ० दा० ॥ ७ °स्स अवसातो आ० दा० ॥ तव्विसेसावगमस्स धरणं आ० दा० ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे? वंजणोग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियवंजणोग्गहे १ घाणिंदियवंजणोग्गहे २ जिब्भिंदियवंजणोग्गहे ३ फासिंदियवंजणोग्गहे ४। से त्तं वंजणोग्गहे ।

४९. वंजणाणं अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सद्दाइपरिणता दव्वा घेत्तव्वा। वंजणे अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दव्विंदियं घेत्तव्वं। एतंमि दोण्ह वि समासाणं इमो अत्थो—जेण करणभूतेण अत्थो वंजिज्जइ तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो। एवं सद्दादिपरिणतेहिं दव्वेहिं उवकरणिंदियपत्तेहिं चित्तेहिं संबद्धेहिं संपत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जइ त्ति तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भण्णति। एस वंजणावग्गहो सुत्तसिद्धो चउव्विहो॥

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे? अत्थोग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थोग्गहे १ चक्खिंदियअत्थोग्गहे २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भिंदियअत्थोग्गहे ४ फासिंदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६। [२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—ओगेण्हणया १ उवधारणया २ सवणता ३ अवलंबणता ४ मेहा ५। से त्तं उग्गहे ।

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सुत्तं । अत्थस्स ओग्गहो अत्थोग्गहो । सो य वंजणावग्गहातो चरिमसमयाणंतरं एक्कसमयं अविसिट्ठिंदियविसयं गेण्हतो अत्थावग्गहो भवति । [illegible] पढमं चेव जं अविसिट्ठमत्थग्गहणं कालतो एगसमयं सो अत्थोग्गहो [illegible] । [illegible] दंसिज्जति, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सद्दादिविकप्पबुद्धी अत्थि । [illegible] य । तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मुदयातो जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं [illegible] । जीवो पुण मणणपरिणामकिरियावण्णो भावमणो । [illegible] भण्णति । तस्स जो उवकरणिंदियदुवारेतरवेक्खो [illegible] णोइंदियअत्थावग्गहो भवति ।

भणाति ४। उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव सेसा धावइ ताव सेसा भण्णइ ५। जत्थ वंजणावग्गहो तत्थ सवणादिया तिण्णि एगट्ठिता भवंति। आह—णणु भिण्णत्थदंसणे एगट्ठित त्ति विरुद्धं? उच्यते, ण जतो सव्वविकप्पेसु उग्गहस्सेव सरूवं दंसिज्जति ॥ इदाणिं उग्गहसमणंतरं ईहा—

५१. [१] से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोतेंदियईहा १ चक्खिंदियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिब्भिंदियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइंदियईहा ६।

[२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमंसा ५। से त्तं ईहा।

९१. [१] सा छव्विहा सुत्तसिद्धा।

[२] इमे तस्सेगट्ठिया, ते वि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणातो पुण भिण्णत्था। विधिणा—आभोयणता इत्यादि। ओग्गहसमयाणंतरं सब्भूतविसेसत्थाभिमुहमालोयणं आभोयणता भणाति १। तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय-वइरेगधम्मसमालोयणं मग्गणा भणाति २। तस्सेवऽत्थस्स वइरेगधम्म परिच्चाओ अण्णयधम्मसमालोयणं च गवेसणता भणाति ३। तस्सेव तद्धम्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणं चिंता भणाति ४। तमेवत्थं णिच्चा-ऽणिच्चादिएहिं दव्व-भावेहिं विमरिसतो वीमंसा भणाति ५। एवं व अत्थमालोयंतस्स उक्कोसतो अंतमुहुत्तकालं सव्वा ईहा भवति ॥ ईहाणंतरं अवातो—

५२. [१] से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियावाए १ चक्खिंदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिब्भिंदियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइंदियावा

[२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णाणे ५। से त्तं अवाए।

९२. [१] सो छव्विहो सुत्तसिद्धो।

[२] तस्सेगट्ठिता इमे पंच, ते य अवायसामण्णत्तणतो णियमा एगट्ठिता चेव, अभिधाणभिण्णत्तणतो भिण्णत्था। [जे० २०१ द्वि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि। ईहणभावनियत्तस्स अत्थसरूवपडि बुद्धस्स य परिच्छेदमुप्पादंतस्स आउट्टणता भणाति १। ईहणभावनियट्टस्स वि तमत्थमालोयंतस्स पुणो णियट्टणं पच्चाउट्टणं भणाति २। सव्वहा ईहाए अवणयणं कातुं अवधारणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो भण्णइ ३। पुणो पुणो तमत्थावधारणावधारितं बुज्झतो बुद्धी भवइ ४। तम्मि चेवावधारितमत्थे विसेसे पेक्ख अवधारयतो य विण्णाणे त्ति भणाति ५ ॥ अवायाणंतरं धारणा—

१ °त्थत्ताओ एग° आ० ॥ २ °विधिक° जे० ॥ ३ चक्खुंदि° सं० ॥ ४ °धेज्जा मो० मु० ॥ ५ °एहिं दंदभ जे०। "विमर्षणं विमर्षः, क्षयोपशमविशेषादेवोर्ध्वं स्पष्टतरावबोधतः सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मालोचनं नित्या-ऽनित्यादिद्रव्य-भावालोचनमित्यन्ये।" इति हारि० वृत्तौ। 'तत ऊर्ध्वं क्षयोपशमविशेषात् स्पष्टतरं सद्भूतार्थविशेषाभि व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्मापरित्यागतोऽन्वयधर्मविमर्शनं विमर्शः" इति मलयगिरिवृत्तौ ॥ ६ °यअवाए जे० ॥ ७ चक्खुं सं० ॥ ८-९-१०-११-१२ °यअवाए जे० ॥ १३ °धिज्जा मो० मु० ॥ १४ आवट्टणया पच्चावट्टणया सं० शु० हारि० म वृत्त्योश्च। आउंटणया पच्चाउंटणया सं० ल० ॥ १५ विण्णाणं सं० सं० ॥

५३. [१] से किं तं धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १ चक्खिदियधारणा २ घाणिंदियधारणा ३ जिब्भिंदियधारणा ४ फासेंदियधारणा ५ णोइंदियधारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्ठे ५ । से त्तं धारणा ।

५३. [१] सा य छव्विहा सुत्तसिद्धा ।

[२] तस्सेगट्ठिता पंच । ते य सामण्णधारणं पडुच्च णियमा एगट्ठिया, धारणात्थविकप्पणताए भिन्नत्था । इमेण विधिणा—धरणा इच्चादि । अवायाणंतरं तमत्थं अविच्चुतीए जहण्णुक्कोसेणं अंतमुहुत्तं धरेंतस्स धरणा भण्णति १ । तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विच्चुतं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेसु संभरतो य धारणा भण्णति २ । 'ठवण' त्ति ठावणा, सा य अवायावधारितमत्थं पुव्वावरमालोइयं हितयम्मि ठावयंतस्स ठवणा भण्णति, पूर्णघटस्थापनावत् ३ । 'पतिट्ठ' त्ति सो च्चिय अवधारितत्थो हितयम्मि पभेदेन पइट्ठावयतो पतिट्ठा भण्णति, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत् ४ । 'कोट्ठे' त्ति जहा कोट्ठगे सालिमादिबीया पक्खित्ता अविणट्ठा धारिज्जंति तहा अवायावधारितमत्थं गुरूवदिट्ठं सुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारयतो धारणा कोट्ठगसमं ति काउं कोट्ठे त्ति भण्णति ५ ॥

५४. इच्चेतस्स अट्ठावीसतिविहस्स आभिणिबोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य ।

५४. इच्चेतस्सेच्चादि सुत्तं । 'इति' उपप्रदर्शने । [illegible] । ते य के [illegible] भेदा ? उच्यते—चउव्विहो वंजणोग्गहो, छव्विहो [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]णा, एते सव्वे अट्ठावीसं । एत्थ अट्ठावीसतिविहस्स [illegible] [illegible]णा ॥

५५. से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ? प[illegible] से [illegible] केइ पुरिसे [illegible] चि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा 'अमुगा ! अमुग ! ' [illegible] एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? [illegible] दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? [illegible] संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? [illegible] [illegible]—णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति [illegible]

गच्छंति, जाव णो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो संखेज्जसमयपवि पोग्गला गहणमागच्छंति, असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति । से त्तं प बोहगदिट्ठंतेणं ।

५५. से जहाणामयेत्यादि । 'से' त्ति पडिबोधकस्स णिद्देसे । 'जहाणामये' त्ति जहाणा[२०२ प्र०]म, संभवतः आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः । सव्वण्णुप्पणीयमत्थं तदणुसारि सुत्तं वा अप्पबुद्धिविण्ण त्तणयो अणवगच्छमाणो सीसो पुच्छाचोदणातो चोदको, अहवा तमेव सुत्तमत्थं वा 'अघडमाणं' ति मण्णम तद्दोसचोदयो य चोदगो भण्णति । पवयणमविरुद्धं निद्दोसं सुत्तत्थं पण्णवेंतो पण्णवगो, विरुद्ध-पुणरुत्तसुत्तं अत्थतो अविरुद्धं दरिसेंतो पण्णवेति जो सो वा पण्णवगो भण्णति, यथावत् संशयच्छेदीत्यर्थः । चोदको सं मावण्णो पण्णवगं पुच्छति—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कंठं । एवं चोदकं पुच्छाभिप्पायेण वदंतं प वगाऽऽह-'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि । जो एस पडिसेहो कतो एस सद्दाइफुडविण्णाणजणगत्तेणं ति गहणमागच्छंति, इहरा पोग्गला गहणमागच्छंत्येवेत्यर्थः । एवं एगादिसमयपविट्ठपोग्गलपडिसिद्धेसु इमा अणुण 'असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति' त्ति । इमस्स अणणुयोगत्थो अणुयोगत्थो य । तत्थ अ योगो इमो—जहा पवासी सगिहमेंतो अद्धाणं पंचाहेण दसाहेण वा वीतीवतित्ता सगिहं पविट्ठो त्ति, एवं अर ज्जेहिं समयेहिं आगता पविट्ठा कण्णविलेसु पोग्गला गेण्हति त्ति, एवं अणणुयोगो भवति । इमो अणुयोगत पढमसमयादारब्भ पतिसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गेहणमागच्छंति, ते य सद्दावि ण्णाणजणग त्ति कातुं, अतो तेसिं गहणमुवदिट्ठं । सो य असंखेज्जइसमयो किंपमाणे असंखेज्जए भव उच्यते—जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जइभागमेत्तेसु समयेसुं गतेसुं ति, उक्कोसेणं [जे० २०२ द्वि०] संखेज आवलियासु आणापाणुकालपुहत्ते वा, उभयधा वि अविरुद्धं ॥ गतो पडिवोधकदिट्ठंतो । इदाणिं आवागदिट्ठंतो—

५६. [१] से किं तं मल्लगदिट्ठंतेणं ? मल्लगदिट्ठंतेणं[3] से जहाणामए केइ[4] पुरिसे आव सीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे[5] पक्खित्ते से वि प एवं पक्खिप्पमाणेसु[6] पक्खिप्पमाणेसु होही[7] से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं [8]रावेहिति, हो से उदगबिंदू जे णं तंसि [10]मल्लगंसि ठाहिति, होही[11] से उदगबिंदू जे[12] णं तं मल्लगं हिति, होही से उदगबिंदू जे[14] णं तं मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव[15][16] पक्खिप्पमाणेहिं प प्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरितं होति ताहे 'हुं'[17] ति करेति णो[18]

१ गहत्थमा° जे० ॥ २ 'आवागदिट्ठंतो' इति मल्लकदृष्टान्तस्य नामान्तरम् ॥ ३ °तेणं जहा को दिट्ठंतो ? से सं० ॥ ४ केयि शु० ॥ ५ अण्णे वि प° सं० विना ॥ ६ °माणे पक्खिप्पमाणे होही डे० ॥ ७-९-११ होहिति सं० होहिइ ल० डे० ॥ ८ रावेहिइ सं० ल० शु० । रवेहिइ जे० ॥ १० मल्लगे सं० सं० ॥ १२-१४ जो णं सं० । हारिवृत्तौ ॥ १३ भरेहिति इत्यनन्तरं विशेषावश्यकमहाभाष्यमलधारीयटीकायां १४८ पत्रे नन्दीपाठोद्धरणे होही से उदगबिंदू तंसि मल्लगंसि न ठाहिहिति इत्यधिकं 'न ठाहिहिति' सूत्रमुपलभ्यते, नोपलभ्यते इदं सूत्रं सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु ॥ १५ एवमेव सं० । शु० ॥ १६ °मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्ग° ल० विआमलवृत्तौ १४८ पत्रे नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे । °मेव पक्खिप्पम पोग्ग° सं० । °मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग° सं० ॥ १७ 'हों' ति सं० ॥ १८ ण उण जा° सं०

णं जाणति के वेस सद्दाइ ?, तओ ईहं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस सद्दाइ ?. तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहाणामए केई पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणेज्जा तेणं सद्दे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दे त्ति, तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सद्दे, ततो णं अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । ≻एवं अव्वत्तं रूवं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा≺ ।

[३] से जहाणामए केई[२] पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पडिसंवेदेज्जा, तेणं सुमिणे त्ति उग्गहिए ण पुण जाणति के[१५] वेस सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ।

५६.[१] तत्थ आवागसीसगं ति [आ]वागट्ठाणमेव, अहवा आपागट्ठाणस्स आसण्णं समंता परिपेरंतं, अहवा आपागमुत्तारियाण जं ठाणं तं आपागसीसयं भण्णति। 'अणंतेहिं' ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अणंता प्रविशंतीत्यतो अणंता। 'जाहे तं वंजणं पूरितं भवति' त्ति, एत्थ वंजणग्गहणेण सद्दाइपुग्गलदव्वा दव्विंदियं वा उभयसंबंधो वा घेतव्वं, तिधा वि ण विरोधो। वंजणं पूरियं ति कहं? उच्यते–जदा पुग्गलदव्वा वंजणं तदा पूरियं ति पभूता ते पोग्गलदव्वा जाता, स्वं प्रमाणमागता सविसयपडिबोधसमत्था जाता इत्यर्थः १। जदा पुण[1] दव्विंदियं वंजणं तदा पूरियं ति कहं? उच्यते–जाहे तेहिं पोग्गलेहिं तं दव्विंदियं आपूतं[2] भरितं वावितं तदा पूरियं ति भण्णति २। जदा तु उभयसंबंधो वंजणं तया पूरियं ति कहं? उच्यते–दव्विंदियस्स पुग्गला अंगीभावमागता, पुग्गला य दव्विंदिए अनुपक्ता[3]ः, एस उभयभावो, एतम्मि उभयभावे पुग्गलेहिं इंदियं पूरितं, इंदिएण वि सविसयपडिबोधकप्पमाणा पुग्गला गहिता, एवं उभयसामत्थतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थः ३। 'हुं ति करेइ' त्ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेण्हइ त्ति वुत्तं भवति। एस एकसमयिओ अत्थावग्गहो। तं पुण किंपगारं[4] गेण्हति? उच्यते–'नो चेव णं जाणति के वि एस सद्दादी' तक्काले सामण्णमणिद्देसं, सद्दादिविसेसं ण जाणइ त्ति वुत्तं भवति। किंच—सरूव-णाम-जाति[5]-गुण-किरिया-विकप्पविमुहं अनाख्येयं गृह्णातीत्यर्थः। एत्थ पडिबोधकालातो [जे० २०३ प्र०] पुव्वं वंजणोग्गहो से भवति। एसा एवं वंजणोग्गहस्स परूवणा कता। वंजणोग्गहस्स परतो 'हुं ति करेति' त्ति एतम्मि पडिबोधकाले एगसमइयो अत्थावग्गहो से भवति, ततो से कमेण ईहा-ऽवाय-धारणाओ त्ति। एत्थ पडिबोह-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणोग्गहस्स अत्थोग्गहस्स य भिण्णकालता फुडं दंसिता। पर आह–साधु मे पडिबोध-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, जागरओ पुण सद्दाइअत्थे पडुप्पण्णे ण वंजणोग्गहो लक्खिज्जति, जतो पुव्वामेव सद्दाइअत्थविण्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुत्ते 'से जहाणामये केयि पुरिसे' त्यादि। अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो संबंधो–पर आह–यदुक्तं भवता सरूव-णाम-जाति-गुण-क्रियाविकल्पविमुखं अनाख्येयं गृह्णातीत्येतद् विरुध्यते, कुतः? यतः सूत्रेऽभिहितं–से जहाणामतेत्यादि। अहवा इमो संबंधो–प्रसुप्तप्रतिबोधक-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठंतेणेव वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसिज्जति–

[२] 'से जहाणामते' त्यादि। सुत्तुच्चारणसवणाणंतरमेव पर आह–एत्थ सुत्ते वंजण-ऽत्थावग्गहेहा ण लक्खिज्जंति, जतो 'अव्वत्तं सद्दं सुणेइ' त्ति भणितं, सद्दमेत्तेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति त्ति। आयरियं आह–ण तुमं सुत्ताभिप्पायं जाणसि, णणु अव्वत्तसद्दसवणातो अत्थावग्गहग्गहणं कतं, जतो अव्वत्तमणिद्देसं सामण्णं विकप्परहियं ति भण्णति, तस्स य पुव्वं वंजणावग्गहेण भवितव्वं, जतो[6] एतग्गाहिणो सोतादिइंदियस्स अत्थोग्गहो वंजणोग्गहमंतरेण ण भवति त्ति नियमेसो, सो य कालसुहुमत्तणतो उप्पलसतपत्तछेज्जदिट्ठंततो ण लक्खिज्जति। चोदक आह–जति एवं तो जं सुत्ते भणितं "तेणं सद्दे ति ओग्गहिते" तं कहं? उच्यते–इहतं "तेणं सद्दे ति ओग्गहिते" त्ति वक्खासूत्रकारोऽभिधत्ते इति करणनिद्देसातो सव्वविसेसविमुहं शब्दमात्रमुक्तं [जे० २०३ द्वि०] भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सद्दे? त्ति, ण तु शब्दोऽयमित्येवं बुध्यते, कम्हा? उच्यते–एकसमयत्तातो अत्थावग्गहस्स, किंच पण्णवेंतो य पण्णवगो संववहाराभिप्रायतो "तेणं सद्दे त्ति ओग्गहिते" त्ति ब्रूते, ण दोसो। जति वा "सद्दोऽय" मिति बुद्धी भवे तो अवातो चेव भवे, तच्च न, कहं? उच्यते–णो जतो अत्थावग्गहसमयमेत्ते काले "सद्द" इति

---

१ पुण उवगरणिंदियं मलय०नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे॥ २ आपुण्णं भरितं आ०। "आभृतं" इति हारि० वृत्तौ॥ ३ अभिपक्ताः इत्यर्थः, तदा पूरियं ति भण्णइ इति मलय०नन्दिवृत्तौ चूर्णिपाठोद्धरणे॥ ४ °पगारं आ०॥ ५ °जाति-किरिया° जे०॥ ६ जतो पत्तग्गाहिणो जे० दा०॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ त्ति । अण्णे पुण आयरिया एतं सुत्तं → विसेसत्थावग्गहे भणंति–'अव्वत्तं सद्दं सुणेज्ज' त्ति एस ← विसेसत्थावग्गहो, 'तेण सद्दे त्ति उग्गहिते' त्ति, एतं सुत्तखंडं सामण्णसद्दत्थावग्गहदंसणं, कहं ? उच्यते–जतो भण्णति "णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दे" त्ति संख-संग-गोसिंग-करडआदिको त्ति, एसो वि अविरुद्धो सुत्तत्थो । 'ततो' अत्थावग्गहसमयाणंतरं पढमसमयादिसु 'ईहं अणुपविसति' 'ईहं' ति केइ संसयं मण्णंति, तं ण भवति, संसयस्स अण्णाणभावत्तणतो, मतिभावंसो य ईहा त्ति । आह–को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते–इह जं थाणु-पुरिसादिअणेगेसु पेहितं चित्तं तदन्नयरावबोहेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भण्णति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूववत्तिवावारेहिं सब्भूतसत्थस्स विसेसधम्माभिमुहालोयणं [illegible]स्स अधम्मविमुहं असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णति । अणु त्ति–अवग्गहो पच्छाभावे असंखेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्ठमतिखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालब्भंतर एव जाणति 'अमुगे एस सद्दे' संखसंगादिए त्ति । दुब्बोधत्तणतो पुण अत्थस्स अविसिट्ठमइणाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तचुतो अणवगतत्थो पुणो वि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहति । [जे० २०४ प्र०] [एवं] ईहोवयोगाविच्छेदसंताणतो बहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहाणंतरं अवातो । सो य सद्दाइअत्थपच्चुप्पण्णस्स जे पत्थस्सा तेसु विमुहस्स सब्भूते य अवगमत्तणतो [illegible] एस संखसद्दो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसद्दोऽयमित्येवमवगतत्थो [जहण्णतो] असंखेज्जसमयकालिओ उक्कोसतो णियमा अंतोमुहुत्तकालिओ सो अवबोधो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायाणंतरं धारणं पविसति त्ति । सा य जहण्णतो उक्कोसतो असंखेज्जसमते अविच्चुतीए तमत्थं धरेति, उक्कोसतो अंतमुहुत्तं, [illegible] त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालविभागेण संखेज्जं कालं धरेति, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

र्थग्रहणं भवेत् । तस्य च प्रथमसमयार्थप्रतिबोधकालेऽर्थावग्रहः, तस्य पूर्वमसंख्येयसमयेषु व्यञ्जनावग्रहः । शेषमीहादि पूर्ववत् । सीसो पुच्छति–उग्गहादीणं उ कमातिक्कमे एगतरअभावे वा किं सद्दादिवत्थुपरिच्छेदो ण भवति ? आचार्याह–आमं, ण भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अगहितं ईहति तम्हा पुव्वं उग्गहो, जम्हा य अणीहितं णो अवगच्छति ईहाणंतरं तम्हा अवायो, जम्हा य अणावातं ण धारिज्जति वत्थुं अवायाणंतरं तम्हा धारणा । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सव्वो आभिणिबोधियनाणावगमो नियमा एवं भवति, अत एव च कारणा सव्वे अवग्गहादयो मतिनाणभेदा भवंतीत्यर्थः ॥

५७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–[1]दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । [2]तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं [3]जाणति ण पासति १ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं [4]जाणइ ण पासइ २ । कालओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं कालं [5]जाणइ न पासइ ३ । भावओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे [6]जाणइ ण पासइ ४ ।

५७. **तं समासतो** चतुव्विहेत्यादि सुत्तं । 'तं च' मतिनाणं खयोवसमरूवतो एगविहं पि होतुं णेयभेदत्तणतो नाणाभेदा दव्वादिया से भवंति । 'दव्वतो णं' ति दव्वतो वत्तव्वे 'णं' ति वयणालंकारे, देसीवयणतो वा 'णं' अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्तिः, तत्थ पायतवयणसेलीतो दव्वतो णं एवं आभिनिवोधियनाणी लभति–'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम–प्रकारो । सो य सामण्णतो विसेसतो य । तत्थ दव्वजातिसामण्णादेसेणं सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसदव्वे वि जहा धम्मत्थिकाये धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसेत्यादि केयी जाणति, सव्वे ण याणति, जहा सुहुमपरिणता [7]अविसतत्था अप्पण्णवणादिया य । 'ण पस्सइ' त्ति सव्वे सामण्ण-विसेसादेसट्ठिते [8]धम्मादिए, चक्खु-अचक्खुदंसणेण रूव-सद्दाइते केयि पासति त्ति वत्तव्वं । अहवाऽऽदेसो–सुत्तं, तस्सादेसतो सव्वदव्वे जाणतीत्यादि । चोदक आह–जति सुत्तं कहं मतिनाणं ? ति, उच्यते–सुतोवलद्धमत्थेसु अणुसरतो तब्भावणवुद्धिसामत्थतो [जे० २०५ प्र०] सुतोवयोगणिरवेक्खा वि मती पवत्तइ त्ति ण सुत्तादेसो विरुज्झते १ । खेत्तं पि सामण्ण-विसेसादेसतो । तत्थ सामण्णतो खेत्तमागासं, तं चेगं सव्वग-

१ **दव्वओ ४** । **दव्वओ** ल० ॥ २ **तत्थ** इति पदं खं० सं० डे० ल० नास्ति, जे० शु० मो० मु० विआमलवृत्तौ **नन्द्युद्धरणे** २३० पत्रे पुनर्वर्तते ॥ **३-४-५-६** अत्र द्रव्य-क्षेत्र-काल-भावविषयकेषु चतुर्ष्वपि सूत्रांशेषु **जाणति पासति** इति पाठो **जाणति ण पासति** इति पाठभेदेन सह **भगवत्यां** अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके ३५६-२ पत्रे वर्त्तते । अत्र**अभयदेवसूरे**ष्टीका—"'दव्वओ णं' ति द्रव्यमाश्रित्य आभिनिवोधिकविषयद्रव्यं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिवोधिकज्ञानं तत्र 'आएसेणं' ति आदेशः–प्रकारः सामान्य-विशेषरूपः तत्र च 'आदेशेन' ओघतो द्रव्यमात्रतया, न तु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेति भावः, अथवा 'आदेशेन' श्रुतपरिकर्मिततया 'सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायादीनि 'जानाति' अवाय-धारणापेक्षयाऽवबुध्यते, ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात्, 'पासइ' त्ति पश्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते, अवग्रहेहयोर्दर्शनत्वात् । ....'खेत्तओ' त्ति क्षेत्रमाश्रित्य आभिनिवोधिकज्ञानविषयं क्षेत्रं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिवोधिकज्ञानं तत्र 'आदेसेणं' ति ओघतः श्रुतपरिकर्मणया वा 'सव्वं खेत्तं' ति लोका-ऽलोकरूपम् । एवं कालतो भावतश्चेति ।..............इदं च सूत्रं **नन्द्यां** इहैव च वाचनान्तरे **'न पासइ'** त्ति **पाठान्तरेणाधी**तम् । एवं च **नन्दिटीकाकृता** [हरिभद्रसूरिणा] व्याख्यातम्—"आदेशः–प्रकारः, स च सामान्यतो विशेषतश्च । तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन 'सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायादीनि जानाति, विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि, 'न पश्यति' सर्वान् धर्मास्तिकायादीन्, शब्दादींस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यत्यपीति ।" ३५८ पत्रे ॥ **७ अवि सतत्था उप्पण्णवणादिया** आ० दा० । अविशदार्था अप्रज्ञापनादिका इत्यर्थः ॥ ८ **°सेसा दसविहे धम्मादिए** आ० दा० ॥

तममुत्तं अवगाहलक्खणं सव्वं जाणति। विसेसतो वि लोगा-ऽलोगकुड्ड-ऽह-तिरियादिविसेसखेत्ते जाणति, ण जाणइ य केयी, खेत्तं न पच्चत्थेव २। काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो। तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ण य दुग्गिज्झतो, णिच्चमणिच्चं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं सव्वदव्वाणि वा कलेइ त्ति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सव्वकालं जाणति। विसेसादेसो—समया-ऽऽवलियादि उस्सप्पिणीमादि य विसेसकाले केयि जाणति, ण जाणति केयि, कालं ण पच्चत्थेव ३। भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं सव्वभावे भावजातिसेसामण्णतो जाणति। विसेसादेसतो जीवा-ऽजीवभावे। तत्थ णाण-कसायादिया जीवे, अजीवे वण्णगंधरसादिए अणेगहा वीससा-पयोगपरिणते, एत्थ मतिणाणविसयत्थे जे ते जाणति, सेसे ण याणति, सव्वभावे ण याणइ त्ति, मतिणाणस्स अणंतणेयविसयत्तणतो ॥

५८. उग्गह ईहाऽवाओ य धारणा एव होंति चत्तारि।
आभिणिबोहियणाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ७० ॥
अत्थाणं उग्गहणं तु उग्गहो, तह वियालणं ईहं।
ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ ७१ ॥
उग्गह एक्कं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं तु।
कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥
पुट्ठं सुणेति सद्दं, रूवं पुण पासती अपुट्ठं तु।
गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुट्ठं वियागरे ॥ ७३ ॥
भासासमसेढीओ सद्दं जं सुणइ मीसियं सुणइ।
वीसेढी पुण सद्दं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥
ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सती मती पण्णा सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥
से त्तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं।

५८. उग्गह ईहा० गाहा। अत्थाणं० गाहा। उग्गह एक्कं० गाहा। पुट्ठं सुणेइ० गाहा। भासासम० गाहा। ईहा० गाहा। एताओ गाहाओ जहा पेढियाए [आव० नि० गा० २–६ तथा गा० १२] तहा भाणितव्वा इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

"से किं तं मतिणाणं?" [सुत्तं ४५] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं परिसमत्तिदंसगं णिगमणवाक्यम्–"से तं मतिणाणं" ति। अहवा सीसो पुच्छति–जो एस वण्णियसरूवेण ठितो णाणविसेसो सो किंवत्तव्वो? आचार्य आह–'से' इति निद्देसे, 'तं' ति पुव्वपण्हामरिसणे, तं एतद् 'मतिणाणं' ति स्वनामाख्यानमित्यर्थः। अहवा 'से' त्ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एतं मतिणाणं ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदाणिं सव्वचरण-करणक्रियाधारं जधुद्दिट्ठं कमप्पत्तं सुतणाणं भण्णति—

५९. से किं तं सुयणाणपरोक्खं? सुयणाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं, तं जहा–अक्खरसुतं १ अणक्खरसुतं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७ अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४।

५९. से किं [जे० २०४ द्वि०] तं सुतनाणेत्यादि। तं च सुतावरणखयोवसमत्तणतो एगविहं पि तं अक्खरादिभावे पडुच्च जाव अंगबाहिरं ति चोद्दसविधं भण्णति। तत्थ अक्खरं[1] तिविहं–नाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च। तत्थ नाणक्खरं "क्षर संचरणे" न क्षरतीत्यक्षरम्, न भ्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, आतभावत्तणतो, तं च णाणं अविसेसतो चेतनेत्यर्थः। आह–एवं सव्वमविसेसतो णाणमक्खरं कम्हा सुतं अक्खरमिति भण्णति? उच्यते–रूढिविसेसतो १। अभिलाववण्णा[3] अक्खरं भणिता, पङ्कजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुग्गहणतो सुतविण्णाणस्स अक्खरता भणिता २। इदाणिं वण्णक्खरं–वण्णिज्जति अणेणाभिहेतो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, कुड्ये चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत्। वर्ण्यते–अभिलप्यतेऽनेनेति वर्णाक्षरम् ३॥ एत्थ सुत्तं—

६०. से किं तं अक्खरसुतं? अक्खरसुतं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–सण्णक्खरं १ वंजणक्खरं २ लद्धिअक्खरं ३।

६०. से किं तं अक्खरसुतं इत्यादि। अक्खरसद्दं सुणतो भासतो वा अक्खरसुतं। तत्थऽक्खरलंभो अभिलावो वा दव्वसुतं, खयोवसमलद्धी भावसुतं। तच्च वर्णाक्षरं त्रिविधं सण्णक्खरादि॥ तत्थ—

६१. से किं तं सण्णक्खरं? सण्णक्खरं अक्खरस्स संठाणा-ऽऽगिती[4]। से त्तं सण्णक्खरं।

६१. 'सण्णक्खरं' अक्खरागारविसेसो। सो य ब्रह्मादिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो। तेसु आ(अ)कारादिआगारेसु जम्हा अकारे अकारसण्णा एव भवति, एवं सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्खरा भणिता, जहा वट्टं घडागारं दट्ठुं ठकारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः १॥

---

१ चउद्दस° मो० ॥ २ अक्खरं ति दुविहं-नाणक्खरं अभिलाववण्णक्खरं च। तत्थ नाणं "क्षर जे० ॥ ३ °लावण्णा अक्खरं आ० ॥ ४ °ती सण्णक्खरं। से त्तं सं० सं० डे० ल० शु० ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो । से त्तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थ इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम् । तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम् अर्थाभिव्यञ्जकत्वात् [illegible] । तमेवं अक्खरं अत्थाभिव्वंजयं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चक्खिंदियलद्धिअक्खरं २ घाणिंदियलद्धिअक्खरं ३ रसणिंदियलद्धिअक्खरं ४ फासिंदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से त्तं लद्धिअक्खरं । से त्तं अक्खरसुयं १ ।

६३. 'लद्धक्खरं' ति अक्खरलद्धी जस्सऽत्थि तस्स इंदिय-मणोभयविण्णाणतो [illegible] जो अक्खरलाभो उप्पज्जति तं लद्धिअक्खरं । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिओ सद्दं सोउं [illegible] इति [illegible] [[illegible] भा० गा० २०६ प्र०] त्ति, एवं सव्वस्स लद्धिअक्खरं भाणियव्वं ३ । [illegible] [illegible] सुतविण्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरं भावसुतं, [illegible] [illegible] —

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—

ऊससियं णीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।
णिस्सिंघियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ८३ ॥
से त्तं अणक्खरसुयं २ ।

६४. अणक्खरसुयसरूववण्णतो पच्छद्धो [गाहा] [illegible]

ऊससियं० गाहा । एवंसव्वं [illegible]

६५. से किं तं सण्णिसुयं ? सण्णिसुयं [illegible] कालिओवदेसेणं १ हेउवदेसेणं २ दिट्ठिवाओवदेसेणं ३ ।

६५. सण्णिस्स सुतं सण्णिसुतं । [illegible]

६६. से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं जस्स[1] णं अत्थि ईहा अपोहो[2] मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं सण्णि[3] त्ति लब्भइ, जस्स[4] णं णत्थि ईहा अपोहो[5] मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असण्णी[6]ति लब्भइ। से त्तं कालिओवएसेणं १।

६६. 'कालितोवदेसेणं' ति इहाऽऽदिपदलोवो दट्ठव्वो, तस्सुच्चरणे 'दीहकालितोवदेसेणं' ति वत्तव्वं। दीहं–आयतं, कालितो त्ति विसेसणं। कस्स? उच्यते–उवदेसस्स, जहा जिणभवणे मुहुत्तकालितो दीहकालितो वा पूयामंडवो कतो तहा दीहकालितोवदेसेणं ति भाणितव्वो। उवदिसणमुवदेसो, उपदेसो त्ति वा आदेसो त्ति वा पण्णवण त्ति वा परूवण त्ति वा एगट्ठा। दीहकालिओ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, तेण दीहकालितोवदेसेणं जस्स सण्णा भवति सो आदिपदलोवातो कालिओवदेसेणं सण्णीत्यर्थः। अहवा कालियं–आयारादि सुत्तं तदुवदेसेणं सण्णी भण्णति। सो य इमेरिसो–जो य अतीतकाले सुदीहे वि [जे० २०६ द्वि०] इदं तदिति कृतमणुभूतं वा सुमरति, वट्टमाणे य इंदिय-णोइंदिएणं वा अण्णतरं सद्दाइअत्थमुवलद्धं अण्णत-वइरेगधम्मेहिं ईहइ त्ति ईहा। तस्सेव परधम्मपरिच्चागे सधम्माणुगतावधारणे य 'अवोहो' त्ति अवातो। विसेसधम्मण्णेसणा मग्गणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणतो एस संखसद्द इति। वीसस-प्पयोगुब्भवणिच्चमणिच्चं चेत्यादि गवेसणा। जो यऽणागते य चिंतयति 'कहं वा तं तत्थ कातव्वं?' इति अण्णोण्णालंबणाणुगतं चित्तं चिंता। आत-पर-इह-परत्थयहिता-ऽहितविमरिसो[7] वीमंसा। अहवा 'किमेयं?' ति ईहा। णिच्छयावधारितो अत्थो अवोधो। अभिलसियत्थस्स मणो-वयण-काएहिं जायणा मग्गणा। अभिलसितत्थे चेव अपर्डुप्पज्जमाणे[8] गवेसणा। अणेगहा संकप्पकरणं चिंता। द्वन्द्वमर्थेषु वीमंसा, जहा णिच्चमणिच्चं हितमहितं थूरं कृशं थोवं वहुं इत्यादि। अहवा संकप्पतो चेव विविधा आमरिसणा वीमंसा। अहवा 'अवोहो' त्ति अवातो। सेसा ईहाएगट्ठिया। जस्सेवं अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं धावति[9] एस कालिओवदेसेण सण्णि त्ति। सो य अणंते मणोजोगे खंधे घेत्तुं मणेति, एतलद्धिसंपण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमंजुत्तत्तणतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्पगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोछट्ठेहिं इंदिएहिं फुडमत्थं उवलभतीत्यर्थः। कालितोवदेससण्णीविवक्खे असण्णी, जहेह अविसुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगासे[11] रूवोवलद्धी असुद्धा एवं सम्मुच्छिमपंचेंदियअसण्णिस्स, उक्कोसखयोवसमे वि अप्पमणोदव्वग्गहणसामत्थे मंदपरिणामत्तणतो य असण्णिणो अविसुद्धमप्पा य अर्थोपलब्धीत्यर्थः। ततो वि अविसुद्धा चतुरिंदियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो वि अविसुद्धा वेइंदियाणं अत्थुवलद्धी। जस्स य जइ इंदिया स तहा तेसु अवग्गहादिसु पवत्तते। विगलिंदियाण वि आदेसंतरतो मणोदव्व[जे० २०७ प्र०]ग्गहणं असुद्धमप्पत्तणतो[10] य भाणितव्वं। सो य मणो तेसिं अमणो चेव दट्ठव्वो, असुद्धत्तणतो, असीलवद् अज्ञानवद्वा[12]। तयो वेइंदियेहिंतो वि समीवातो अव्वत्ततरं विण्णाणं एगिंदियाण, जहा मत्त-मुच्छिय-विसभावितस्स य तहा एगिंदियाण सव्वधा मणाभावे विण्णाणं सव्वजहण्णं। कालितोवदेससण्णिणो एते सम्मुच्छिमादयो सव्वे असण्णी भवंतीत्यर्थः १॥ इदाणिं—

६७. से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स[13] णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया

१ °स्सऽत्थि खं० सं० ल० शु० ॥ २ अवोहो जे० मो० मु० ॥ ३ सण्णीति जे० मो० मु० ॥ ४ °स्स णत्थि खं० सं० शु० ल० ॥ ५ अवोहो जे० मो० मु० ॥ ६ °ण्णी ल° खं० सं० डे० ल० शु० ॥ ७ आत्म-परेह-परत्रजहिता-ऽहितविमर्ष इत्यर्थः ॥ ८ °डुप्पण्णमाणे दा० । °डुच्चमाणे आ० ॥ ९ °त्तं वा वत्तति एस जे० आ० दा० । धावति इति पाठस्तु मो० चूर्ण्यादर्शगतो ज्ञेयः ॥ १० °मद्देतुत्तणतो आ० दा० ॥ ११ °गासा रूवो आ० ॥ १२ अघनवद्वा आ० ॥ १३ जस्सऽत्थि खं० सं० ल० शु० ॥

करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णि त्ति लब्भइ। से त्तं हेउवएसेणं २।

६७. 'हेतूवदेसेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उवदेसेणं' ति [illegible]। हेतुतो [illegible] त्ति जेण तेण सो हेतुउवदेसेण सण्णी भवति। 'जस्स' त्ति जीवस्स. 'णं' वाक्यालंकारे [illegible] वा [illegible] अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्य पूर्वं ततः विज्ञानस्यैव 'करणशक्तिः' करणं—क्रिया शक्तिः—सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करणमेव शक्तिः करणशक्तिः। [illegible] संचिन्त्य संचिन्त्य इट्ठेसु विसयवत्थूसु आहारादिसु पवत्तंति, अणिट्ठेसु य णियत्तंति। एवं [illegible] ति। ते य पायं पडुप्पण्णकाले, ण तीता-ऽणागतकालावलंबिणो भवंति, उस्सण्णेणं, केयि तु तीता-ऽणागतकालावलंबिणो वि भवंति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो। किंच—[illegible] दट्ठव्वो। एवं ते बितिंदिया सम्मुच्छिमपंचेंदिया [illegible] हेतुवादेणं सण्णिणो, ते [illegible] इट्ठा-ऽणिट्ठविसय[अ]विणियट्टवावारा [illegible] इत्यर्थः २।

इयाणि—

६८. से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भति। से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ३। से त्तं सण्णिसुतं ३। से त्तं असण्णिसुतं ४।

[२] इच्चेताइं सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं। इच्चेयाइं मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छसुतं।

[३] अहवा मिच्छद्दिट्ठिस्स वि एयाइं चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छद्दिट्ठिणो तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमेंति। से त्तं मिच्छसुयं ६।

७०. [१] से किं तं मिच्छसुतं इत्यादि। अण्णाणं इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं। अण्णाणं—अबोधो विवरीयत्थबोधो वा तेण इतो—अणुगतेत्यर्थः। मिच्छादिट्ठि इतेहिं मिच्छादिट्ठितेहिं, मिच्छ त्ति—अनृतं, दिट्ठि त्ति—दरिसणं, मिच्छादिट्ठिणा अणुगतेहिं ति भणितं भवति। स—इत्यात्मनिर्देशः, छन्दः—अभिप्रायः, तत्थमतत्थेण वा अत्थस्स जो बोहो स बुद्धिः—अवग्रहमात्रम्, उत्तरत्र ईहादिविकप्पा सव्वे मती। अहवा नाणावरणखयोवसमभावो बुद्धी, सो चेव जदा मणोदव्वाणुसारतो पवत्तइ तदा मती भण्णति। एवं आत्माभिप्रायबुद्धि-मतिभिः यच्छ्रुतं विविधकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तच्च भारधादि जाव चत्तारि य वेदा संगोवंगा, सव्वेते लोगसिद्धा, लोगतो चेवेतेसिं सरूवं जाणितव्वं। एतं सव्वं मिच्छभावट्टितं ति कातुं मिच्छसुतं भाणितव्वं। एतम्मि सम्म-मिच्छसुत-विकप्पे चतुरो विकप्पा भाणितव्वा इमेण विधिणा—

[२] सम्मसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं चेव १, सम्मसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुतं २, मिच्छसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं ३, मिच्छसुतं मिच्छदिट्ठिणो मिच्छसुतं चेव ४। 'इच्चेताइं सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहिताइं सम्मसुतं' एत्थ सुत्ते पढम-तइयविकप्पा दट्ठव्वा। 'इच्चेयाइं' ति सम्म-मिच्छसुताइं, अहवा मिच्छसुताइं चेव। सेसं कंठं। 'मिच्छदिट्ठिस्स' इच्चादिसुत्ते बितिय-चतुत्थविकप्पा दट्ठव्वा। तत्थ पढमविकप्पे सम्मसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मसुतं चेव भवति १ बितियविकप्पे वि जहा खंडसंजुतं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवइ तहा मिच्छत्तुदयतो सम्मसुते मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं भवति २ ततियविकप्पे तिफलादिमणिट्ठं पि उवउत्तं उवकारित्तणतो सम्मं भवति तहा मिच्छसुते मिच्छभावोवलंभातो सम्मसुते दढतरभावुप्पायकरणत्तणतो तं से सम्मसुतं भवति ३ चरिमविकप्पे मिच्छसुतं, तं चेव मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं चेव भवति ४।

[३] तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो तं चेव मिच्छसुतं सम्मसुतं भवति। कम्हा एवं भण्णति ? उच्यते—परिणामविसेसतो, जम्हा ते मिच्छदिट्ठिणो 'तेहिं [जे० २०९ द्वि०] चेव' पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतभणितेहिं 'चोदिता' भणिता 'समाणा' इति सन्तः, चोदणाणंतरं आत्मैककालावस्थायां सन्त इत्यर्थः। पुव्वं जं सासणं पडिवण्णो तं से सपक्खो, तम्मि जा दिट्ठी तं 'वमेंति' परिचयंति, छड्डेंति त्ति वुत्तं भवति। जम्हा एवं तम्हा तं पुव्वमिच्छसुतं सम्मसुतं से भवति। पर आह—तत्तावगमसंभावसामण्णे सम्मत्त-सुताणं को पतिविसेसो जेण भण्णति 'सम्मत्तपरिग्गहिताइं सम्मसुतं' ? उच्यते—जहा णाण-दंसणाणं अवबोधसामण्णे भेदो तहा सम्म-सुताणं पि भविस्सति।

१ एयाणि चेव सम्म° सर्वासु सूत्रप्रतिषु। वृत्तिकृद्भ्यामयमेव सूत्रपाठः सम्मतोऽस्ति ॥ २ एयाइं मिच्छ° सर्वासु सूत्रप्रतिषु। वृत्तिकृद्भ्यामयमेव सूत्रपाठः सम्मतः ॥ ३ °च्छद्दिट्ठिपरि° सं० ॥ ४ मिच्छासुयं डे० मो० मु०। अपि च-सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतविवेचकोऽयं सूत्रांशः सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृत्त्योरपि च क्रमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ५ एयाइं चेव इति खं० सं० जे० डे० ल० शु० नास्ति। श्रीहरिभद्राचार्यैरपि नाद्दतोऽयं पाठः स्वीकृतः ॥ ६ °ट्ठिया तेहिं डे० ल० विना ॥ ७ ससमएहिं जे० ॥ ८ चयंति जे० मो०। श्रीमलयगिरिपादैरेतत्पाठानुसारेणैव व्याख्यातमस्ति ॥ ९ मिच्छासुयं डे० मो० मु० ॥ १० तत्थ आतत्थेण वा अत्थस्स आ० दा० ॥ ११ °त्मकालावस्थायाः स° आ० ॥ १२ तस्सेस पक्खो जे० ॥ १३ °सब्भाव° आ० दा० ॥

कहं? उच्यते—जहा विभंगीणं बोधमयान-वाण्णे नाणं, अणब्भहावोहे च ईसणं तहा इमं। तते जा रुती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रोचकं तं सुतं। एवं मिच्छत्तपरिग्गहे वि वत्तव्वं ६॥ इयाणिं सादि-सपज्जवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं? अणादीयं अपज्जवसियं च? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं विउच्छित्तिणयट्ठयाए सादीयं सपज्जवसियं, अविउच्छित्तिणयट्ठयाए अणादीयं अपज्जवसियं।

७१. से किं तं सादीयं इत्यादि। इह पज्जवट्ठितो वोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं वि सादि सपज्जवसाणं। कहं? जहा णरगादिभवभेदेण जीवो तहा। दव्वट्ठितो पुण अवोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं पि 'अणादि अपज्जवसाणं च' त्रिकालावस्थायी, जहा पंचत्थिकाया तहा॥ एतेसु णतेसु दव्वाइचउक्कं पडुच्च चिंतिज्जति। तत्थ—

७२. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, बहवे पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं १। खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच एरवयाइं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, पंच महाविदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं २। कालओ णं ओसप्पिणिं उस्सप्पिणिं च पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, णोउस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ३। भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते तया भावे पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ४।

'आघविज्जंति'[1] आख्यायन्ते सामण्णतो [विसेसतो] विसेससामण्णतो वा, पण्णविज्जंति भेदप्पभेदेहिं, तेसिं भेदप्पभेदाणं सरूवमक्खाणं परूवणा, दंसिज्जंति उवमामेत्तेण जहा गो तहा गवय इति, णिदंसणं हेतु-दिट्ठंतेहिं, उवदंसणा उवणयोवसंघारेहिं सव्वणएहिं वा । अहवा एगट्ठिता एते । 'ते' इति पण्णवणिज्जाण णिद्देसो । 'तहा' इति पण्णवगं पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति । तत्थ पण्णवगं पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्तयो आसणविसेसतो य सादि सपज्जवसाणं । पण्णवणिज्जे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो तद्देगपदेसादिमवगाहतो एगसमयादिमवत्थाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाणं । पाढंतरं वा "ते तदा पडुच्च" 'तया' इति कालं अनाद्यपर्यवसितम् । भावतः श्रुतज्ञानं क्षायोपशमिके भावे नित्यं वर्तते स्वामित्वसम्बन्ध इति ।

७३. अहवा भवसिद्धीयस्स सुयं साईयं[2] सपज्जवसियं, अभवसिद्धीयस्स सुयं अणादीयं अपज्जवसियं ।

७३. अहवा सादि सपज्जवसाणं सपडिपक्खपदेसु भंगचतुक्के पढमभंगे सम्मसहितसुतभावो चिंतेयव्वो, अणेगविहं वा खयोवसमभावं पडुच्च दव्वादिउवयोगं वा पडुच्च पढमभंगो भवति । वितियभंगो सुण्णो, अहवा अभव्वाणं अणागतद्धसंजोगेण सुतभावो भाणितव्वो । चरिम-ततियभंगेसु अविसिट्ठसुतभावो अभव्व-भव्वे पडुच्च जोएतव्वो । अभवसिद्धीयस्स इत्यादि सुतसिद्धं । इह चरिम-ततियभंगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधिकारतो, इधरा मतिभावो वि दट्ठव्वो, मति-सुताण अण्णोण्णाणुगतत्तणतो । सो य अणादिणाणभावो जहण्णो अजहण्ण[जे० २१० द्वि०]मणुक्कोसो वा हवेज्ज, उक्कोसो ण भवति, कम्हा ? जम्हा उक्कोसनाणभावो केवलिणो भवति ॥ तस्स य सुत्ते इमं पमाणं पढिज्जति—

७४. सव्वागासपदेसग्गं सव्वागासपदेसेहिं अणंतगुणियं पज्जवग्गक्खरं[3] णिप्फज्जइ ।

७४. सव्वागासपदेस इत्यादि सूत्रं । सव्वमिति–अपरिसेससव्वग्गं अधिकिच्चेवं भण्णति, सव्वं आकासं सव्वाकासं, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, जं एतेसिं अग्गं–जं परिमाणं ति वुत्तं भवति, एतं सव्वागासप्पदेसरासियग्गं अणंतेण रासिणा अण्णेण गुणितं ताहे जं रासिपमाणं लब्भति तं सव्वपज्जवाण अग्गं भवति । पज्जाया णाम–एक्केकस्साऽऽगासपदेसस्स जावंतो अगरुलहुयादी पज्जवा ते पण्णाए सव्वे संपिंडिता, तेसिं संपिंडिताणं जं अग्गं एतप्पमाणं अक्खरं लब्भति ।

[अक्खरपडलं]

इह अक्खरं ति दुविहं- णाणं अकारादिदव्वसुतक्खरं च । तत्थ नाणमक्खरं ति अविसेसतो सव्वनाणमक्खरं, जम्हा तं जीवातो उप्पण्णं अणण्णभावत्तणतो णो क्खरति त्ति, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवलणाणं घेत्तव्वं, जम्हा केवलं सव्वदव्वपज्जायविण्णत्तिसमत्थं भवति । तं च केवलं णेये पवत्तइ, तस्स वि परिमाणं इमेणं चेव विधिणा भाणितव्वं—'सव्वागासपदेसग्गं' इत्यादि पूर्ववत् । ते य सव्वदव्वपज्जाया समासतो तीसं इमेण विधिणा—गुरू लहू गुरुलहू अगुरुलहू एते चतुरो, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अणित्थंत्थसंठाणसहिता छ संठाणा, एते मुत्तदव्वे सव्वे संभवंति । अमुत्तदव्वेसु अगुरुलहू चेव एक्को पज्जायो संभवइ ।

---

१ "आघविज्जंति' त्ति प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते, सामान्य-विशेषाभ्यां कथ्यन्त इत्यर्थः" इति हारि०नन्दिवृत्तौ । "अग्घविज्जंति' त्ति प्राकृतत्वाद् आख्यायन्ते, सामान्यरूपतया विशेषरूपतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थः" इति मलय०नन्दिवृत्तौ ॥ २ सायि सप° सं० । साई सप° ल० ॥ ३ पज्जवक्खरं जे० मो० मु० विआमलवृत्तौ २६८ पत्रे नन्दिसूत्रपाठोद्धरणे । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मतः ॥

एत्थ य एक्केक्के भेदे अणंता भेदा संभवंति । किंच गुरुलहुदव्वेसु पत्ताविसेसतो अजियोगपक्ख अहार्वीसं गुरुलहुए भणंति । कहं ? उच्यते–ते चेव तीसं सव्वगुरुलहुपज्जाएहिं विहूणा । जतो भणितं—

निच्छयतो सव्वगुरुं सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं ।
ववहारतो तु जुज्जति बादरखंधेसु णऽण्णेसु ॥ १ ॥ [कप्प०, गा. ३४]

णिच्छयणयमतेण सव्वथा गुरुं लहुं वा नत्थि दव्वं । जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोधो [illegible] हवेज्ज, सव्वलहुस्स वा उप्पयमाणस्स. जतो य णिच्चपडणं उप्पयणं वा ण विज्जति तम्हा [illegible] सव्वथा गुरुं लहुं वा दव्वं नत्थि । ववहारणयादेसेणं पुण दो वि अत्थि, जहा–लेट्ठुम लोहपिण्डं [illegible], [illegible] धूम-उक्कापवादी । एवं ववहारणयादेसतो बादरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति । 'णऽण्णेसु' त्ति ण सुहुमपरिणामेसु त्ति वुत्तं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दव्वा ? के वा बादरपरिणता ? उच्यते–[illegible] जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा [illegible], [illegible] भवंति । बादरो पुण परमाणुतो आरब्भ जाव अणंतपदेसिओ खंधो [illegible], [illegible] खंधो भवति, सो य जहण्णो वि अणंतपदेसिओ [illegible] भवति, [illegible] बादरा खंधा । ते य ओराल-वेउव्व-आहार-तेयगसरीरादि भवंति, [illegible] । [illegible] पुच्छंति–जे सव्वगुरुलहु दव्वा अगुरुलहु य तेसिं के [illegible] ? [illegible] सव्वोअगरुलहुयदव्वा अणंतगुणा । कहं पुण ते अणंतगुणा भवंति ? [illegible] अणंताओ वग्गणाओ, सुहुमाणं पि अणंताओ वग्गणाओ, [illegible] अणंताओ वग्गणाओ, देहाणं वि [illegible] [illegible] सियाणं संखेज्जाओ वग्गणाओ, असंखेज्जपदेसियाणं [illegible] सव्वोअगरुलहुदव्वाणि अणंतगुणाणि भवंति । [illegible] [illegible] भणितव्वो । जतो य–

रूवि-अरूविदव्वाण य पज्जायअप्पवहुत्तं इमं भणाति–रूविदव्वाणं जे य अगरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता, एतेहिंतो एक्कस्स चेव अमुत्तदव्वस्स जे अगरुयलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवंतीत्यर्थः। एत्थ सीसो भणति–केवतितेहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाणं पिंडितपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति? उच्यते–नास्त्यत्र परिमाणं, वहुधा वि अणंतएणं गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्वपज्जाएसु णत्थि परिमाणं ॥

एवंगते परिमाणार्थे इमं भणति—

केण हवेज्ज निरोधो अगरुलहूपज्जयाण तु अमुत्ते ?।
अच्चंतमसंजोगो जहितं पुण तव्विवक्खस्स ॥ ३ ॥ [कल्पभा. गा. ६९]

जतो अमुत्तदव्वाणं वहुहा वि अणंतएण गुणिज्जमाणे पेज्जायग्गं ण भवति। ततो 'केनेति' केनान्येन प्रकारेण 'हवेज्ज' त्ति भवे 'णिरोहो णाम' परिमाणं? परिच्छेदेत्यर्थः, किं मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वाणं अगरुयलहुपज्जायपरिमाणं भविस्सति? त्ति, नेत्युच्यते, 'अच्चंतमसंजोगो' 'अच्चंतं' अतीव अंयुज्जमाणो जम्हा संजोगो। [जे० २१२ प्र०] 'जहियं' ति यत्र। 'पुण' विसेसणे। किं विसेसयति? रूविदव्वे। तदित्यनेन अमुत्तदव्वपक्खो, तस्स विवक्खो–मुत्तदव्वपगारो, तेसु पज्जायथोवत्तणतो अमुत्तदव्वेसु य पज्जायाण अतीववहुयत्तणतो, अतो मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंतेणेव ण जुज्जते, ण घटतेत्यर्थः ॥

एवं तु अणंतेहिं अगरुलहूपज्जएहिं संजुत्तं।
होति अमुत्तं दव्वं अरूविकायाण तु चतुण्हं ॥ ४ ॥ [कल्पभा. गा. ७०]

'एवमिति' यथेदमुक्तं। सेसं कंठं। णवरिं 'अरूविकाताण तु चतुण्हं' ति धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगास-जीवाणं ति एतेसिं चतुण्ह वि नियमा पत्तेयं अणंता अगरुयलहुयपज्जाया भवंति। कहं? उच्यते–जम्हा एतेसिं एक्केक्को पदेसो अणंतेहिं अगरुयलहुयपज्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्मा-ऽधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जमणंता पत्तेयं भवंति। आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्थि परिमाणं, तहा वि संववहारतो अणंता उक्ता इत्यर्थः ॥

एवं ताव ज्ञेयमनंतमुक्तम्। अथेदानीं तत् केवलज्ञानं यथाऽनन्तं तथेदमुच्यते—

उवलद्धी० गाहा। [कल्पभा. गा. ७१] सव्वे रूविदव्वा-ऽरूविदव्वाण य जावतिया गुरुलहुपज्जाता सव्वे अरूविदव्वाण य जे अगरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासति य जतो, एवमणंतं केवलनाणमक्खरं ति सप्रसंगमभिहितम्।

इदाणिं 'अकारादिदव्वसुतमक्खरं' ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुक्तं णेयं वा तहा वि रूढिवसतो जहा पंकयं तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भणाति। तत्थ 'सरक्खरं' अक्खरं अक्खरं सरंति–गच्छंति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं अकारादि, वंजणस्स वा फुडमभिधाणं सरंति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो संभरिज्जइ त्ति सरक्खरं। ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यते तेनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवद् व्यंजनाक्षरम्। तेहिं चेव सर-वंजणक्खरेहिं जदा अत्थो वण्णिज्जति अभिलप्यते वा तदा ते वण्णक्खरं भण्णंति। इह एक्केक्कस्स अकारादिहकारांतमक्खरस्स स-परपज्जायभेदा इमे–अकारस्स य पज्जाया जहा दीह-ह्रस्व-प्लुतास्त्रयः, तत्थ दीहो [जे० २१२ द्वि०] उदात्ता-ऽनुदात्त-स्वरितभेदः, एवं ह्रस्व-प्लुतावपि, पुनरप्येकैको सानुनासिको निरनुनासिकश्च, इत्येवं अष्टादशभेदः। एवं सेसक्खराण वि जहासंभवं भेदा भावितव्वा। अहवा सरविसेसतो एक्केक्कमक्खरस्स अणंता सपज्जया। एत्थ अकारस्स

१ पज्जायग्गं जे० दा० ॥ २ अयुज्जमाणो आ० ॥ ३ °तसरक्खरस्स आ० दा० ॥ ४ तस्त्रिभेदः, जे० दा० ॥

अकारजातीयासमण्णतो सपज्जाया अट्ठारस, सेसा परपज्जाया, एवं [illegible] पज्जाया । अहवा अकारादिकस्स [illegible]-
रादिवंजणा केवला अण्णसहिता वा जं अभिलावं लभंते ते तस्स सपज्जाया, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वे
वि अणंता । जतो सुत्ते भणितं—"अणंता गमा अणंता पज्जया" । [सू० [illegible]] भणितं च—

पण्णवणिज्जा० गाहा [कप्प० गा० [illegible]] । अक्खरसंभो० गाहा [विसे० गा० [illegible]] । [illegible]
अभिलप्या अणंतभागो, तेसिं पि अणंतभागो सुतनिबद्धो इति । अहवा अकारादिअक्खरा [illegible]
पज्जायपरिमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते—जे अभिलावतो संजुत्ता-असंजुत्तेहिं अक्खरेहिं [illegible] य
सव्वेहिं जावतिए अभिलावे अभिलप्पे य लभंति ते सव्वे तस्स सपज्जाया, सेसा सव्वे [illegible] परपज्जाया ।
आकासं मोत्तुं सव्वस्स सपज्जएहिंतो परपज्जया अणंतगुणा । [illegible] । [illegible]
आह—कहं तस्सेव परपज्जया य ? णणु विरुद्धं, उच्यते—[illegible] दुविहा [illegible]—
संबद्धा असंबद्धा य । तत्थ [illegible] संबद्धा, [illegible]
घटपर्यायवत्: ते चेव णत्थित्तेणं असंबद्धा, [illegible] ।
अकारे इकारादिपर्याया णत्थित्तेण संबद्धा, [illegible]
ते चेव अत्थित्तेण असंबद्धा, अत्थित्त[illegible] । [illegible]
वि [illegible]. घटादिसु य अकारे [illegible] [illegible]

तभागो निच्चुग्घाडियतो, सो केवलस्स न संभवति, केवलस्स अविभागसंपुण्णत्तणतो य; ओधीए वि ण संभवति, अणंतभागस्स अभावत्तणतो, अवधेः असंख्येयप्रकृतिसंभवादित्यर्थः; मणपज्जवनाणे वि रिजु-विपुलदुभेदसंभवतो अणंतभागो ण भवति, किंच अवधि-मणपज्जवाणं णिच्चुग्घाडअभावत्तणतो इह अणधिकारो; परिसिट्ठे मति-सुते त्ति 'अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियओ' अधिकतसुतस्स वा अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियतो। जत्थ सुतं तत्थ मतिणाणं पि घेत्तव्वं। 'णिच्चं' ति सव्वकालं। 'उग्घाडिततो' त्ति णाऽऽवरिज्जति। सो य अणंतभागो पुढवादिएगिंदियाण वि पंचण्हं निच्चुग्घाडो, अहवा सव्वजहण्णो अणंतभागो निच्चुग्घाडो पुढविकाइए, चैतन्यमात्रमात्मनः। तं च उक्कोसथीणिद्धिसहितनाण-दंसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति।

जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवयं पावे। सुट्ठु वि मेहसमुदए होंति पहा चंद-सूराणं ॥१॥

[कल्पभाष्ये गा. ७४]

जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवत्तं ण परिच्चयति। सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उच्यते—दव्वसभावसरूवत्तणतो। इह दिट्ठंतो जहा—सुट्ठु वि मेहच्छादिए णभे चंद-सूरप्पहा मेहपडले भेत्तुं दव्वे ओभासति, तहा अणंतेहिं णाण-दंसणावरणकम्मपुग्गलेहिं एक्केक्को आतप्पदेसो आवेढियपरिवेढितो ते कम्मावरणपडले भेत्तुं नाणस्स अणंतभागो उव्वरति, [जे० २१३ द्वि०] ततो य से अव्वत्तं नाणमक्खरं सव्वजहण्णं भवति। ततो पुढविकाइतेहिंतो आउक्कातियाण अणंतभागेण विसुद्धतरं नाणमक्खरं, एवं कमेणं तेउ-वाउ-वणस्सति-बेइंदिय-तेइंदिय-चतुरिंदिय-असण्णिपंचेंदिय-सण्णिपंचेंदियाण य विसुद्धतरं भवतीत्यर्थः। ७। ८। ९। १०॥ भणितं सादि सपज्जवसितं अणादि अपज्जवसितं च। एत्थेव प्रसंगतो अक्खरपडलं भणितं।

एवं बहुवत्तव्वं अक्खरपडलं समासतोऽभिहितं। वित्थरतो से अत्थं जिण-चोद्दसपुव्विया कहए ॥ १ ॥

[॥ अक्खरपडलं सम्मत्तं ॥]

इदाणिं गमिया-ऽगमियं—

७६. से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ। अगमियं कालितं सुयं। से त्तं गमियं। से त्तं अगमियं ११। १२।

७६. गमबहुलत्तणतो गमियं। तस्स लक्खणं—आदि-मज्झ-ऽवसाणे वा किंचिविसेसजुत्तं सुत्तं दुगादिसतग्गसो तमेव पढिज्जमाणं गमियं भण्णति, तं च एवंविहमुस्सण्णं दिट्ठिवातो। अण्णोण्णक्खराभिधाणट्ठितं जं पढिज्जति तं अगमियं, तं च पायसो आयारादि कालियसुतं ११। १२॥

उक्तं गमिया-ऽगमियं। इदाणिं अंगा-ऽणंग-पविट्ठं—तं च गमिया-ऽगमियं चेव समासतो अंगा-ऽणंगपविट्ठं भण्णति। कहं? उच्यते—सव्वसुतस्स तब्भावंतगतत्तणतो।

७७. अहवा[3] तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—अंगपविट्ठं[4] अंगबाहिरं[5] च।

७७. अहवा अरिहंतमग्गोवदिट्ठाणुसारि सुतं जं तं समासतो दुविहं इत्यादि सुत्तं।

---

१ °पडलं आ० दा० ॥ २ एत्थं बहु° आ० दा० ॥ ३ अहवा इति खं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ ४ °ट्ठं च अंग° जे० ॥ ५ अणंगपविट्ठं च ख० सं० डे० ल० शु० ॥

पायदुगं जंघोरू गायदुगद्धं तु दो य बाहू य । गीवा सिरं च पुरिसो बारसअंगो सुयविसिट्ठो ॥ १ ॥

इच्चेयस्स सुयपुरिसस्स जं सुतं अंगभागत्थियं तं अंगपविट्ठं भण्णति । जं पुण एतस्सेव सुयपुरिसस्स वइरेगट्ठितं तं अंगबाहिरं ति भण्णति । अहवा—

गणहरकतमंगगतं जं कत थेरेहिं बाहिरं तं च । णियतं अंगपविट्ठं अणियत सुत बाहिरं भणितं ॥ २ ॥

७८. से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सयं च आवस्सयवइरित्तं च ।

७९. से किं तं आवस्सयं ? आवस्सयं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामाइयं १ चउवीसत्थओ २ वंदणयं ३ पडिक्कमणं ४ काउस्सग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ । से त्तं आवस्सयं ।

७८–७९. से किं तं अंगबाहिरमित्यादि । कंठं ।

८०. से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालियं च उक्कालियं च ।

८०. आवस्सयवतिरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च [illegible]

कप्पसुतं ४। एमेव [[1]पण्णवणा] पण्णवणत्थो सवित्थरो ८। अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा **महापण्णवणा** ९। मज्जादियो पंचविहो पमातो, तेसु चेव आभोगपुव्विया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था दंसिज्जंति तमज्झयणं **पमादप्पमादं** १०। सूरचरितं पण्णविज्जते जत्थ सा **सूरपण्णत्ती** १६। पुरिसो त्ति–संकू पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसातो निप्फण्णा पोरिसी, एवं सव्वस्स वत्थुणो जदा स्वप्रमाणा छाया भवति तदा पोरिसी भवति, एतं पोरिसिपमाणं उत्तरायणस्स अंते दक्खिणायणस्स य आदीए एक्कं दिणं भवति, अतो परं अट्ठ एकसट्ठिभागा अंगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढंति, उत्तरायणे य हस्संति, एवं मंडले मंडले अण्णोण्णा पोरिसी जत्थ अज्झयणे दंसिज्जति तमज्झयणं **पोरिसिमंडलं** १७। चंदस्स सूरस्स य दाहिणुत्तरेसु मंडलेसु जहा मंडलातो मंडले पवेसो तहा वण्णिज्जति जत्थऽज्झयणे तमज्झयणं **मंडलप्पवेसो** १८। विज्ज त्ति–नाणं, चरणं–चारित्तं, विविधो विसिट्ठो वा णिच्छयो–सब्भावो स्वरूपमित्यर्थः, फलं वा निच्छयो, तं जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं **विज्जाचरणविणिच्छयो** १९। सबाल-वुड्ढाउलो गच्छो गणो, सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्ज त्ति–णाणं, तं च जोइसनिमित्तगतं णातुं पसत्थेसु इमे कज्जे करेति, तं जहा–पव्वावणा १ सामाइयारोवणं २ उवट्ठावणा ३ सुतस्स उद्देस-समुद्देसा-ऽणुण्णातो ४ गणारोवणं ५ दिसाणुण्णा ६ खेत्तेसु य णिग्गम-पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि-करण-णक्खत्त-मुहुत्त-जोगेसु य जे जत्थ करणिज्जा [जे० २१४ द्वि०] ते जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जंति तमज्झयणं **गणिविज्जा** २०। थिरमज्झवसाणं झाणं, विभयणं विभत्ती, सभेदं झाणं जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयणं **झाणविभत्ती** २१। मरणं–पाणपरिच्चागो, विभयणं–विभत्ती, पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ वण्णिज्जंति अज्झयणे तमज्झयणं **मरणविभत्ती** २२। आत त्ति–आत्मा, तस्स विसोही तवेण चरणगुणेहिं य आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं **आतविसोही** २३। सरागो वीतरागो य एतेसिं जत्थ सरूवकहणा, विसेसतो वीतरागस्स, तमज्झयणं **वीतरागसुतं** २४। वाघातो निव्वाघातो वा भत्तसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जहा कातव्वो तहा वण्णिज्जते जत्थऽज्झयणे तमज्झयणं **संलेहणासुतं** २५। विहरणं विहारो, तस्स कप्पो–विधि त्ति वुत्तं भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम-अहालंद-परिहारिया य दट्ठव्वा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अज्झयणे [वण्णिज्जति] तमज्झयणं **विहारकप्पो** २६। चरणं–चारित्तं, तस्स विही चरणविही, सभेदो चरणविही वण्णिज्जति जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं **चरणविही** २७। आउरो–गिलाणो, तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पच्चक्खावेंति, दिणे दिणे दव्वहासं करेंता अंते य सव्वदव्वदातणताए भत्ते वेरग्गं जणेंता भत्ते नितण्हस्स भवचरिमपच्चक्खाणं कारेंति, एतं जत्थऽज्झयणे सवित्थरं वण्णिज्जइ तमज्झयणं **आउरपच्चक्खाणं** २८। थेरकप्पेणं जिणकप्पेण वा विहरित्ता अंते थेरकप्पिया वारस वासे संलेहं करेत्ता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [जे० २१५ प्र०] संलीढा तहा वि जहाजुत्तं संलेहं करेत्ता निव्वाघातं सचेट्ठा चेव भवचरिमं पच्चक्खंति, एतं सवित्थरं जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं **महापच्चक्खाणं** २९। एते अज्झयणा जहाभिधाणत्था भणिया॥

उक्तं उक्कालियं। इदाणिं कालियं—

८२. से किं तं [2]कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा–उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीहं ५ महाणिसीहं ६ इसिभासियाइं ७ जंबुद्दीवपण्णत्ती

---

१ "जीवादीनां प्रज्ञापनं प्रज्ञापना" इति हारि०वृत्तौ॥ २ कालियं अणंगपविट्ठं? कालियं अणंगपविट्ठं अणेग° सं० शु०। नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मतोऽस्ति॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती १२ अंगचूलिया १३ वग्गचूलिया १४ विवाहचूलिया १५ अरुणोववाए १६ गरुलोववाए १७ धरणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविंदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उट्ठाणसुयं २२ समुट्ठाणसुयं २३ नागपरियोणियाओ २४ निरयावलियाओ २५ कप्पवडिंसियाओ २६ पुप्फियाओ २७ पुप्फचूलियाओ २८ वण्हीदसाओ २९ ।

१७ धरणे १८ वेसमणे १९ सक्के-देविंदे २० वेलंधरे २१ य त्ति । 'उट्ठाणसुतं' ति अज्झयणं सिंगणाइयकज्जे जस्स णं गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आसुरुत्ते रुट्ठे उवउत्ते तं उट्ठाणसुतं ति अज्झयणं परियट्टेति एक्कं दो तिण्णि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायधाणी वा कुलं वा उट्ठेति, उव्वसइ त्ति वुत्तं भवति २२ । से चेव समणे [जे० २१५ द्वि०] तस्स गामस्स वा जाव रायधाणीए वा तुट्ठे समाणे पसण्णे पसण्णलेस्से सुहासणत्थे उवउत्ते समुट्ठाणसुतं परियट्टेइ एक्कं दो तिण्णि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति । समुवट्ठाणसुये त्ति वत्तव्वे वगारलोवातो समुट्ठाणसुये त्ति भणितं । अप्पणा पुव्वुट्ठियं पि कतसंकप्पस्स आवासेति २३ । 'णागपरियावणिय' त्ति अज्झयणे णाग त्ति-नागकुमारे, तेसु समयनिबद्धं अज्झयणं, तं जदा समणे उवयुत्ते परियट्टेति तया अकतसंकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियाणंति, वंदंति णमंसंति भत्तिबहुमाणं च करेंति, सिंगणाइयकज्जेसु य वरया भवंतीत्यर्थः २४ । निरयावलियासु आवलियपविट्ठेतरे य निरया तग्गामिणो य णर-तिरिया पसंगतो वण्णिज्जंति २५ । सोहम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवडेंसया ते वण्णिता, तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा ता वण्णिता, ताओ य कप्पवडेंसियाओ भणिया २६ । संजमभावविगसितो पुप्फितो, संजमभावविचुतोऽवपुप्फितो, अगारभावं परिच्चइत्ता पव्वज्जाभावेण विगसितो पच्छा सीयइ जो, तस्स इहभवे परभवे य विलंवणा दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया २७ । एसेवऽत्थो सविसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जति २८ । अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसद्दलोवातो वण्हिणो भणिया, तेसिं चरियं गती सिज्झणा य जत्थ भणिता ता वण्हिदसातो । दस त्ति-अवत्था अज्झयणा वा २९ ॥

८३. एवमाईयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्साइं भगवतो अरहओ उसहस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइण्णगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव । से त्तं कालियं । से त्तं आवस्सयवइरित्तं । से त्तं अणंगपविट्ठं ।

८३. भगवओ उसभस्स चउरासीतिसमणसाहस्सीतो होत्था, पइण्णगज्झयणा वि सव्वे कालिय-उक्कालिया चतुरासीतिसहस्सा । कहं? जतो ते चतुरासीतिं समणसहस्सा अरहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरित्ता किंचि णिज्जूहंते ते सव्वे पइण्णग्गा, अहवा सुतमणुस्सरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासंते तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जयं सुत्तं दिट्ठं । तं च वयणं नियमा अण्णतरगमाणुपाती भवति तम्हा तं [जे० २१६ प्र०] पइण्णगं । एवं चतुरासीती पइण्णगसहस्सा भवंतीत्यर्थः । एतेण विधिणा मज्झिमतित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगसहस्सा । समणस्स वि भगवतो जम्हा चोद्दस समणसाहस्सीतो उक्कोसिया समणसंपदा तम्हा चोद्दस पइण्णगज्झय-

१ °यांति सं० ॥ २ भगवओ अरहओ सिरिउसहसामिस्स, मज्झिमगाणं जिणाणं संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि, चोद्दस° सं० डे० । भगवओ अरहओ उसहस्स समणाणं, मज्झिमगाणं इत्यादि शु० । भगवओ उसहसिरि-(सिरि)स्स समणस्स, मज्झिमगाणं इत्यादि खं० ल० । त्रयाणामप्येषां पाठभेदानां मज्झिमगाणं इत्याद्युत्तरांशेन समानत्वेऽपि नैकतरोऽपि पाठो वृत्तिकृतोः सम्मतः । वृत्तिकृद्भ्यां तु मूले आदृत एव पाठो गृहीतोऽस्ति । चूर्णिकृता पुनः सं० डे० पाठानुसारेण व्याख्यातमस्तीति सम्भाव्यते ॥ ३ सिरिउसहसामिस्स आइ° सं० । अत्र चूर्णिकृता उसहस्स इति, हरिभद्रसूरिणा सिरिउसहस्स इति मलयगिरिणा च सिरिउसहसामिस्स इति पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥ ४ सीसा खं० सं० चूर्णिं विना ॥

णसहस्सा भवंति । अहवा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादि सुत्तं । इह सुत्ते अपरिमाणा पइण्णगा पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणतो, किंच इह सुत्तें पत्तेयबुद्धप्पणीतं पइण्णगं भाणितव्वं । कम्हा ? जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाणं कीरइ त्ति भणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चेव' त्ति । चोदक आह–णणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्झते ? आचार्याह–तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवंतीत्यर्थः ॥

भणितं कालितसुतं अंगबाहिरं च । इदाणिं अंगपविट्ठं—

८४. से किं तं अंगपविट्ठं ? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा–आयारो १ सूयगडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाँहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुतं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविट्ठं इत्यादि सूत्रम् ॥

८५. से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ । आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीतीं उद्देसणकाला, पंचासीतो समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा । सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं आयारे १ ।

८५. [से किं तं आयारे इत्यादि सुत्तं] । आचरणं आयारो । गोयरो–भिक्खागहणविधाणं । विणओ–णाणातियो तिविहो वावण्णविधाणो वा । वेणइया–सीसा, केति जाव आयरियत्तिकरणा । भासा–सच्चा असच्चामोसा य । अभासा–मोसा सच्चामोसा य । चरणं–"वतसमिति०" गाहा [ ] । करणं–"पिंडस्स जा

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरि[illegible] । २ [illegible] ३ [illegible] ॥ ४ वायणा खं० ॥ ५ चूर्णी संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, [illegible] ॥ ६-७ 'सीई खं० ॥ ८ 'रसाति सु० । 'रसाणि मो० सु० ॥ ९ [illegible], किन्तु श्रीहरिभद्रसूरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो [illegible] [illegible] । समवायाङ्गसूत्रवृत्तावभयदेवसूरिभिः एवंआया इति पाठो [illegible] यद्–असौ पाठो न समवायाङ्गसूत्रप्रतिषु वर्तते इति । [illegible] हरिभद्रादीनां [illegible], [illegible] अभयदेवसूरिप्रभृति [illegible] । १० 'करणा' [illegible] ॥ ११ आचारे ह० ॥

विसोही०" गाहा [व्यव. भा. उ. १ गा. २८९]। जाय त्ति–संजमजत्ता, तस्स साहणत्थं आ
घेत्तव्वो । वर्तनं वृत्ती । एतं सव्वं आयारे 'आघविज्जइ' त्ति आख्यायते । सुत्तमत्थस्स य प
अणंता ण भवति, आदि-अंतोवलंभत्तणतो । अहवा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिकालं वा पडुच्च
सव्वद्धं च पडुच्च अणंता । उवक्कमादि णामादिणिक्खेवकरणं च अणियोगद्दारा, ते आगा
गवयणगोयरत्तणतो । वेढो–छंदजाती । 'पडिवत्तीओ' त्ति दव्वादिपदत्थऽभुवगमो प
पडिवत्तीओ, ते समासतो सुत्तपडिवद्धा संखेज्जा । तिविहा जेण निक्खेवमादिनिज्जुत्ती तेण
पिंडेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वत्थेसणा पातेसणा [जे० २१६ द्वि०] ओग्गहपडिम
विमोत्ती, एते एवं णिसीहवज्जा पणुवीसं अज्झयणा । पंचासीती उद्देसणकाला । कहं ? उ
धस्स अज्झयणस्स उद्देसगस्स, एते चउरो वि एक्को उद्देसणकालो । एवं सत्थपरिण्णाए
विजयस्स छ, सीतोसणिज्जस्स चतुरो, समत्तस्स चतुरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पंच, म
हाततणस्स अट्ठ, उवधाणसुतस्स चतुरो, पिंडेसणाए एक्कारस, सेज्जाए तिण्णि, इरियाए
वत्थेसणाए दो, पातेसणाए दो, उग्गहपडिमाए दो, सत्तिक्कयाणं सत्त, भावणाए एक्को, वि
पंचासीतिं । चोदक आह—जदि दो सुतक्खंधा पणुवीसं अज्झयणा य अट्ठारस पदसहस्सा प
"णववंभचेरमइओ अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो।" [आचा० नि० गा० ११] त्ति एतं विरुज्झति
एत्थ वि भणितं 'सपंचचूलो अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो' त्ति, इह सुत्तालावयपदेहि सहि
व्येत्यर्थः । अहवा दो सुतखंधा पणुवीसं अज्झयणा य, एतं आयारग्गसहितस्स आयारस्स
पदसहस्सा पुण पढमसुतखंधस्स णववंभचेरमइयस्स पमाणं । विचित्तत्थवद्धा य सुत्ता,
भाणितव्वो । अक्खररयणाए संखेज्जा अक्खरा । अभिधाणाभिधेयवसतो गमा भवंति
विधिणा–सुतं मे आउसं तेणं भगवता, तं सुतं मे आउसं, तहिं सुतं मे आ०, आ सुतं मे अ
तदा सुतं मदा आ०, तहिं सुतं मदा आ०, एवमादिगमेहिं भण्णमाणं अणंतगमं । अक्ख
य अणंतं । परित्ता तसा, अणंता ण भवंति । अणंता थावरा वणप्फइसहिता । सासत त्ति
त्ति–कित्तिमा, पयोगतो वीससापरिणामतो [जे० २१७ प्र०] वा जहा अब्भा अब्भरुक्खा
सुत्तेण निबद्धा । निज्जुत्ति-संगहणि-हेतूदाहरणादिएहिं य णिकाइया । किंच एते अण्णे
प्पणीया भावा 'आघविज्जंति' जाव उवदंसिज्जंति' एतेसिं पदाणं पूर्ववद् व्याख्या । एवं
पुरिसे 'एवं' ति जहा आयारे निबद्धा परूविता य तहा सव्वदव्व-भावाणं णाता भवति ।
जाणमाणो विण्णाता भवति । अण्णपावादुगेहिंतो वा विसिट्ठतरे विसिट्ठयरं वा जाणमाणो
निगमणसुत्तं कंठं । से त्तं आयारे १ ॥

८६. से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइ
[1]सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाऽजीवा सूइज्जंति,
परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए [2]सूइज्जइ । सूयगडे णं [3]आसीतस्स
[4]चउरासीईए अकिरियवादीणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं, वत्तीसाए वेण

१ °ज्जंति खं० सं० ल० ॥ २ °ज्जंति डे० शु० ॥ ३ असीयस्स खं० सं० विना ॥ ४ °सीए खं० ॥ ५

तेसट्ठाणं पावादुयसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ । सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि सुत्तं । 'सूइज्जइ' त्ति जधा णट्ठा सूई तंतुणा सूइज्जइ, उवलब्भतेत्यर्थः । अहवा जहा सूयी पडं सूतेइ तहा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वूहं' किच्च त्ति प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते परप्पवादी णिप्पट्ट-पसिणे कातुं ससमयस्स सब्भावे ट्ठाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणेज्जा । सेसं कंठं । से त्तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवा-ऽजीवा ठाविज्जंति, → लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोया-ऽलोए ठाविज्जइ, ← ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणया आघविज्जति । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

१ तेवट्ठाणं [illegible] । हारि० [illegible] समवायाङ्ग[illegible] [illegible] पावादुय-सयाणं जे० डे० मो० मु० । श्रीमलयगिरिभिरप्ययं पाठ आदृतोऽस्ति । २ [illegible] मु० । [illegible] ॥ ५ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठः जे० मो० मु० प्रतिषु ससमय-परसमए [illegible] ६ [illegible] इति [illegible] मु० नास्ति ॥ ७ एगाइयाणं एगुत्तरियाणं दसट्ठाणं [illegible] ॥ १० जे० डे० [illegible] सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं [illegible] सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं [illegible] ॥ ११ [illegible] अणंता गमा अणंता पज्जवा इति नास्ति ॥

परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं ठाणे ३ ।

८७. से किं तं ठाणेत्यादि सुत्तं । 'ठाविज्जंति' त्ति स्वरूपतः स्थाप्यंते, प्रज्ञाप्यंते टंकं । कूडं ति–जहा वेतड्ढस्सोवरि णव सिद्धायतणाइया कूडा । हिमवंतादिया सेला । वेतड्ढो । जं कूडं उवरिं अंबखुज्जयं तं पब्भारं, जं वा पव्वयस्स उवरिभागे हत्थिकुंभागि पब्भारं । गंगादिया कुंडा । तिमिसादिया गुहा । रुप्प-सुवण्ण-रतणादिया आगरा । पोंडरीग सिंधुमादियाओ णदीओ । सेसं कंठं । से त्तं ठाणे ३ ॥

८८. से किं तं समवाए? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीव जीवा-ऽजीवा समासिज्जंति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्ज समासिज्जति, ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमय-प ज्जति । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणगसयविवड्ढियाणं भावाण विज्जति । दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जति । स वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखे त्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अं अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणका पदसयसहस्से पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जव अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जं परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जांत । से एवंआया, विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति । से त्तं समवाए ४ ।

८८. से किं तं समवाए इत्यादि । समवाए निक्खेवो चतुव्विहो । दव्वे सचित्ता समवातो इमं चेव अंगं । अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ बहू भावा सण्णिवादियसंजोगा भावसमवाए वा इमं णिरुत्तं–जीवा 'समासिज्जंति' समं आसइज्जंति । समं ति–ण विसमं, ज रित्तं इत्यर्थः । आसइज्जंति–आश्रीयंते, बुद्ध्या ज्ञानेन गृह्यंतेत्यर्थः । अहवा समास त्ति– २१७ द्वि०]सव्वपदत्थाण समासतो विमरिसो त्ति । सेसं कंठं । उक्तः समवायः ४॥

---

१ °वणया खं० सं० ल० शु० ॥ २ °ज्जंति खं० सं० डे० ल० ॥ ३ द्रहा इत्यर्थः ॥ ४ °
५ पज्जवग्गे सं० । पल्लवग्गे इत्यस्यार्थः—"तथा द्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य 'पल्लवग्गे' त्ति पर्यवपरिमाणं यथा 'परित्ता तसा" इत्यादि । पर्यवशब्दस्य च 'पल्लव' त्ति निर्देशः प्राकृतत्वात्, पर्यङ्कः पल्यङ्क इत्यादिवदि पल्लवाः–अवयवास्तत्परिमाणम् ।" इति समवायाङ्गसूत्रवृत्तिः ११३–२ पत्रे ॥ ६ °वायस्स णं जे० डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं खं० सं० ल० शु० । सिलोगा, सं संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० मु० ॥ ८ °णया ल० ॥ ९ °ज्जंति खं० सं० ॥

८९. से किं तं वियाहे ? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-ऽजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जति, अलोए वियाहिज्जति, लोया-ऽलोए वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमय-परसमए वियाहिज्जति । वियाहे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीतिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं वियाहे ५ ।

८९. से किं तं वियाहेत्यादि । 'वियाहे' त्ति व्याख्या, इह जीवादयो व्याख्यायंते । इह सतं चेव अज्झयणसण्णं । गोतमादिएहिं पुट्ठे अपुट्ठे वा जो पण्हो तव्वागरणं [च] । सेसं कंठं । से त्तं वियाहे ५ ॥

९०. से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वग्गा । तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ भवंति त्ति समक्खायं । णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीअ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं णा ज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं प ग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थाव सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जं दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, चरण-करणपरूवणा आघविज्जति। से त्तं णायाधम्मकहाओ ६।

९०. से किं तं णायाधम्मकहेत्यादि सुत्तं। एकूणवीसं णातज्झयणा, णाय त्ति–आहरणा, दिट्ठंति वा णज्जति जेहऽत्थो ते णाता, एते पढमसुतखंधे। अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मिया वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणग त्ति वुत्तं भवति, एते वितियसुतखंधे। पढम-वितियसुतखंधे भणित णाता-धम्मकहाणं णगरादिया भण्णंति। वितिये सुतक्खंधे दस धम्मकहाणं वग्गा। वग्गो त्ति–समूहो, तव्वि सणविसिट्ठा दस अज्झयणा चेव ते दट्ठव्वा। एगूणवीसं णाता, दस य धम्मकहाओ। तत्थ णातेसु आदिमा णाता चेव, ण तेसु अक्खादियादिसंभवो। सेसा णव णाता, तेसु एक्केक्के णाते चत्तालीसं चत्तालीसं अक्ख इयाओ भवंति, तत्थ वि एक्केकाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासताइं भवंति, तेसु वि एक्केकाए उवक्ख इयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयसताइं भवंति, एवं एते णव कोडीओ। एताओ धम्मकहासु सोहेतव्व त्ति क एकोणवीसाए णाताणं दसण्ह य धम्मकहाणं विसेसो कज्जति–दस णाता दस णव य धम्मकहातो दसहिं परो सुद्धा। एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव चत्तालीसाए गुणिता जाता तिण्णि सता सट्ठा अक्खाइयाणं, अक्खाइयपंचसतेहिंतो सोधिता, तत्थ सेसं चत्तालं सतं, तं उवक्खाइयपंचसतेहिं गुणितं जाता उवक्खाइताणं स सहस्सा, ते पंचहिं अक्खाइतोवक्खाइयसतेहिं गुणिता एवं जाता अद्धुट्ठातो अक्खाइयकोडीतो। 'पदग्गेणं' उवसग्गपदं णिवातपदं णामियपदं अक्खातपदं मिस्सपदं च, एते पदे अहिकिच्च पंचल[जे० २१८ प्र०]क छावत्तरिं च सहस्सा पदग्गेणं भवंति, अहवा सुत्तालावयपदग्गेणं संखेज्जाइं पदसहस्साइं भवंति। अहवा छाहत्त हियसहस्सपंचलक्खा वि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्झंति। सेसं कंठं। से तं णाताधम्मकहाओ ६॥

९१. से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु णं समणोवासगाणं णगराइं उज्ज णाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरि इहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चाया परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं सी व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणा

१ हे० मो० मु० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ। से णं खं० सं० ल० शु०। सिलोगा, संखेज्ज निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं जे० ॥ २ °वीसं अज्झयणा खं० जे० हे० ल० मो० शु० समवायाङ्ग चूर्णिकृता मलयगिरिणा च मूले स्वीकृत एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति ॥ ३-४ एगूणतीसं ल० ॥ ५ संखेज्जा पयसहस् जे० मो० ॥ ६ पयसयसह° समवायाङ्गे ॥ ७ °वणया खं० सं० ल० शु० ॥ ८ °ज्जंति खं० सं० हे० शु० ल० ॥ ९ दस य ध जे० ॥ १० चेतियाति शु० ॥ ११ वणसंडाइं खं० सं० शु० नास्ति ॥ १२ °पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० मो० मु १३ इहलोइय-परलोइया इड्ढिवि° जे० मो० मु० ॥ १४ °या पच्चज्जाओ परि° जे० हे० ल० शु० ॥

भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जति । से त्तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं तं उवासगदसातो इत्यादि सुत्तं । उवासक त्ति—सावता । तेसिं अणुव्वत-गुण-सीलव्वतोव-देसणा दससु अज्झयणेसु अक्खात त्ति उवासगदसा भणिता । तासु सुत्तपदग्गं एकारस लक्खा बावण्णं च सहस्सा पदग्गेणं । सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं । सेसं कंठं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा[11] पव्वज्जाओ[12] परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं [13]→देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा← अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ[14] पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ठ

वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिब णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदं ज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूव आघविज्जति। से त्तं अंतगडदसाओ ८।

९२. से किं तं अंतगडदसातो इत्यादि सुत्तं। अंतकडदस त्ति–कम्मणो संसारस्स वा अंतो जेहिं ते अंतकडा, ते य तित्थकरादी, दस त्ति–पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तेस्सक्खतो अंतकडदस त्ति। अ दस त्ति–अवत्था, तदंते जा अवत्था सा वण्णिज्जति त्ति अतो अंतकडदसा। सरीरा-ऽऽयुदसाण वा दसण्हं अंत त्ति अंतकडदसा। णवरं 'अंतकडकिरियाओ' त्ति अस्य व्याख्या–अंतकडाणं किरिया अंतकडकिरिया, बहूणं अंतकडकिरियाओ त्ति भणिता। किरिय त्ति–क्रिया, चर्या इत्यर्थः। अहवा किरिय त्ति–कर्मक्षपणक्रिया, स सेलेसिअवत्थाए। अहवा किरिय त्ति–सहुमकिरियज्झाणं। अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरिय त्ति–कम्म सो य इरियावहितो त्ति भणितं होति। एतं च आघविज्जति। वग्गो त्ति–समूहो, सो य अंतकडाणं अज्झय वा। सव्वे अज्झयणा जुगवं उद्दिसंति। तासु सुत्तपदग्गं तेवीसं लक्खा चतुरो य सहस्सा पदग्गेणं। संखेज वा पदसहस्साणि सुत्तालावगपदग्गेणं। सेसं कंठं। से त्तं अंतगडदसा ८॥

९३. से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइ णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं[4] समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ ध यरिया[5] इहलोग-परलोगिया[6] रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जपरियागा सुतपरिग तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणु ववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायादीओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जं अणुत्तरोववाइयदसासु[8] णं परित्ता वायणा[9], संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखे सिलोगा, संखेज्जाओ[10] णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ[11] संगहणीओ, संखेज्जाओ[12] पडिवत्ती से णं अंगट्ठयाए णवमे अंगे, एगे[13] सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, ति समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अ पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता

१ °वणया सं० ल०॥ २ °विज्जंति खं० सं० जे० ल० शु०॥ ३ तत्साक्ष्यत इत्यर्थः॥ ४ वणसंडाइं इति मो० वर्तते॥ ५ धम्मायरिया धम्मकहाओ मो० मु०॥ ६ °लोइय-परलोइया जे० मो० मु०॥ ७ अणुत्तरोववत्ती अणुत्तरोववाय त्ति खं० सं०॥ ८ °दसाणं सं० जे० मो०॥ ९ वायणा ल०॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ नास्ति॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति॥ १२ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ खं० सं० ल० शु० नास्ति॥ १ सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, तिण्णि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयस पयग्गेणं प० इति समवायाङ्गे। अत्राभयदेवपादाः—"इह अध्ययनसमूहो वर्गः, वर्गे दशाध्ययनानि, वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते एवोद्देशनकाला भवन्ति, एवमेव च नन्द्यामभिधीयन्ते, इह तु दृश्यन्ते दशेति, अत्राभिप्रायो न ज्ञायत इति।" १२३–२ पत्रे॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि सुत्तं । णत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोववाइओ, तेसिं बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोववाइय त्ति, वग्गे वग्गे य दसऽज्झयण त्ति अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे सुभभावं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचतुक्कं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेसु जेसिं उववातो तेसिं णगरादिया कहिज्जंति । इह वग्गो त्ति—समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसिं पदग्गं छातालीसं लक्खा अट्ठ य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-ऽपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जातिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाय

०.

...त्वति । अण्णे य विविधा विज्जातिसता कहिज्जंति । किंच णागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्ज-मंता- ...परिसिता आगता साहुणा सह संवदंति–जल्पं करेंति । पाढंतरं वा "दिव्वा संवाया संभवंति" तदनुभूता भवंति, ...वरदाश्च गर्जितादि वा कुर्वंति । दसममंगस्स पदग्गं बाणउतिं लक्खा सोलस य सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से त्तं पण्हावागरणाइं १० ॥

९५. से किं तं विवागसुतं? विवागसुते णं सुकड-दुक्कडाणं कम्माणं फल-विवागा आघविज्जंति । तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से[2] किं तं दुहविवागा ? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोइय-परलोइया रिद्धिविसेसा निरयगमणाइं दुहपरंपराओ संसारभवपवंचा दुकुलपच्चायाईओ दुलहबोहियत्तं आघविज्जंति । से[8] त्तं दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइं चेइयाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोइअ-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुहपरंपराओ सुकुलपच्चायादीओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति ।

विवागसुते णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति । से त्तं विवागसुतं ११ ।

९७. से किं तं विवागसुतं इत्यादि । विविधो पाकः विपचनं वा विपाकः, कर्मणां शुभमशुभो वा

१ विवागे आघविज्जइ जे० मो० मु० ॥ २ से किं तं दुहविवागा इति खं० शु० नास्ति । समवायाङ्गे प्रश्नवाक्यं वर्तते ॥ ३ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं० जे० डे० ल० मो० मु० ॥ ४ इहलोग-परलोगिया सं० ॥ ५ इड्ढिवि° मो० मु० ॥ ६ °गमणं खं० ॥ ७ °भवपवंधा सं० ल० समवायाङ्गे च ॥ ८ से त्तं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? इति खं० शु० नास्ति । समवायाङ्गे तु वर्तते ॥ ९ धम्मायरिया धम्मकहाओ खं० डे० ॥ १० इहलोग-पारलोगियां इड्ढिविसेसा जे० मो० मु० ॥ ११ °ज्जा परि° खं० ॥ १२ विवागसुयस्स णं जे० मो० मु० । विवागेसु णं शु० ॥ १३ पदसतसह° समवायाङ्गे ॥ १४ °विज्जंति खं० सं० डे० ल० शु० ॥

जम्मि सुत्ते विपाको कहिज्जति तं विपाकसुतं । विपाकसुतस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीतिं च लक्खा बत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से त्तं विवागसुतं ११ ॥

९६. से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जंति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ।

९६. से किं तं दिट्ठिवाते त्ति । दृष्टिर्दर्शनम्, वदनं वादः, दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, सभेदभिण्णाओ सव्वणतदिट्ठीओ तत्थ वदंति पतंति य त्ति अतो दिट्ठिवातो । सो य पंचभेदो- परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुताचुतसेणियापरिकम्मे ७ ।

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ ।

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ । से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे? पुट्ठसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११ । से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ।

पण्णत्ते, तं जहा–पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० ओगाढावत्तं ११। से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४।

१०२. से किं तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा–पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० उवसंपज्जणावत्तं ११। से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५।

१०३. से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, तं जहा–पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११। से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६।

१०४. से किं तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, तं जहा–पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० चुयमचुयावत्तं ११। से त्तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७।

९७–१०४. तत्थ परिकम्मे त्ति जोग्गकरणं, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेसगणितस्स जोग्गो भवति। एवं गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवातसुतस्स जोग्गो भवति। तं च परिकम्मसुतं सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविहं, उत्तरभेदतो तेसीतिविहं मातुयपदादी। तं च सव्वं समूलुत्तरभेदं सुत्तत्थतो वोच्छिण्णं, जहागतसंपदातं वा वच्चं॥ किंच—

१०५. [इच्चेइयाइं सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं,] छ चउक्कणइयाइं, सत्त तेरासियाइं। से त्तं परिकम्मे १।

१०५. एतेसिं सत्तण्हं परिकम्माणं छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धांतप्रज्ञापना एवेत्यर्थः। आजीविकापासंडत्था गोसालपवत्तिता, तेसिं सिद्धंतमतेण चुता-ऽचुतसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जंति। इदाणिं परिकम्मे णतचिंता—णेगमो दुविहो–संगहितो असंगहितो य, संगहितो संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं, तम्हा

१ केउभूयं ३ इच्चादि। से त्तं ओगाढ° खं० सं० डे० ल०॥ २ °परिग्गहो जे०॥ ३ पाढो १ इच्चादि। से त्तं उव° खं० सं० डे० ल०॥ ४-५ विजहण° खं० सं० ल० शु०॥ ६ पाढो १ इच्चादि। से त्तं विजहण° खं० सं० डे० ल०॥ ७-८ चुयअचुय° जे० डे० ल०॥ ९ पाढाइ। से त्तं चुय° खं० सं० डे० ल०॥ १० चुयअचुय° डे० ल०। चुयाचुय° जे०॥ ११ एतत् चतुरस्रकोष्ठकान्तर्वर्त्ति सूत्रं सूत्रप्रतिषु न वर्त्तते। चूर्णि-वृत्तिकृद्भिः पुनरादृतं दृश्यत इति समवायाङ्गसूत्रात् सूत्रांशोऽयमत्रोद्धृतोऽस्ति॥ १२ याइं नइयाइं। से त्तं सं०॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सद्दाइया य एको, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चिंतिज्जंति त्ति अतो भणितं–'छ चतुक्कणइयाइं' ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते—जम्हा ते सव्वं जगं त्र्यात्मकं इच्छंति, जहा–जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा–दव्वट्ठितो पज्जवट्ठितो उभयट्ठितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं–'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चिंतयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा–उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावत्तं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पण्णासं २१ दुप्पडिग्गहं २२ ।

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा खं० सं० । सुत्ताइं अट्ठासीतिं भवंतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ [illegible]

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं सुत्ताइं तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चेयाइं बावीसं सु ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीतिं सुत्ताइं से त्तं सुत्ताइं २ ।

१०६. 'सुत्ताइं' ति उज्जुसुताइयाइं बावीसं सुत्ताइं । ताणि य सुत्ताइं सव्वदव्वाण स सव्वभंगविकप्पाण य दंसगाणि, सव्वस्स य पुव्वगतसुतस्स अत्थस्स य सूयग त्ति, अतो ते सु जहाभिधाणत्थाते । ते य इदाणिं सुत्त-ऽत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसंपदायतो वा वच्चा । ते चेव अट्ठासीतिं सुत्ता भवंति इमेण विधिणा—बावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो । कहं छिण्णा उच्यते—जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा—"धम्मो मंगलमुक्कट्ठं०" ति सिलोगो [दस सिलोगो सुत्त-ऽत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो बितियादिसिलोगे अवेक्खइ त्ति वुत्तं भवति । छिण्ण छिण्णच्छेदः, प्रत्येकं कल्पितपर्यंतेत्यर्थः । एते एवं बावीसं ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठि अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता । अच्छिण्णच्छेदणतो जहा—एसेव अत्थतो बितियाइसिलोगे अवेक्खमाणो, बितियादिया य पढमं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पाययो सुत्ता अक्खररयणविभागट्ठिता वि अत्थयो अण्णोण्णमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणयट्ठित त्ति बावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिकणइयाइं' ति त्रिकनयाभिप्रायतो चिंत्यंतेत्यर्थः । तहा बावीसं चेव सुत्ता चउकणइया । एवं चतुरो [जे० २२० प्र०] बावीसातो अट्ठासीतिं सुत्ताइं २ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगते ? पुव्वगते चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं उ अग्गेणीयं[10] २ वीरियं[11] ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ नाणप्पवातं ५ सच्चप्पवादं कम्मप्पवादं ८ पच्चक्खाणं[11] ९ विज्जणुप्पवादं[12] १० अवंझं ११ पाणायुं[13] १२ लोगबिंदुसारं १४ । उप्पायस्स[14] णं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि १ । अग्गेणीयस्स[16] णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू दुवालस चुल्लवत्थू[17] पण्णत्ता पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुल्लवत्थू[18] पण्णत्ता ३ । अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं

१-३-५-७ इच्चेइयाइं मो० मु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं सं० सं० एव वर्त्तते, नान्यत्र
९ भवंति इच्चमक्खायं ल० ॥ १० अग्गेणियं सं० ॥ ११ °क्खाणप्पवादं सं० सं० विना ॥ १२ वि
१३ पाणाउं जे० । पाणाउ डे० ल० मो० शु० ॥ १४ अस्मिन् सूत्रे उप्पायस्स णं पुव्वस्स, अ वीरियस्स णं पुव्वस्स इत्यादिकेषु चतुर्दशस्वपि पूर्वनामस्थानेषु उप्पायपुव्वस्स णं, अग्गेणीयपुव्वस इत्यादिः पाठभेदो मो० मु० दृश्यते ॥ १५ चूलवत्थू शु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ १६
१७ चूलवत्थू ल० शु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ १८ चूलव° शु० । चूलिआव°

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।
सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥
बारस एक्कारसमे ११, बारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।
तीसा पुण तेरसमे १३, चोद्दसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥
चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले [illegible] पुव्वं पुव्वगतसुत्तत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणिता, [illegible] दुवेंति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, [illegible] पच्छा आयाराइ । एवमुक्ते चोदक आह—णणु पुव्वापरविरुद्धं, [illegible] भणितं—"सव्वेसिं आयारो०" गाहा [आचाराङ्गनि. गा. ८] । आचार्याऽऽह—[illegible] पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोद्दस पुव्वा पण्णत्ता । [illegible] पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पण्णवणा कता, [illegible] वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य [illegible] पदसतसहस्सा २ । ततियं वीरियप्पवादं, [illegible] वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तरिं पदसतसहस्सा ३ । [illegible] णत्थि, अहवा सिंताऽसिप्पाउतो [illegible] भाणतो सद्वि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, [illegible] कता तस्स णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एगा पदकोडी [illegible]

१ [illegible]
[illegible]

वयणं वा, तं सच्चं जत्थ सभेदं सपडिवक्खं च वण्णिज्जति तं सच्चप्पवादं, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पदाधिया ६ । सत्तमं आयप्पवातं, आय त्ति–आत्मा, [जे० २२० द्वि०] सो णेगहा जत्थ णयदरिसणेहिं वण्णिज्जति तं आयप्पवादं, तस्स वि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ ७ । अट्ठमं कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्ठविधं कम्मं पगति-ट्ठिति-अणुभाग-प्पदेसादिएहिं भेदेहिं अण्णेहि य उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वण्णिज्जति तं कम्मप्पवादं, तस्स वि पदपरिमाणं एगा पदकोडी असीर्तिं च पदसहस्साणि भवंति ८ । णवमं पच्चक्खाणं, तम्मि सव्वपचक्खाणसरूवं वण्णिज्जति त्ति अतो पच्चक्खाणप्पवादं, तस्स य पदपरिमाणं चतुरासीतिं पदसतसहस्साणि भवंति ९ । दसमं विज्जणुप्पवातं, तत्थ य अणेगे विज्जातिसया वण्णिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी दस य पदसतसहस्साणि १० । एगादसमं अवंझं ति, वंझं णाम–णिप्फलं, ण वंझमवंझं, सफलेत्यर्थः, सव्वे णाण-तव-संजमजोगा सफला वण्णिज्जंति, अप्पसत्था य पमादादिया सव्वे असुभफला वण्णिता, अतो अवंझं, तस्स वि पदपरिमाणं छव्वीसं पदकोडीओ ११ । बारसमं पाणायुं, तत्थ आयुं–प्राणविधाणं सव्वं सभेदं अण्णे य प्राणा वण्णिता, तस्स पदपरिमाणं एगा पदकोडी छप्पण्णं च पदसतसहस्सा १२ । तेरसमं किरियाविसालं, तत्थ कायकिरियादियाओ विसाल त्ति–सभेदा, संजमकिरियाओ य[2] छंदकिरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाणं णव कोडीयो १३ । चोद्दसमं लोगबिंदुसारं, तं च इमम्मि लोए सुतलोए वा बिंदुमिव अक्खरस्स [सारं–] सव्वुत्तमं सव्वक्खरसण्णिवातपढितत्तणतो लोगबिंदुसारं, तस्स पदपरिमाणं अद्धतेरस पदकोडीओ १४ । ३ ॥

इदाणिं अणिओगो त्ति—

१०८. से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य ।

१०८. अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योगः अनुयोग इति । एवं सर्व एव सूत्रार्थो वाच्यः । इह जन्म-भव-पर्याय-शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्यः । स च द्विविधः–मूलपढमाणुयोगो गंडिकाविशिष्टश्च ॥ तत्थ—

१०९. से किं तं मूलपढमाणुओगे ? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलोगगमणाइं[3] आउं[4] चवणाइं जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिण-मणपज्जव-ओहिणाणि-समत्तसुयणाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउव्विणो[5] य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिरं च कालं पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता[6] अंतगडो मुणिवरुत्तमो तमरओघविप्पमुक्को[7] मुक्खसुहमणुत्तरं[8] च पत्तो, एते[9] अन्ने य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया । से त्तं मूलपढमाणुओगे ।

---

१ छत्तीसं जे० ॥ २ य बंधकिरिय° जे० विना ॥ ३ देवगम° डे० ल० शु० मो० मु० ॥ ४ आयं सं० ॥ ५ उत्तरवेउव्विणा य मुणिणो इति सं० सम० नास्ति ॥ ६ छेइत्ता जे० डे० ल० मो० मु० ॥ ७ °रयुघ° सं० ॥ ८ °सुहं च अणुत्तरं पत्तो सं० ल० ॥ ९ पघमन्ने जे० मु० ॥

१०९. 'मूलपढमाणुयोगो' त्ति, इह मूलभावस्तु—तीर्थकरः, तस्य प्रथमं—पूर्वभवादि, अहवा [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपढमाणुयोगो । एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा वट्टमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति । अहवा मूलस्स जे पढमा भावा ते मूलपढमाणुयोगो भण्णति । एत्थ तित्थकरस्स जे भावा भवताससे परियाय-सुत-सिस्साइया भाणितव्वा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणिगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-णर-तिरिय-निरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति । से त्तं गंडियाणुओगे । से त्तं अणुओगे ४ ।

११०. गंडियाणुओगो त्ति इक्खुमादिपव्वगंडिकावत् एकाधिकारत्तणतो गंडियाणुओगो भणितो । ता य । कुलकरादियाओ, विमलवाहणादिकुलकराणं "पुव्वभव जम्म णाम पमाण०" गाहा [आव. नि. गा. १४९] एवमादि जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगंडियाए भणितं । एवं तित्थकरादिगंडियासु वि । 'चित्तंतरगंडिय' त्ति चित्रा इति—अनेकार्था, अंतरे इति—उसभ-अजियंतरे ता ठिता, गंडिका इति—खंडं, अतो चित्तंतरगंडिका भणिता । तासि पेरूवणे पुव्वायरिएहिं इमा विधी दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पयोपए णरवतीणं । सगरसुताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेति ॥१॥
चोद्दस लक्खा सिद्धा णिवईणेक्को य होति सव्वट्ठे । एवेक्केक्कट्ठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥२॥
पुणरवि चोद्दस लक्खा सिद्धा निवतीण दोण्णि सव्वट्ठे । दुगठाणे वि असंखा पुरिसजुगा होंति [illegible] ॥३॥
जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे । [illegible] ॥४॥
एगुत्तरा तु लक्खा सव्वट्ठे णेय जाव पण्णासा । [illegible] ॥५॥
विवरीयं सव्वट्ठे चोद्दस लक्खाइं निव्वुतो एक्को । [illegible] ॥६॥
तेण पर दुलक्खाई दो दो ठाणा य समग वच्चंति । [illegible]
दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवतीण सव्वट्ठे । [illegible]
सिवगति-सव्वट्ठेहिं चित्तंतरगंडिया ततो चउरो । [illegible]
तीतिणमादितिउत्तर विसमादि विउत्तरा [illegible]
ततो तिण्णि णरिंदा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे । [illegible]
ताहे विउत्तराए सिद्धो तिण्णि होंति सव्वट्ठे । [illegible]
एग [illegible]

[illegible]

ताहे-तियगादिविउत्तराए अउणत्तीसं तु तियग ठावेतुं । पढमे णत्थि तु खेवो सेसेसु इमो भवे खेवो ॥१४॥
दुग पण णवगं तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्ठेव । बारस चोद्दस तह अट्ठवीस छव्वीस पणुवीसा ॥१५॥
एक्कारस तेवीसा सीताला सतरि सत्तसत्तरि या । इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव बावट्ठी ॥१६॥
अउणत्तरि चउवीसा छाताल सतं तहेव छव्वीसा । एते रासीखेवा तिगअंतंता जहाकमसो ॥१७॥
सिवगति-सव्वट्ठेहिं दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया । जाव उणतीसठाणे उणतीसं पुण छवीसाए ॥१८॥
विसमुत्तरा य पढमा एवमसंख विसमुत्तरा णेया । सव्वत्थ वि अंतिल्लं अण्णाए आदिमं ठाणं ॥१९॥ गतं ॥
अउणत्तीसं बारा ठावेतुं णत्थि पढमए खेवो । सेसे अडवीसाए सव्वत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥
सिवगति पढमादीए वितियाए तह य होति सव्वट्ठे । इय एगंतरिताइं सिवगति-सव्वट्ठठाणाइं ॥२१॥
एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ णेतव्वा । जाव जितसत्तुराया अजितजिणपिता समुप्पण्णो ४ ॥२२॥

एवं गाहाहिं चित्तंतरगंडिया समत्ता । इमा एतासिं ठवणा—

सिद्धा लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
सव्वट्ठे लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एवं जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । अतो परं—

सिद्धा लक्खा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सव्वट्ठे लक्खा	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

एवं पि असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । एते वि लक्खा—

सिद्धा लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सव्वट्ठे लक्खा	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एवं जाव असंखेज्जा आवलिया दुगादिएगुत्तरा दो [जे० २२२ प्र०] वि गच्छंति ॥

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सव्वट्ठे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एवं असंखेज्जा । एगादेगुत्तरा पढमा चित्तंतरगंडिया णेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सव्वट्ठे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

एवं असंखेज्जा । एगादिविउत्तरा वितिया चित्तंतरगंडिया ॥

१ इमे भवे खेवा आ० ॥ २ चित्रान्तरगण्डिका-तद्यन्त्रकदम्बकविशेषजिज्ञासुभिर्द्रष्टव्या अस्मत्सम्पादितनन्दिसूत्रहारिभद्रीवृत्त्यनन्तर-मुद्रितदुर्गपदव्याख्यायाः १६७ तमे पत्रे टिप्पणी ॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सव्वट्ठे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेज्जा । एगादितिउत्तरा ततिया चित्तंतरगंडिया ॥

सिद्धगति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सव्वट्ठे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	

सव्वट्ठे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	३५	५५
सिद्धगति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	

सेसं गाहाणुसारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, अवसेसा पुव्वा अचूलिया । से त्तं चूलियाओ ५ ।

१११. 'चूल' त्ति सिहरं । दिट्ठिवाते जं परिकम्म-सुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलासु भणितं । ताओ य चूलाओ आदिल्लपुव्वाण चतुण्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सव्वुवरि ठविता पढिज्जंति य, अतो ते सुतपव्वत-चूला इव चूला । तेसिं जहक्कमेण संखा चतु बारस अट्ठ दस य भवंति ५ ॥

११२. दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वा, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चुल्लवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवंणाया, एवंविण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जति । से त्तं दिट्ठिवाए १२ ।

११३. इच्चेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ता। संगहणिगाहा-

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।
जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३. अणंता भाव त्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवा-ऽजीवात्मका अणंता प्रतिबद्धा। 'अणंता अभाव' त्ति अभवनं अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, घडो पडत्तेण, पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिबद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो तावइया चेव अणंता अभावा भवंति । 'अणंता हेतु' त्ति पंच-दसावयववयणेसु पक्खधम्मत्तं सपक्खसत्तं अभिलसितमत्थसाधकं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपद्मा हेतू, प्रतिपातकत्तणतो, णिद्दोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंत[जे० २२२ द्वि०]गमत्तणतो, एवं अणंता हेतू । भणितपडिवक्खतो य अणंता चेव अहेतू । 'अणंता कारण' त्ति कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव्वा। जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्क-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । 'अणंता जीवा' इत्यादि कंठं॥

११४. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

११४. इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि । 'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पण्णत्तं-सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य। एमेव आणा तिविहा-सुत्ताणा अत्थाणा

१ इच्चेयम्मि खं० ॥ २ °कारणा जीवा । अज्जीव भवियऽभविया, तत्तो सिद्धा खं० लं० शु० ॥ ३ पञ्चावयव-दशा-
वयवज्ञानार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति-चूर्णि-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽत्रधारणीयः—"पइण्णा-हेउ-दिट्ठंतोवसंहार-णिगमणेहिं वा णिरूविज्जति आगमवयणं पंचहिं, दसहिं वा ।" तथा "पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ४ दिट्ठंतो ५ दिट्ठंतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।" इति ["कत्थति पंचावयवं" इति दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्तिगाथा २३ अगस्त्यसिंहचूर्णौ पत्र २०]। "कदाइ आगम-हेउ-दिट्ठंतोवसंघार-णिगमणावसाणेण पंचावयवेण कहिज्जइ, कदाइ पुण दसावयवेण ।" तथा—"इदाणिं दसावयवाणं परूवणं काहामि, तं०—पतिण्णा पढमो अवयवो १ पइण्णाविसुद्धी बितियो २ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठंतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंहारो सत्तमो ७ उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।" इति वृद्धविवरणे पत्र ३८-३९ । "पञ्चावयवाश्च प्रतिज्ञादयः, यथोक्तम्—'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनय-निगमनानीत्यवयवाः" [न्यायद० १-१-३२] दशवैकालिकहरिभद्रवृत्तिः पत्र ३३ । तथा—"ते उ पइन्न १ विभत्ती २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ । दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १० च ॥ १३७ ॥" दशवैकालिकनिर्युक्तिः । अस्या व्याख्यार्थं हारिभद्री वृत्तिरवलोकनीया । एषूल्लेखेषु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्मरणीयम् ॥ ६ इच्चेयं खं० शु० ।
४ °वयणे सपक्खधम्मत्त-सपक्खत्त-अभिलसितसज्झसाधकं आ० ॥ ५ °पावकत्तणतो आ० दा० ॥
एवमग्रेऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

तदुभयआणा य एवं एगट्ठिता तहा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति–यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदाणिं एतेसिं विराहणा चिंतिज्जति–जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेसेण अण्णहा पण्णवेंतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोट्ठामाहिल्लवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिणिवेसेण अण्णहा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा जमालिवत् । अहवा आणं ति–पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुणो हितोवदेसवयणं आणा, तदण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं ताए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरत्थो अत्थो । इमो अणक्खरत्थो–आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए कप्पभूयाए भुंजिता, किंतु छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा । सा य आणा इमा–'इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता' । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, सण्णिमणुयाणं संखेज्जत्तणतो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवतिस्संति ।

११५. तिसु वि आराधणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । से जहाणामए पंचत्थिकाए ण कयाइ णासी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवा णितिया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णासी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

११३. इंचेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अ
अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा
भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ता। संगहि

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।
जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३. अणंता भाव त्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवा-ऽजीवात्मका अणंता प्रतिबद्धा अभाव' त्ति अभवनं अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, घडो पड य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा प्रतिबद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खतो ता अणंता अभावा भवंति । 'अणंता हेतु' त्ति पंचे-दसावयववैयणेसु पक्खधम्मत्तं सपक्खसत्तं अभिलसितम वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू, प्रतिपात णिद्दोसहेतुवयणं व, सुत्तस्स य अणंत[जे० २२२ द्वि०]गमत्तणतो, एवं अणंता हेतू । भणितपडिव अणंता चेव अहेतू । 'अणंता कारण' त्ति कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्क-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । 'अणंता जीवा' इत्या

११४. इंचेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए वि
चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले
जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणि
अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस

११४. इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इ 'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पण्णत्तं—सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य । एमेव आणा तिविहा—सुत्ताणा

१ इच्चेयम्मि खं० ॥ २ °कारणा जीवा । अज्जीव भवियऽभविया, तत्तो सिद्धा खं० ल० शु० ॥ ३ पञ्चाव वयवज्ञानार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति-चूर्णि-वृद्धविवरण-वृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽवधारणीयः—"पइण्णा-हेउ-दिट्ठ णिगमणेहिं वा णिरूविज्जति आगमवयणं पंचहिं, दसहिं वा ।" तथा "पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेऊ ३ हेउसुद्धी ५ दिट्ठंतविसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी ८ णिगमणं ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।" इति ["कथति पंचाव दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्तिगाथा २३ अगस्त्यसिंहचूर्णौ पत्र २०]। "कदाइ आगम-हेउ-दिट्ठंतोवसंघार-णिगमणावसाणेण पंचावयवेण कदाइ पुण दसावयवेण ।" तथा—"इदाणिं दसावयवाणं परूवणं काहामि, तं०—पतिण्णा पढमो अवयवो १ पइण्णाविसुद्धी २ एवं हेऊ तइओ अवयवो ३ हेउविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठंतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंहारो ७ उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो ८ णिगमणं णवमो ९ णिगमणविसुद्धी दसमो १० ।" इति वृद्धविवरणे पत्र ३८-३९ । "पञ्च प्रतिज्ञादयः, यथोक्तम्—'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनय-निगमनानीत्यवयवाः" [न्यायद० १-१-३२] दशवैकालिकहरिभद्रवृत्तिः प तथा—"ते उ पइन्न १ विभत्ती २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ । दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १३७ ॥" दशवैकालिकनिर्युक्तिः । अस्या व्याख्यार्थं हारिभद्री वृत्तिरवलोकनीया । एपूल्लेखेपु दशावयवद्वैविध्यमपि न विस्मर ४ °वयणे सपक्खधम्मत्त-सपक्खत्त-अभिलसितसज्झसाधकं आ० ॥ ५ °पादकत्तणतो आ० दा० ॥ ६ इच्चेयं खं० एवमग्रेऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

तदुभयआणा य एवं एगट्ठिता तहा वि अभिधाणतो विसेसो भण्णति–यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदाणिं एतेसिं विराहणा चिंतिज्जति–जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेसेण अण्णहा पण्णवेंतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोट्ठामाहिल्लवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिणिवेसेण अण्णहा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा जमालिवत् । अहवा आणं ति–पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुणो हितोवदेसवयणं आणा, तमण्णहा आयरेंतस्स गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरत्थो अत्थो । इमो अणक्खरत्थो–आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए कम्मभूताए भुंजिता, किन्तु छायायां भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा । सा य आणा इमा–'इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता' । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, मणुस्सपमाणं संखेज्जत्तातो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीतिवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीतिवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वीतिवइस्संति ।

११५. तिसु वि आराधणासुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णासी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । से जहाणामए पंचत्थिकाए ण कयाइ णासि ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णासी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णितिए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

णवपदत्थेसु नियुक्तं नियतं जहा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव । णियतत्तणतो चेव 'सासतं' शश्वद् भवतीतिशाश्वतम्, मतिसमया-ऽऽवलिक-मुहूर्त-दिनादिष्विव कालः । सासतत्तणतो चेव वायणादिसु 'अक्खयं' नास्य क्षयो अक्षयम्, गंगा-सिंधुप्रवाहेष्वपि पोंडरीकह्रदवत् । अक्खयत्तणतो चेव 'अव्वयं' नास्य व्ययो अव्ययम्, मानुषोत्तराद् बहिःसमुद्रवत् । अव्वयत्तणतो चेव स्वप्रमाणे अवट्ठितं जंबूद्दीपादिवत् । अवट्ठितत्तणतो चेव सव्वहा चिंतिज्जमाणं 'निच्चं' आकाशवद् अविनाशीत्यर्थः । अहवा एते धुवादिया एगट्ठिता । चोदक आह–इच्चेयं दुवालसंगं धुवादिपदपरूवितं किमाणागेज्झं दिट्ठंततो वा सज्झं ? आचार्याऽऽह–जम्हा जिणा[1] अणण्णहावादिणो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गज्झं, कहिंचि दिट्ठंततो वि गज्झं । इह दुवालसंगस्स धुवादिपरूवितत्थस्स साधको इमो दिट्ठंतो–'से जहानामते'त्यादि कंठं ॥

११७. से समासतो चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ[2] दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ[3]। खेत्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं[4] खेत्तं जाणइ पासइ[5]। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं[6] कालं जाणइ पासइ[7]। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वे[8] भावे जाणइ पासइ[9]।

११७. तं च दुवालसंगसुतं चतुव्विहं दव्वादि । अभिण्णदसपुव्वादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पडुच्च भणितं । दव्वतो णं सुतनाणी सुतनाणेणोवयुत्तो सुत्तविण्णत्तीए सव्वदव्वादिं जाणति पासति य । णणु पासइ त्ति विरोहो ? उच्यते–जम्हा अदिट्ठाण वि मेरुमादियाण सुतणाणपासणताए आगारमालिहइ, ण यादिट्ठं लिखइ, पण्णवणाए य भणिता सुतणाणपासणत त्ति, ण विरोधो । आरतो पुण जे सुतनाणी ते सव्वदव्वनाण-पासणतासु भइता । सा य भयणा मतिविसेसतो जाणितव्वा । एवं खेत्त-काल-भावेसु वि [जे० २२३ द्वि०] भाणितव्वा ॥

सुतनाणदंसणत्थं भण्णति–

११८. अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३ सादीयं ४ खलु सपज्जवसियं ५ च ।
गमियं ६ अंगपविट्ठं ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा ॥ ८१ ॥

[आव० नि० गा० १९]

आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं[10] दिट्ठं ।
बिंति सुयणाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा ॥ ८२ ॥
सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहए ५ यावि[11] ।
तत्तो अपोहए ६ वा[12] धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८ ॥ ८३ ॥
मूयं १ हुंकारं २ वा बाढक्कार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५ ।
तत्तो पसंगपारायणं ६ च परिणिट्ठ ७ सत्तमए ॥ ८४ ॥

---

१ जिणा णऽण्णहा आ० ॥ २ तत्थ इति खं० हे० ल० शु० विआनन्दुद्धरणे ३०० पत्रे नास्ति ॥ ३-५-७-९ ण पासइ हाटीपा० ॥ ४-६-८ सव्व° खं० विआनन्दुद्धरणे ३०० पत्रे ॥ १० अट्ठहिं वि दिट्ठं जे० ल० ॥ ११ आवि खं० । वा वि जे० ल० ॥ १२ या खं० ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥
[आव० नि० गा० २३-२४]

से त्तं अंगपविट्ठं । से त्तं सुयणाणं । से त्तं परोक्खणाणं ।

॥ से त्तं णंदी सम्मत्ता ॥

११८. अक्खर० गाहा । एसा चोद्दसविहसुतभावपरूवणा कता ॥ ८१ ॥ एयं आयरियपरंपरागम-पणीतस्स पत्तेयबुद्धभासितस्स वा तहाकालाणुभावतो बलबुद्धि-मेधा-ऽऽयुहाणि जाणिऊण जे य सुतभावा आयरिएहिं निज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ—

आगम० गाहा ॥८२॥ इमे ते अट्ठ बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥८३॥ विणेतस्स अत्थसवणे इमा विही—

मूयं हुंकार० गाहा ॥८४॥ गुरुणो अणुयोगकरणे इमा विही—

सुत्तत्थो खलु० गाहा ॥८५॥

जं च मए [illegible] व अविहियं वा वि एत्थ णिज्जुत्तं ।
तं सम्मऽणुयोगधरा करेंतु सुद्धं मम खमंतु ॥ १ ॥

णि रे ण ग म त्त ण ह स दा जि या पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला ।
कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा, फुडं कहेयंऽभिहाण कत्तुणो ॥ १ ॥

शकराज्ञो पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु [illegible] ॥

३

तृतीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्णिगतानि पाठान्तर-मतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
०आर्यमङ्गु	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८टि०
०आर्यसमुद्र	,,	८टि०
०आवश्यकदीपिका	[जैनागम]	११टि०
०आवश्यकनिर्युक्ति	,,	२,२६,४६, ४७,५१
०आवश्यकनिर्युक्ति	[जैनागम]	२०टि०, २७टि०,२३टि०
०आवश्यकवृत्ति	,,	२४टि०
०आवस्सग	,,	४९
*आवस्सग	,,	५७
*आसुरुक्ख	[शास्त्र]	४९टि०
०आसुर्य	,,	४९टि०
०आसुवृक्ष	,,	४९टि०
०इतिहास	,,	४९टि०
*इसिभासियाइं	[जैनागम]	५८
*इंदभूति	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७
*उट्ठाणसुय	[जैनागम]	५९
उट्ठाणसुत	,,	६०
*उत्तरज्झयणाइं	,,	५८
*उप्पादपुव्व	[जैनपूर्वागम]	७४
उप्पायपुव्व	,,	७५
उलूक	[दर्शन]	४
*उववाइय	[जैनागम]	५७टि०
*उवासगदसाओ	,,	४८,६१, ६६,६७
उवासगदसाओ	,,	६७
*उसभ-ह	[तीर्थंकर]	६,६०
उसभ	,,	७,६०,७७
*उस्सप्पिणिगंडियाओ	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७७
एगूरुग	[अन्तरद्वीप]	२२
एरवद-य	[क्षेत्र]	२२,५१
*एरवय	[क्षेत्र]	५१
*एलावच्च	[गोत्र]	७
एलावच्च	,,	८
*एलावच्छ	,,	७टि०
०एलापत्य	,,	८टि०
*ओवाइय	[जैनागम]	५७
*ओसप्पिणिगंडियाओ	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७७
*कच्चायण	[गोत्र]	७
कच्चायण	,,	७
*कणगसत्तरि	[शास्त्र]	४९
*कप्प	[जैनागम]	५८
*कप्पवडिंसियाओ	,,	५९
कप्पवडेंसिया	,,	६०
कप्पसुत	,,	५७
*कप्पासिय	[शास्त्र]	४९
*कप्पियाओ	[जैनागम]	५९टि०
*कप्पियाकप्पिय	,,	५७
कप्पियाकप्पिय	,,	५७
*कम्मप्पगडि	[जैनशास्त्र]	९
*कम्मप्पवाद	[जैनपूर्वागम]	७४,७५
कम्मप्पवाद	,,	७६
करकंडु	[निर्ग्रन्थ-प्रत्येकबुद्ध]	२६
करिसावण	[नाणकविशेष]	४५
०कल्पभाष्य	[जैनागम]	१२,१३, ५३,५४, ५५,५६
कविल	[ऋषि]	२६
*कविल	[शास्त्र]	४९
*काविल	,,	४९टि०
*काविलिय	,,	४९टि०
*कासव	[गोत्र]	७
कासव	[गोत्र]	७,८
*किरियाविसाल	[जैनपूर्वागम]	७४,७५
किरियाविसाल	[जैनपूर्वागम]	७६
कुलगरगंडिया	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७७
*कुलगरगंडियाओ	,,	७७
*कुंथु	[तीर्थंकर]	७
*कोडल्लग }	[शास्त्र]	४९
*कोडिल्लय }	,,	४९टि०
०कोडिल्लदंडनीति	[शास्त्र]	४९टि०
*कोसिय	[गोत्र]	८,७टि०
कोसिय	,,	८
*क्रियाकल्प	[शास्त्र]	४९टि०
*खंदिलायरिय	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	९
खंदिलायरिय	,,	९
*खुड्डियाविमाणपविभत्ति	[जैनागम]	५९
खुड्डियाविमाणपविभत्ति	,,	५९
*खोडमुह }	[शास्त्र]	४९
*घोडमुह }		४९टि०
*गणधरगंडियाओ	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७७
*गणिय	[शास्त्र]	४९टि०
*गणिविज्जा	[जैनागम]	५७
गणिविज्जा	,,	५८
गरुल	[देव]	५९
*गरुलोववाए	[जैनागम]	५९
गंगा	[नदी]	६४,८२
गंडिकाणुओग	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७६
*गंडियाणुओग	,,	७६,७७
गंडियाणुओग	,,	७७
गोट्ठामाहिल	[निर्ग्रन्थनिह्नव]	८१
गोतम	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	२६,६५
गोतम	[गोत्र]	७
०गोमटसार	[जैनशास्त्र]	४९टि०

पञ्चमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां विषय-व्युत्पत्त्यादिद्योतकानां शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे *एतादृक्पुष्पिकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः नन्दीमूलसूत्रान्तः सूत्रकृता स्वयं व्याख्याता ज्ञेयाः, +एतादृक्चतुष्किकाचिह्नाङ्किताः शब्दाः चूर्णिकृता ग्रन्थसन्दर्भे स्वयं प्रयोजिता ज्ञेयाः, शेषाश्च शब्दाः सूत्रान्तर्गताः चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोद्धव्याः ।]



चूर्णिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रस्य

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	८	°भावो	°भावो(? जीवो)
१	१२	भणंति —	भणंति ।
२	११	त्ति	त्ति—
३	५	तवो	तवो,
३	५	नियमो	नियमो,
५	१९	वा उज्जल°	वाउज्जल°
५	१९	चिंतिज्जइ	चिंतिज्जइ
६	११	प्रचुरः	प्रचुरः,
७	३	उसभ०	उसभं०
७	१८	तुंगियायणे	'तुंगियायणे'
८	२७	अष्टाविंश°	सप्तविंश°
९	२२	°प्पेहाभा°	°प्पेहाऽभा°
१०	१०	°खमासणे	°खमासमणे
११	८	भूतादण्ण°	भूयदिण्ण°
११	१०	°व्भावणा°	°व्भासणा°
११	२४	धारेव्वं	धारेव्वं । अहिंसा
१३	२९	पूर्वार्द्ध निम्नप्रकारेण ज्ञेयम् —	
		गमण १ परावत्तेरगो लाभो ३ मेदा य ४ बहुपरावत्ता ५ ।	
१४	१४	च०	च
१४	१८	समेदं	समेदं ।
१४	१९	।	॥
१४	२७	।	॥
१६	२०	मज्झगयं ? से	मज्झगयं ? मज्झगयं से
१७	२-३	सा(दो)पासय	सापासय('दो पासे य)
१७	३	°ट्ठितं ।	°ट्ठितं [वा] ।
१७	९	समंता	से मंता
१७	१२	त्तिसव्वा°	त्ति सव्वा°
१७	१३	'से'	'स'
१७	१६	°स्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं	°स्स पेरंतेहिं पेरंतेहिं
१७	१७	[९]जोइट्ठाणं	[१०]जोइट्ठाणं
१७	१७	[१०]एवमेव	[११]एवमेव
१७	१८	[११]ओहिणाणं	[१२]ओहिणाणं
१७	२०	ओहिणाणं	[१३]ओहिणाणं
१७	२२	[१२]अगणि°	[१४]अगणि°

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७	२४	[१०]पमत्तेस	[११]पमत्तेसु
१७	२७	'१-६-११	'१-६
१७	२८	९	९ °स्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं सर्वासु सूत्रप्रतिषु हारि० मलय० ॥ १०
१७	२८	१०	११
१७	२८	१२	१२-१३ ओहिन्नाणं हे०ल० ॥ १४
१७	२९	१३	१५
१८	१०	°साओ	°सा उ
२०	८	तेयाभासं°	तेया-भासं°
२०	२४	४ थीं टिप्पणी	निरुपयोगिनी ।
२१	१०	°गब्भक्कंति°	°गब्भवक्कंति°
२२	३	°वासासाउ°	°वासाउ°
२२	१०	°शते	°सते
२३	१७	ख०	खं०
२३	२१	चूर्णिकृता वृ°	चूर्णि-वृ°
२३	२३	वणंना°	वर्णना°
२४	१३	उवरि°	जाव उवरि°
२४	१४	जाव	०
२४	१५	°लस्सअ°	°लस्स अ°
२४	१५	सत्तरज्जूओ	सत्तरज्जुओ
२५	५	भणितं	भणितं ।
२५	५	°रागं-ति	°रागं ति
२५	९	°णाणं च	°णाणं च ।
२६	१	से तं किं	से किं तं
२७	७	भवति	भवति,
२७	१३	°ट्ठिताअ°	°ट्ठिता अ°
२७	१८	अण्णोण्ण°	अण्णो (? ण्ण,ण्ण°
२७	३३	°पर्यव°	°पर्यव°
२८	१०	°दिया, अजीवा°	°दिया । अजी[भा]वा
२९	२९	अणुरतण°	अणु-रतण°
३०	१५	सिद्धऽधि°	सिद्धाधि°
३०	३०	श्रुत	श्रुतं

PRAKRIT TEXT SERIES
PUBLISHED WORKS
1. ANGAVIJJA

-Demy Quarto size..Pages-[illegible]..Price Rs. [illegible]

Aṅgavijjā is published for the first time by the Prakrit Text Society. It is critically edited b Muni Shri Punyavijayaji, with English Introduction by Dr. Motichandra and Hindi Introduction b Dr. V. S. Agarwal.

Aṅgavijjā is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs. Th work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity havin been delivered by Mahāvira himself. Its internal evidence points to its having been finally compiled a the end of the Kushan period, about 4th Century A. D.

It is highly important document firstly, for the history of Prakrit language and secondly, for th cultural history of India. It contains hundreds of lists of all descriptions, for example, seats, posture utensils, containers, flowers. trees, personal names, food and drinks, bed steads, conveyances textile ornaments, jewellery, coins, birds, animals, arrows, weapons, boats, gods, goddesses, etc.

2 PRĀKṚITA-PAIṄGALAM. Part I.

-Demy Octevo size..Page-700..Price-Rs. 16/-

Prākritapaiṅgalam is a text on Prakrit and Apabhraṁśa Metres. It is critically edited with thr Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript materi by Dr. Bholashankar Vyas, a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hind University. He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit an Apabhraṁśa words.

3. CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAṂ.

-Demy Quarto size..Pages-8+68+384..Price Rs. 21/-

Cauppannamahāpurisacariyam is a great biographical work by Āchārya Śilāṅka of the 9th Centu A. D. It is critically edited by Pt. Amritlal Mohanlal, Research scholar of Prakrit Text Society. I Introduction is written by Dr. K. L. Bruhn.

It gives the lives of 54 great men revered by the Jains, viz. 24 Tīrthaṅkaras, 12 Chakravartin 9 Baladevas and 9 Vāsudevas.

4. PRĀKṚITAPAIṄGALAṂ Part II.

-Demy Octavo size..Pages 16+16+592+12..Price Rs. 15/-

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Te Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of t PrākṛitaPaingalaṁ together with a critical and comparative study of the metres that form the subje matter, as well as, the exact nature of the language of the original text, and also a literary assessme of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Matrika and Varnika metr dealt with by him.

5. ĀKHYĀNAKAMAṆIKOŚA.

-Demy Quarto size..Pages 8+16+25+422..Price Rs. 21/-

Ākhyānakamaṇikośa is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaji.

It is written by Nemichandra and is commented upon by Āmradeva of the 12th Century A. This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhraṁśa.

6. PAUMACARIA Part I.

-Demy Quarto size..Pages 8+40+376..Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Centu A. D. by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaji a translated by Prof. S. M. vora, M. A., Jainadarśanāchārya. Its Introduction is written by Dr. V. M. Kulkar

